कबीर साहेब की शब्दावली

॥ पहिला भाग ॥

जीवन-चरित्र सहित

जिस में कबीर साहेब के अति मनोहर पद
कितनी ही लिपियों से चुनकर शोध कर
और क्षेपक निकाल कर छापे गये हैं
और गूढ़ शब्दों के अर्थ और जहाँ
कहीं महा पुरुषों के नाम आये
हैं उनके कौतुक नोट में
लिख दिये गये हैं।

इलाहाबाद
बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुआ
सन् १९१३ ई०

तीसरी बार २०००] [दाम ॥)

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक त्रुटि और ग़लती से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हम ने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये हैं और यह कार्रवाई बराबर जारी है। भर सक तो पूरे ग्रंथ मँगा कर छापे जाते हैं और फुटकर शब्दों की हालत में सर्व-साधारन के उपकारक पद चुन लिये जाते हैं। कोई पुस्तक बिना कई लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी जाती, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दी जाय। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्व-साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिन से आँख हटाने को जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के संक्षेप वृत्तांत और कौतुक फुट-नोट में लिख दिये जाते हैं।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उनको मिलें उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होता है तौ भी सर्व-साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग सब्सक्रैबर अर्थात् पक्के गाहक होकर

॥ सूचीपत्र ॥

शब्द			पृष्ठ
अ			
अगम अस्थान गुरु ज्ञान बिन ना लहै	...	...	९८
अधर आसन किया अगम प्याला पिया	...	..	९८
अधर ही ख्याल और अधर ही चाल है	...	...	९९
अपनें घट्ट दियना बारु रे	..	...	२९
अब से खबरदार रहो भाई	...	...	५०
अभागा तुम ने नाम न जाना	...	..	५७
अमरपुर लेचलु हो सजना	...	...	१४
अरे इन दुहुन राह न पाई	...	...	४८
अरे मन मूरख खेतीवान	...	..	६३
अरे मन समुझ के लादु लदनियाँ	...	...	४५
अवधू अच्छर हूँ सों न्यारा	...	...	४९
अवधू अमल करै सो पावै	...	...	३९
अवधू अंध कूप अँधियारा	...	...	५९
अवधू निरंजन जाल पसारा	...	...	३४
अवधू बेगम देस हमारा	...	...	७०
अवधू भजन भेद है न्यारा	...	...	४९
अवधू भूले को घर लावै	...	..	६०
अवधू माया तजी न जाई	...	...	५६
अवधू सो जोगी गुरु मेरा	...	...	८४
आगे समुझि परैगा भाई	...	...	४४
आठ हूँ पहर मतवाल लागी रहै	...	...	१०१
उ			
उठि पछिलहरा	...	...	३१
ऋ			
ऋतु फागुन नियरानी	...	...	१५

शब्द			पृष्ठ

ए

ऐ

क

ख

शब्द पृष्ठ

ग

च

छ

ज

शब्द पृष्ठ

द

न

प

शब्द			पृष्ठ

ल

व

स

शब्द   पृष्ठ

ह

ज्ञ

कबीर साहेब का जीवन-चरित्र

संसार का कुछ ऐसा नियम सदा से चला आया है कि किसी महापुरुष के जीवन समय में बहुत कम लोग इस बात के जानने की परवाह करते हैं कि वे कहाँ पैदा हुए, कैसी उनकी रहनी गहनी है, क्या उन में विशेष गुण हैं और क्या गुप्त भेद मालिक और रचना का प्रकाश करने और परमार्थ का लाभ देने के लिये उन्हों ने जीवन धारन किया है। लेकिन जब वे इस पृथ्वी को छोड़ देते हैं और उन का अद्भुत तेज जिस से संसार के तिमर हटाने का लाभ प्राप्त होता था गुप्त हो जाता है तब बहुत से लोग नींद से जाग उठते हैं और उन महापुरुष के सम्बन्ध में अपनी बुद्धि के अनुसार तरह २ की कल्पनायें करने लगते हैं और बहुत सी बातें बढ़ाने के साथ या नई गढ़कर मशहूर करते हैं। इन्हीं कारनों से प्राचीन महात्माओं का विशेषकर उन का जिन की बाबत उन के समय के लोगों ने कुछ नहीं बयान किया है ठीक ठीक जीवन-चरित्र लिखना बहुत कठिन हो जाता है।

कबीर साहेब का जीवन-चरित्र भी इन्हीं कारनों से ठीक रीति से नहीं लिखा जा सक्ता परंतु जहाँ तक मालूम हुआ वह संक्षेप में नीचे लिखते हैं।

ऐसा जान पड़ता है कि कबीर साहेब सिकंदर लोदी बादशाह के समय में वर्तमान थे। भक्तमाल और दूसरे ग्रंथों में लिखा है कि सिकंदर लोदी ने कबीर साहेब के मरवा डालने का यत्न किया था, इस बात का इशारा कीन साहेब की पुस्तक "टेक्स्ट बुक आव इन्डियन हिस्टरी" में भी किया है।

"कबीर कसौटी" नाम की पुस्तक में एक साखी इस प्रकार की है:—

> पन्द्रहसौ पचहत्तरा, कियो मगहर को गौन।
> माघ सुदी एकादशी, रलो पौन में पौन॥

इसके अनुसार विक्रम सम्वत १५७५ अर्थात सन १५१८ ईसवी में कबीर साहेब का देहाँत हुआ। सिकंदर लोदी १५१० ईसवी में मरा था इस से पक्का अनुमान होता है कि कबीर साहेब सिकंदर लोदी के समय में थे। "कबीर कसौटी" में कबीर साहेब की अवस्था देहांत के समय १२० बरस की होना लिखा है यदि यह ठीक है तो कबीर साहेब का जन्म सम्वत १४५५ अर्थात १३९८ ईसवी में ठहरता है।

कबीर साहेब के पिता का नाम नूरअली और माता का नाम नीमा था जो काशी में रहते थे। किसी किसी का कथन है कि नीमा के पेट से कबीर साहेब पैदा हुए परंतु विशेष कर ऐसा कहा जाता है कि नूरअली जुलाहा गंगा नदी अथवा लहरतारा तलाव के किनारे सूत धो रहा था कि उस को एक बालक बहता दिखाई दिया उस ने उसको निकाल लिया और अपने घर लाकर पाला पोसा। पंडित भानुप्रताप तिवारी चुनारगढ़ निवासी जिन्हों ने इस विषय में बहुत खोज किया है उन के अनुसार कबीर साहेब की असल मा एक हिन्दुनी विधवा थी जो सन १४१४ ईसवी में रामानंद स्वामी के दर्शन को गई। दंडवत करने पर रामानंद जी ने अशीर्वाद दिया कि तुम को पुत्र हो। स्त्री घबरा कर रोने लगी कि मैं तो विधवा हूँ मुझे पुत्र क्योंकर हो सकता है। रामानंद जी बोले कि अब तो मुँह से निकल गया पर तेरा गर्भ किसी को लखाई न पड़ेगा। उसी दिन से उस विधवा को गर्भ रहा और दिन पूरा होने पर लड़का पैदा हुआ जिसे उसने लोक निन्दा के डर से लहरतारा के तलाव में डाल दिया जहाँ से उसे नूरू जुलाहा निकाल कर लाया। कबीर कसौटी के अनुसार जेठ की बड़सायत सोमवार के दिन नीरू ने बच्चे को पाया।

बालपने ही से कबीर साहेब ने बानी द्वारा उपदेश करना आरम्भ कर दिया था। ऐसा कहते हैं कि कबीर साहेब रामानंद स्वामी के जो रामानुज मत के अवलंबी थे शिष्य हुए। यद्यपि कबीर साहेब स्वतः संत थे और उनकी गति रामानंद स्वामी से कहीं बढ़कर थी तौ भी गुरू धारन करने की मर्यादा क़ायम रखने को उन्हों ने इन को गुरू बना लिया। कहते हैं कि रामानंद स्वामी को अपने चेले की कुछ ख़बर भी न थी। एक दिन वह अपने आश्रम में परदे के भीतर पूजा कर रहे थे; ठाकुर जी को स्नान करा के वस्त्र और मुकट पहिरा दिया परंतु फूलों का हार पहिराना भूल गये, इस सोच में पड़े थे कि यदि मुकट उतार कर पहिरावें तो बेअदबी है और मुकट के ऊपर से माला छोटी पड़ती थी कि इतने में ड्योढ़ा के बाहर से आवाज़ आई कि माला की गाँठ खोल कर पहिरा दो। रामानंद स्वामी चकित हो गये और बाहर निकल कर कबीर साहेब को गले लगा लिया और कहा कि तुम हमारे गुरू हो।

कबीर साहेब के रामानंद जी का शिष्य होने से यह न समझना चाहिये कि वह उन के धर्म के अनुयायी थे–उन का इष्ट सत्य पुरुष निर्मल चेतन्य देश का धनी था जो ब्रह्म और पारब्रह्म सब से ऊँचा है। उसी की भक्ति और उपासना उन्हों ने दृढ़ाई है और अपनी बानी में उसी परमपुरुष और उस के धुन्यात्मक "नाम" की महिमा गाई है और इस के व्यतिरिक्त जो शब्द कबीर साहेब के नाम से प्रसिद्ध हैं वह पूरे या थोड़े बहुत क्षेपक ह।

कबीर साहेब ने कभी किसी प्रचलित हिन्दू या मुसलमान मत का पक्ष नहीं किया वरन सभों का दोष बराबर दिखलाया। उन का कथन है :—

> हिन्दू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
> आपस में दोउ लड़े मरत हैं, दुविधा में लिपटाना॥
> घर घर मंत्र जो देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
> गुरुवा सहित शिष्य सब डूबे, अंत काल पछिताना॥

कहते हैं कि रामानंद स्वामी ने जो कर्मकांड पर भी चलते थे एक बार अपने पिता के श्राद्ध के दिन पिंडा पारने को कबीर साहेब से दूध मँगाया। कबीर साहेब जाकर एक मरी गाय के मुँह में सानी डालने लगे। यह तमाशा देख कर उन के गुरु-भाइयों ने पूछा कि यह क्या कर रहे हो मरी गाय कैसे सानी खायगी! कबीर साहेब ने जवाब दिया कि जैसे हमारे गुरूजी के मरे पुरखा पिंड खायँगे।

मांस, मद्य वरन हर प्रकार के नशे का कबीर साहेब ने अपनी बानी में निषेद किया है।

कबीर साहेब जुलाहा के घर में तो पले थे ही और आप भी कपड़ा बुनने का काम करते थे। वह गृहस्थ आश्रम में थे, और भेषों के डिम्भ पाखंड और अहंकार को बहुत निंदनीय कहा है। कबीर साहेब की स्त्री का नाम लोई और बेटे और बेटी का कमाल और कमाली था। किसी २ ग्रंथकारों का कथन है कि कबीर साहेब बालब्रह्मचारी थे और कभी ब्याह नहीं किया, एक मुर्दा लड़के और लड़की को जिलाकर उनका नाम कमाल और कमाली रक्खा और उनके पालन का भार लोई को जो उनकी चेली थी सौंप दिया पर यह ठीक नहा जान पड़ता।

जो कुछ हो लोई कबीर साहेब की सच्ची और ऊँचे दर्जे की भक्त थी। एक बार का ज़िकर है कि कबीर साहेब ने किसी खोजी को भक्ति का उदाहरण दिखाने के लिये अपने करगह में जहाँ वह लोई के साथ दोपहर को ताना बुन रहे थे धीरे से ढरकी अपनी बँहोली में छिपा ली और लोई से कहा कि देख ढरकी गिर गई है उसे ज़मीन पर खोज। वह उसे तुर्त ढूँढ़ने लगी आख़िर को हार कर काँपती हुई उसने अर्ज़ की कि नहीं मिलती। इस पर कबीर साहेब ने जवाब दिया कि तू पागल है रात के समय बिना दिया वाले ढूँढ़ती है कैसे मिलै। अपने स्वामी के मुख से यह वचन सुनतेही उस को सचमुच ऐसा दरसने लगा कि अँधेरा है, बत्ती जलाकर ढूँढ़ने लगी जब कुछ देर हो गई कबीर साहेब ने

ख़फ़ा होकर कहा कि तू अंधी है देख मैं ढूँढ़ता हूँ और उस के सामने ढरकी बँहोली से गिरा कर फिर उठा लिया और उसे दिखा कर कहा कि कैसे झटपट मिल गई। इस पर लोई रोकर बोली कि स्वामी छिमा करो न जानें मेरी आँख में क्या पत्थर पड़ गये थे। तब कबीर साहेब ने उस जिज्ञासू से कहा कि देखो यह रूप भक्ति का है कि जो भगवंत कहे वही भक्त को वास्तविक दरसने लगे।

बहुत सी कथायें कबीर साहेब की बाबत प्रसिद्ध हैं जिन का लिखना अनावश्यक है क्योंकि वह समझ में नहीं आतीं। इस में संदेह नहीं कि भक्त-जन सर्व समर्थ हैं और उन के लिये कोई बात असंभव नहीं है पर इसी के साथ यह भी है कि संत करामात नहीं दिखलाते अपने भगवंत को भाँति अपने सामर्थ्य को प्रायः गुप्त रखते और साधारन जीवों की तरह संसार में बर्ताव करते हैं। तौभी थोड़े से चमत्कार जिन का भक्तमाल और दूसरे ग्रंथों में वर्णन है और महात्मा गरीबदास और दूसरे भक्तों ने भी उन को संकेत में अपनी बानी में कहा है नीचे लिखे जाते ह क्योंकि उन्हें न केवल सर्व साधारन पसंद करेंगे बरन उन से महात्माओं की बानी जहाँ यह कौतुक इशारे में लिखे हैं भली प्रकार से समझ में आवैगी।

(१) एक बार काशी के पंडितों ने जो कबीर साहेब से बहुत इर्षा रखते थे कबीर साहेब की ओर से कंगलों के खिलाने का न्यौता चारों ओर फेर दिया हज़ारों आदमी कबीर साहेब के द्वारे पर इकट्ठा हुए। जब कबीर साहेब को इसकी ख़बर हुई तो एक हाँडी में थोड़ा सा भोजन बनवा कर और कपड़े से ढाँक कर अपने किसी सेवक से कहा कि हाथ भीतर डाल कर जहाँ तक निकले लोगों को बाँटते जाव इस प्रकार से सब न्योतहरी पेट भर कर खागये और जब कपड़ा उठाया गया हाँडी ज्यों की त्यों भरी निकली। इस कथा को ऐसे भी लिखा है कि भगवंत आप बंजारे का रूप धर कर बैलों पर अन्न लादे आये और कबीर साहेब के ओसारे में गाँज दिया जो सब मँगतों को बाँटने पर भी न चुका।

(२) जब कबीर साहेब की सिद्धि शक्ति की महिमा काशी में बहुत फैली और संसारियों की बड़ी भीड़ भाड़ होने लगी तो कबीर साहेब अपनी निंदा कराकर लोगों से पीछा छुड़ाने के हेतु एक दिन एक हाथ किसी बेश्या के गले में डाल कर और दूसरे हाथ में पानी से भरी बोतल, शराब का धोखा देने को, लेकर बजार भर घूमे जिस से लोगों ने समझा कि वह पतित हो गये और उनके घर जाना छोड़ दिया।

(३) ऐसाही रूपक धरे कबीर साहेब काशिराज के दर्बार में पहुँचे वहाँ किसी ने आदर सत्कार न किया। जब दर्बार से लौटने लगे तो थोड़ा सा जल बोतल से धरती पर डाल कर सोच में हो गये। राजा ने सबब पूछा तो जवाब

दिया कि इस समय पुरी के मन्दिर में आग लग जाने से जगन्नाथ जी का रसोइया जलने लगा था मैं ने वह पानी डाल कर आग बुझा दी और रसोइये की जान बचा ली। राजा ने पुरी से समाचार मँगाया तो वह बात ठीक निकली।

(४) सिकंदर लोदी बादशाह ने कबीर साहेब को मार डालने के लिये सिक्कड़ से बँधवा कर गंगाजी में डलवा दिया पर न डूबे तब आग में डलवाया पर एक बाल बाँका न हुआ फिर मस्त हाथी उन पर छोड़ा वह भाग गया।

कबीर साहेब के गुरमुख शिष्य जो संत गति को प्राप्त हुए धर्मदास जी एक प्रसिद्ध वैश्य साहूकार थे। वह पहले सनातन धर्म के अनुयायी थे और ब्राह्मणों की उन के यहाँ बड़ी भीड़ भाड़ रहा करती थी। उन से कबीर साहेब मिले और संत मत की महिमा गाई इस पर धर्मदास जी ने उनका काशी के पंडितों से शास्त्रार्थ कराया जिस में यह लोग पूरी तरह परास्त हुए और धर्मदास जी ने कबीर साहेब को गुरू धारन करके उन से उपदेश लिया और बहुत काल तक उनका सतसंग और सुरत शब्द का अभ्यास करके आप भी संत गति को प्राप्त हुए। इन की बानी वचन से उन की गुरु भक्ति, अपूर्व प्रेम और गति विदित होती है।

कबीर साहेब ने मगहर में जो काशी से कुछ दूर बस्ती के ज़िले में है देह त्याग की। उन के गुप्त होने का समय जैसा कि ऊपर लिख आये हैं सम्वत १५७५ जान पड़ता है। उन के मगहर में शरीर त्याग करने के बहुत से प्रमान हैं, धर्मदास जी ने अपनी आरती में इस भाँति लिखा है :—

अठई आरती पीर कहाये। मगहर आमी नदी बहाये॥

नाभा जी ने कहा है :—

भजन भरोसे आपने, मगहर तज्यो शरीर।
अबिनाशी की गोद में, बिलसैं दास कबीर॥

दादू साहेब का वाक्य है :—

काशी तज मगहर गये, कबीर भरोसे नाम।
सनेही साहेब मिले, दादू पूरे काम॥

इन के अंत काल के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि हिन्दुओं ने इन के मृतक शरीर को जलाना और मुसलमानों ने गाड़ना चाहा इस पर बहुत झगड़ा हुआ अंत को चद्दर उठा कर देखा तो मृतक स्थान पर शरीर नदारद था सुगंधित फूल पड़े थे। तब हिन्दुओं ने फूल लेकर मगहर में उनकी समाधि बनाई और

मुसलमानों ने क़बर। यह समाधि और क़बर अब तक वर्तमान हैं और इस बात को जताती हैं कि अल्ह-सब वर्ण के झगड़े संतों ने तुच्छ और केवल संसारियों के योग्य विचार कर उन्हीं के लिये छोड़ दिये।

इस में संदेह नहीं कि कबीर साहेब स्वतः संत थे जिन्हों ने संसार में कर्म भर्म मिटाने और सच्चे परमार्थ का रास्ता दिखाने को कलियुग में पहला संत अवतार धरा जैसा कि उनकी बानी वचन से जिसमें पूरा भेद पिंड, ब्रह्मांड और निर्मल चेतन्य देश का दिया है विदित है। इस के प्रमाण में दो शब्द "कर नैनों दीदार महल में प्यारा है" और "कर नैनों दीदार यह पिंड से न्यारा है" (सफ़हा ७६ और ८१ देखिये) काफ़ी हैं-इन में पूरा भेद सिलसिलेवार दिया है और इन को एक प्राचीन लिपि से लेकर अमृतसर के कबीरपंथी महंत भाई गुरदत्त सिंह जी ने भेजा है।

कबीर साहेब की बानी जैसी मधुर, मनोहर और प्रेम से भिनी हुई है उसका असर पढ़ने से मालूम होता है—उस से किसी बड़े से बड़े कवि या विद्वान की बानी का मुक़ाबला नहीं हो सकता क्योंकि संतमुख बानी अनुभवी है और कवियों की बानी विद्या बुद्धि की॥

॥ इति ॥

कबीर साहेब की शब्दावली

॥ पहिला भाग ॥

सतगुरु और शब्द महिमा

॥ शब्द १ ॥

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये ।
कीजे साहेब से हेत, परम पद पाइये ॥ १ ॥
सतगुर सब कछु दीन्ह, देत कछु न रह्यो ।
हमहिँ अभागिनि नारि, सुक्ख तज दुख लह्यो ॥ २ ॥
गई पिया के महल, पिया सँग ना रची ।
हिरदे कपट रह्यो छाय, मान लज्जा भरी ॥ ३ ॥
जहवाँ गैल सिलहली, चढ़ौं गिरि गिरि पड़ौं ।
उठहुँ सम्हारि सम्हारि, चरन आगे धरौं ॥ ४ ॥
जो पिय मिलन की चाह, कौन तेरे लाज है ।
अरध मिलो किन जाय, भला दिन आज है ॥ ५ ॥
भला बना संजोग, प्रेम का चोलना ।
तन मन अरपौं सीस, साहेब हँस बोलना ॥ ६ ॥
जो गुरु रूठे होयँ, तो तुरत मनाइये ।
हुइये दीन अधीन, चूक बकसाइये ॥ ७ ॥
जो गुरु होयँ दयाल, दया दिल हेरि हैं ।
कोटि करम कटि जायँ, पलक छिन फेरि हैं ॥ ८ ॥
कहैं कबीर समुझाय, समुझ हिरदे धरो ।
जुगन जुगन करो राज, अस दुर्मति परिहरो ॥ ९ ॥

॥ शब्द २ ॥

सतगुरु चरन भजस मन मूरख, का जड़ जन्म गँवावस रे ॥टेक
कर परतीत जपस उर अंतर, निसि दिन ध्यान लगावस रे॥१
द्वादस कोस बसत तेरा साहेब, तहाँ सुरत ठहरावस रे॥२॥
त्रिकुटी नदिया अगम पंथ जहँ, बिना मेँह झर लावस रे॥३॥
दामिनि दमकत अमृत बरसत, अजब रंग दरसावस रे ॥४॥
इँगला पिँगला सुखमन से धस, नभ मंदिर उठि धावस रे ॥५॥
लागी रहे सुरत की डोरी, सुन्न मेँ सहर बसावस रे ॥६॥
बंकनाल उर चक्र सोधि के, मूल चक्र फहरावस रे ॥७॥
मकर तार के द्वार निरखि के, तहाँ पतंग उड़ावस रे ॥८॥
बिन सरहद अनहद जहँ बाजै, कौने सुर जहँ गावस रे ॥९॥
कहँ कबीर सतगुरु पूरे से, जो परिचै सो पावस रे ॥१०॥

॥ शब्द ३ ॥

मैं तो आन पड़ी चोरन के नगर, सतसंग बिना जिय तरसे॥१
इस सतसँग मेँ लाभ बहुत है, तुरत मिलावै गुर से ॥२॥
मूरख जन कोइ सार न जानै, सतसँग मेँ अमृत बरसे ॥३॥
सब्द सा हीरा पटक हाथ से, मुट्ठी भरी कंकर से ॥४॥
कहँ कबीर सुनो भाई साधो, सुरत करो वहि घर से ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सतगुर अलख लखाया, जब आप आप दरसाया ।टेक।
बीज मध्य ज्यौँ बृच्छा दरसै, बृच्छा मद्धे छाया ।
परमातम मेँ आतम तैसे, आतम मद्धे माया ॥ १ ॥

ज्योँ नभ मद्धे सुन्न देखिये, सुन्न अंड आकारा ।
निःअच्छर तेँ अच्छर तैसे, अच्छर छर बिस्तारा ॥२॥
ज्योँ रवि मद्धे किरन देखिये, किरन मध्य परकासा ।
परमातम तेँ जीव ब्रह्म इमि, जीव मध्य तिमि स्वाँसा ॥३॥
स्वाँसा मद्धे सब्द देखिये, अर्थ सब्द के माहीँ ।
ब्रह्म तेँ जीव जीव तेँ मन योँ, न्यारा मिला सदाहीँ ॥४॥
आपहि बीज वृच्छ अंकूरा, आप फूल फल छाया ।
आपहि सूर किरन परकासा, आप ब्रह्म जिव माया ॥५॥
ओंकार सुन्न नभ आपै, स्वाँस सब्द अरथाया ।
निःअच्छर अच्छर छर आपै, मन जिव ब्रह्म समाया ॥६॥
आतम मेँ परमातम दरसै, परमातम मेँ झाँईँ ।
झाँईँ मेँ परछाँईँ दरसै, लखै कबीरा साईँ ॥७॥

॥ शब्द ५ ॥

भाई कोई सतगुर संत कहावै । नैनन अलख लखावै ॥टेक॥
डोलत डिगै न बोलत बिसरै, जब उपदेस दृढ़ावै ।
प्रान-पूज्य* किरिया तेँ न्यारा, सहज समाधि सिखावै ॥१॥
द्वार न रूँधे पवन न रोकै, नहिँ अनहद अरुझावै ।
यह मन जाय जहाँ लग जबहीँ, परमातम दरसावै ॥२॥
करम करै निःकरम रहै जो, ऐसी जुगत लखावै ।
सदा बिलास त्रास नहिँ मन मेँ, भोग मेँ जोग जगावै ॥३॥
धरती त्यागि अकासहुँ त्यागै, अधर मड़इया छावै ।
सुन्न सिखर के सार सिला पर, आसन अचल जमावै ॥४॥

*प्रान से पूजने योग्य सतगुर।

भीतर रहा सो बाहर देखै, दूजा दृष्टि न आवै।
कहत कबीर बसा है हंसा, आवागवन मिटावै ॥५॥

॥ शब्द ६ ॥

जब तेँ मन परतीति भई ॥ टेक ॥
तब तेँ अवगुन छूटन लागे, दिन दिन बाढ़त प्रीति नई ॥१॥
सुरति निरति मिलि ज्ञान जौहरी, निरखि परखि जिन बस्तु लई
थोड़ी बनिज बहुत है बाढ़ी, उपजन लागे लाल मई ॥२॥
अगम निगम तू खोजु निरंतर, सत्त नाम गुरु मूल दई।
कहैँ कबीर साध की संगति, हुती बिकार सो छूटि गई ॥३॥

॥ शब्द ७ ॥

साधो सब्द साधना कीजै।
जेहिँ सब्द तेँ प्रगट भये सब, सोई सब्द गहि लीजै॥टेक॥
सब्दहि गुरू सब्द सुनि सिष भे, सब्द सो बिरला बूझै।
सोई सिष्य सोइ गुरू महातम, जेहिँ अंतर गति सूझै ॥१॥
सब्दै बेद पुरान कहत है, सब्दै सब ठहरावै।
सब्दै सुर मुनि संत कहत हैँ, सब्द भेद नहिँ पावै ॥२॥
सब्दै सुनि सुनि भेष धरत हैँ, सब्द कहै अनुरागी।
षट दरसन सब सब्द कहत है, सब्द कहै बैरागी ॥३॥
सब्दै माया जग उतपानी, सब्दै केरि पसारा।
कहैँ कबीर जहँ सब्द होत है, तवन भेद है न्यारा ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

साधो सब्द सोँ बेल जमाई ॥ टेक ॥
तीन लोक साषा फैलाई, गुरु बिन पेड़ न पाई ॥ १ ॥

साषा के तर पेड़ छिपाना, साषा ऊपर छाई ।
साषा तें बहु साषा उपजी, दुइ साषा अधिकाई ॥ २ ॥
बेल एक साषा दुइ फूटी, ता तें भइ बहुताई ।
साषा के बिच बेल समानी, दिन दिन बाढ़त जाई ॥ ३ ॥
पाँचो तत्त तीन गुन उपजे, फूल बास लपटाई ।
उपजा फल बहु रंग दिखावै, बीज रहा फैलाई ॥ ४ ॥
बीज माहिँ दुइ दाल बनाई, मध अंकूर रहाई ।
कहैं कबीर जो अंकुर चीन्है, पेड़ मिलैगा आई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

साँईं दरजी का कोइ मरम न पावा ॥ टेक ॥
पानी की सुई पवन कै धागा, अष्ट मास नव सीयत लागा॥१
पाँच पेवँद की बनी रे गुदरिया, तामें हीरा लाल लगावा॥२
रतन जतन का मकुट बनावा, प्रान पुरुष को ले पहिरावा३
साहेब कबीर अस दरजी पावा, बड़े भाग गुरु नाम लखावा४

॥ शब्द १० ॥

साधो सब्द सभन से न्यारा । जानैगा कोइ जाननहारा॥टेक॥
जोगी जती तपी सन्यासी, अंग लगावै छारा ।
मूल मंत्र सतगुरु दाया बिनु, कैसे उतरै पारा ॥ १ ॥
जोग जज्ञ ब्रत नेम साधना, कर्म धर्म ब्यौपारा ।
सो तो मुक्ति सभन से न्यारी, कस छूटै जम द्वारा ॥ २ ॥
निगम नेति जा के गुन गावै, संकर जोग अधारा ।
ब्रह्मा बिस्नु जेहि ध्यान धरतु हैं, सो प्रभु अगम अपारा ॥३॥
लागा रहै चरन सतगुरु के, चन्द चकोर की धारा ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, नषसिष सब्द हमारा ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

तोहिं मोरि लगन लगाये रे फकिरवा ॥ टेक ॥
सोवत ही मैं अपने मँदिर में, सब्दन मारि जगाये रे (फ०)॥१
बूड़त ही भव के सागर में, बहियाँ पकरि समुझाये रे (फ०)२
एकै बचन बचन नहिं दूजा, तुम मोसे बंद छुड़ाये रे (फ०)॥३
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सत्तनाम गुन गाये रे (फ०)॥४

॥ शब्द १२ ॥

गुरू मोहिं घुँटिया अजर पियाई ॥ टेक ॥
जब से गुरु मोहिं घुँटिया पियाई, भई सुचित मेटी दुचिताई१
नाम औषधी अधर कटोरी, पियत अघाय कुमति गइ मोरी२
ब्रह्मा बिस्नु पिये नहिं पाये, खोजत संभू जन्म गँवाये ॥३॥
सुरत निरत कर पिये जो कोई, कहैं कबीर अमर होय सोई॥४

॥ शब्द १३ ॥

जिनकी लगन गुरू सों नाहीं ॥ टेक ॥
ते नर खर कूकर सम जग में, बिरथा जन्म गँवाहीं ॥१॥
अमृत छोड़ि बिषय रस पीवैं, धृग धृग तिन के ताईं ॥२॥
हरी बेल की कोरी तुमड़िया, सब तीरथ करि आई ॥३॥
जगन्नाथ के दरसन करके, अजहुँ न गई कड़ुवाई ॥४॥
जैसे फल उजाड़ को लागो, बिन स्वारथ झरि जाई ॥५॥
कहैं कबीर बिन बचन गुरू के, अंत काल पछिताई ॥६॥

*धी, रही।

विरह और प्रेम।

॥ शब्द १ ॥

॥ चौपाई ॥

दरसन दीजे नाम सनेही। तुम बिन दुख पावे मेरी देही॥टेक॥

॥ छंद ॥

दुखित तुम बिन रटत निसि दिन, प्रगट दरसन दीजिये।
बिनती सुन प्रिय स्वामियाँ, बलि जाउँ बिलंब न कीजिये॥१॥

॥ चौपाई ॥

अन्न न भावे नींद न आवे। बारबार मोहिं बिरह सतावे॥२॥

॥ छंद ॥

बिबिधि बिधि हम भई ब्याकुल, बिन देखे जिव न रहे।
तपत तन जिव उठत झाला, कठिन दुख अब को सहे॥३॥

॥ चौपाई ॥

नैनन चलत सजल जलधारा। निसि दिन पंथ निहारौं तुम्हारा॥४

॥ छंद ॥

गुन अवगुन अपराध छिमाकर, औगुन कछु न बिचारिये।
पतित-पावन राखपरमति*, अपना पन न बिसारिये ॥५॥

॥ चौपाई ॥

गृह आँगन मोहिं कछु न सोहाई।
बन भई और फिरयो न जाई ॥ ६ ॥

॥ छंद ॥

नैनं भरि भरि रहे निरखत, निमिख नेह न तोड़ाइये।
बाँह दीजे बंदी-छोड़ा, अब के बंद छोड़ाइये ॥ ७ ॥

---

* उच्च मति या भाव।

॥ चौपाई ॥

मीन मरै जैसे बिन नीरा। ऐसे तुम बिन दुखित सरीरा॥८॥

॥ छंद ॥

दास कबीर यह करत बिनती, महा पुरुष अब मानिये।
दया कीजे दरस दीजे, अपना कर मोहिं जानिये ॥९॥

॥ शब्द २ ॥

मन मस्त हुआ तब क्यौं बोले ॥ टेक ॥
हीरा पायो गाँठ गठियायो, बार बार वा को क्यौं खोले॥१॥
हलकी थी जब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्योँ तोले॥२॥
सुरत कलारी भइ मतवारी, मदवा पी गइ बिन तोले ॥३॥
हंसा पाये मानसरोवर, ताल तलैया क्यौं डोले ॥४॥
तेरा साहेब है घट माहीं, बाहर नैना क्योँ खोले ॥५॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहेब मिल गये तिल ओले* ॥६॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु दयाल कब करिहौ दाया।
काम क्रोध हंकार बियापै, नाहीं छूटै माया ॥१॥
जौं लगि उतपति बिंदु रचो है, साँच कभूँ नहिं पाया।
पाँच चोर सँग लाय दियो है, इन सँग जन्म गँवाया ॥२॥
तन मन डस्यो भुवँगम† भारी, लहरै वार न पारा।
गुरु गारुड़ी‡ मिल्यो नहिं कबहीं, बिष पसरयो बिकरारा§ ॥३॥
कहैं कबीर दुख का सोँ कहिये, कोई दरद न जानै।
देहु दीदार दूर करि परदा, तब मेरो मन मानै ॥४॥

---

*ओट। †साँप। ‡जिसको साँप के बिष उतारने का मंत्र आता है। §भारी।

॥ शब्द ४ ॥

बालम आओ हमारे गेह रे। तुम बिन दुखिया देह रे॥टेक
सब कोइ कहै तुम्हारी नारी, मो को यह संदेह रे।
एकमेक ह्वै सेज न सोवै, तब लग कैसो सनेह रे ॥ १ ॥
अन्न न भावै नींद न आवै, गृह बन धरै न धीर रे।
ज्यौं कामी को कामिनि प्यारी, ज्यौं प्यासे को नीर रे॥२॥
है कोइ ऐसा परउपकारी, पिय से कहै सुनाय रे।
अब तो बेहाल कबीर भये हैं, बिन देखे जिउ जाय रे॥३॥

॥ शब्द ५ ॥

सतगुरु हो महराज, मो पै साँईं रँग डारा॥ टेक ॥
सब्द की चोट लगी मेरे मन मैं, बेध गया तन सारा॥१॥
औषध मूल कछू नहिँ लागे, क्या करे बैद बिचारा॥२॥
सुर नर मुनि जन पीर औलिया, कोइ न पावे पारा॥३॥
साहेब कबीर सर्व रँग रँगिया, सब रँग से रँग न्यारा ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

भीँजै चुनरिया प्रेम रस बूँदन ॥ टेक ॥
आरत साज के चली है सुहागिन, पिय अपने को ढूँढन॥१॥
काहे की तोरी बनी है चुनरिया, काहे के लगे चारो फूँदन२
पाँच तत्त की बनी है चुनरिया, नाम के लागे फूँदन॥३॥
चढ़िगे महल खुल गइरे किवरिया, दासकबीर लागे झूलन४

॥ शब्द ७ ॥

दुलहिनी गावहु मंगलचार।
हम घर आये परम पुरुष भरतार ॥ १ ॥

तन रत करि मैं मन रत करिहौं, पंच तत्व तब राती ।
गुरूदेव मेरे पाहुन आये, मैं जोबन मैं माती ॥ २ ॥
सरीर सरोवर बेदी करिहौं, ब्रह्मा वेद उचार ।
गुरूदेव सँग भाँवरि लेइहौं, धन धन भाग हमार ॥३॥
सुर तैंतीसो कैातुक आये, मुनिवर सहस अठासी ।
कहैं कबीर हम ब्याहि चले हैं, पुरुष एक अबिनासी ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

मैं अपने साहेब संग चली ॥ टेक ॥
हाथ मैं नरियर मुख मैं बीड़ा, मोतियन माँग भरी ॥१॥
लिल्ली घोड़ी जरद बछेड़ी, तापै चढ़ि के चली ॥ २ ॥
नदी किनारे सतगुरु भैंटे, तुरत जनम सुधरी ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, दोउ कुल तारि चली ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

सखियो हमहूँ भई ससुरासी ॥ टेक ॥
आयो जोबन बिरह सतायो, अब मैं ज्ञान गली अठिलाती१
ज्ञान गली मैं सतगुरु मिलि गे, सो दइ हमैं पिया की पाती २
वा पाती मैं अगम सँदेसा, अब हम मरने को न डेराती ॥३
कहत कबीर सुनो भाई साधो, बर पाये अबिनासी ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

कैसे जीवेगी बिरहिनी पिया बिन, कीजै कौन उपाय ॥टेक॥
दिवस न भूख रैन नहिँ सुख है, जैसे कलिजुग जाम ।
खेलत फाग छाँड़ि चलु सुंदर, तज चलु धन औ धाम॥१

बन खँड जाय नाम लौ लावो, मिलि पिय से सुख पाय।
तलफत मीन बिना जल जैसे, दरसन लीजे धाय ॥२॥
बिना अकार रूप नहिँ रेखा, कौन मिलेगी आय।
आपन पुरुष समझि ले सुंदरी, देखो तन निरताय ॥३॥
सब्द सरूपी जिव पिव बूझो, छाँड़ो भ्रम की टेक।
कहैँ कबीर और नहिँ दूजा, जुग जुग हम तुम एक ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

कैसे दिन कटिहैँ जतन बताये जइयो ॥ टेक ॥
येहि पार गंगा ओहि पार जमुना,
बिचवाँ मड़इया हमकाँ छवाये जइयो ॥ १ ॥
अँचरा फारि के कागज बनाइन,
अपनी सुरतिया हियरे लिखाये जइयो ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
बहियाँ पकरि के रहिया बताये जइयो ॥ ३ ॥

॥ शब्द १२ ॥

सतगुरु मोरी चूक सँभारो।
हौँ अधीन हीन मति मोरी। चरनन तेँ जिन टारो ॥ टेक ॥
मन कठोर कछु कहा न माने। बहु वा को कहि हारो ॥१॥
तुम हीँ तेँ सब होत गुसाँई। या को बेग सँवारो ॥२॥
अब दीजे संगत सतगुर की। जा तेँ होय निस्तारो ॥३॥
और सकल संगी सब बिसरैँ। होउ तुम एक पियारो ॥४॥

कर देख्यो हित सारे जग से । कोइ न मिल्यो पुनि भारो* ॥५
कहैं कबीर सुनो प्रभु मेरे । भवसागर से तारो ॥६॥

॥ शब्द १३ ॥

मिलना कठिन है, कैसे मिलौंगी पिय जाय ॥ टेक ॥
समझि सोचि पग धरौं जतन से, बार बार डिग जाय।
ऊँची गैल राह रपटीली, पाँव नहीं ठहराय ॥ १ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा, देखत मन सकुचाय ।
नैहर बास बसौं पीहर मैं, लाज तजी नहिं जाय ॥२॥
अधर भूमि जहँ महल पिया का, हम पै चढ़ो न जाय।
धन भइ बारी पुरुष भये भोला, सुरत झकोला खाय ॥३॥
दूती सतगुर मिले बीच मैं, दीन्हो भेद बताय ।
साहेब कबीर पिया से भेटे, सीतल कंठ लगाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

गुरू ने मोहिं दीन्ही अजब जड़ी ॥ टेक ॥
सो जड़ी मोहिं प्यारी लगतु है, अमृत रसन भरी ॥१॥
कायानगर अजब इक बँगला, ता मैं गुप्त धरी ॥ २ ॥
पाँचो नाग पचीसो नागिन, सूँघत तुरत मरी ॥ ३ ॥
या कारे ने सब जग खायो, सतगुर देख डरी ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, ले परिवार तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

गुरु हमैं सजीवन मूर दई ॥ टेक ॥
जल थोड़ा बरषा भइ भारी, छाय रही सब लालमई ॥१॥
छिन छिन पाप कटन जब लागे, बाढ़न लागी प्रीति नई २

---

* गरू, गहिर गंभीर ।

अमरापुर में खेती कीन्हा, हीरा नग तें भेंट भई ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मन की दुबिधा दूर भई ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

गगन की ओट निसाना है ॥ टेक ॥
दहिने सूर चन्द्रमा बायें, तिन के बीच छिपाना है ॥१॥
तन की कमान सुरत का रोदा, सब्द बान ले ताना है २
मारत बान बिंधा तनही तन, सतगुरु का परवाना है ॥३॥
मार्‍यो बान घाव नहिं तन में, जिन लागा तिन जाना है॥४
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जिन जाना तिन माना है॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

जा के लगी सब्द की चोट ॥ टेक ॥
का पोखर का कुआँ बावड़ी, का खाईं का कोट ॥ १ ॥
का बरछी का छुरी कटारी, का ढालन की ओट ॥२॥
या तन की बारूद बनी है, सत्तनाम की तोप ॥ ३ ॥
मारा गोला भरमगढ़ टूटा, जीत लिया जम लोक ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तरिहौ सब्द की ओट ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

साँईं बिन दरद करेजे होय ॥ टेक ॥
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया, कासे कहूँ दुख रोय ॥१॥
आधी रतियाँ पिछले पहरवाँ, साँईं बिन तरस तरस रही सोय
पाँचो मारि पचीसो बस करि, इन में चहै कोइ होय ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु मिले सुख होय ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

हमरी ननँद निगोड़िन जागे ॥ टेक ॥
कुमति लकुटिया निसि दिन व्यापे, सुमति देखि नहिँ भावै।
निसि दिन लेत नाम साहब को, रहत रहत रँग लागे॥१॥
निसि दिन खेलत रही सखियन सँग, मोहिँ बड़ो डर लागे।
मोरे साहेब की ऊँची अटरिया, चढ़त मैँ जियरा काँपे ॥२॥
जो सुख चहै तो लज्जा त्यागे, पिय से हिलि मिलि लागे।
घूँघट खोल अंग भर भैँटे, नैन आरती साजे ॥ ३ ॥
कहैँ कबीर सुनो भाई साधो, चतुर होय सो जाने।
जिन प्रीतम की आस नहीँ है, नाहक काजर पारे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

अमरपुर ले चलु हो सजना ॥ टेक ॥
अमरपुरी की सँकरी गलियाँ, अड़बड़ है चलना ॥ १ ॥
ठोकर लगी गुरु ज्ञान सब्द की, उघर गये झपना ॥२॥
वोहि रे अमरपुर लागि बजरिया, सौदा है करना ॥३॥
वोहि रे अमरपुर संत बसतु हैँ, दरसन है लहना ॥४॥
संत समाज सभा जहँ बैठी, वहीँ पुरुष अपना ॥५॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भवसागर है तरना ॥६॥

॥ शब्द २१ ॥

भक्ती का मारग झीना रे ॥ टेक ॥
नहिँ अचाह नहिँ चाहना चरनन लौलीना रे ॥ १ ॥

साध के सतसँग मेँ रहे निस दिन मन भीना रे ॥२॥
सब्द मेँ सुर्त ऐसे बसे जैसे जल मीना रे ॥ ३ ॥
मान मनी को योँ तजे जस तेली पीना* रे ॥ ४ ॥
दया छिमा संतोष गहि रहे अति आधीना रे ॥ ५ ॥
परमारथ मेँ देत सिर कछु बिलँब न कीना रे ॥ ६ ॥
कहैँ कबीर मत भक्ति का परगट कह दीना रे ॥ ७ ॥

॥ शब्द २२ ॥

ऋतु फागुन नियरानी, कोइ पिया से मिलावे ॥ टेक ॥
सोइ तो सुँदर जाके पिय को ध्यान है,
सोइ पिया के मन मानी ।
खेलत फाग अंग नहिँ मोड़े, सतगुर से लिपटानी ॥१॥
इक इक सखियाँ खेल घर पहुँचीँ,इक इक कुल अरुझानी।
इक इक नाम बिना बहकानी, हो रही ऐँचा तानी॥२॥
पिया को रूप कहाँ लग बरनौँ, रूपहि माहिँ समानी ।
जो रँग रँगे सकल छबि छाके, तन मन सभी भुलानी॥३॥
योँ मत जाने यहि रे फाग है,यह कछु अकथ कहानी ।
कहैँ कबीर सुनो भाई साधो, यह गति बिरले जानी॥४॥

॥ शब्द २३ ॥

पिया मेरा जागे मैँ कैसे सोई री ॥ १ ॥
पाँच सखी मेरे सँग की सहेली,
उन रँग रँगी पिया रँग न मिली री ॥ २ ॥

---

* मोटा । —कथा है कि एक तेली ने सब चिन्ता और मान बड़ाई त्याग दी थी यहाँ तक कि अपनी आलसी स्त्री को जिस काम के लिये वह चाहती बाज़ार मेँ बेधड़क अपने कंधे पर चढ़ा कर ले जाता, इस कारण वह ख़ब हृष्ट पुष्ट और मोटा हो गया था ।

सास सयानी ननद बौरानी,
उन डर डरी पिया सार न जानी री ॥ ३ ॥
द्वादस ऊपर सेज बिछानी,
चढ़ न सकौँ मारी लाज लजानी री ॥ ४ ॥
रात दिवस मोहिं कूका मारे,
मैं न सुनी रचि रहि सँग जार री ॥ ५ ॥
कहैं कबीर सुनु सखी सयानी,
बिन सतगुर पिया मिले न मिलानी री ॥ ६ ॥

॥ शब्द २४ ॥

मोरे लगि गये बान सुरंगी हो ॥ टेक ॥
धन सतगुर उपदेस दियो है, होइ गयो चित्त भिरंगी हो ॥१॥
ध्यान पुरुष की बनी है तिरिया, घायल पाँचो संगी हो ॥२॥
घायल की गति घायल जाने, का जानै जात पतंगी हो ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, निसि दिन प्रेम उमंगी हो ॥४॥

॥ शब्द २५ ॥

हमन हैं इश्क़ मस्ताना, हमन को होशियारी क्या ।
रहैं आज़ाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या ॥१॥
जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर बदर फिरते ।
हमारा यार है हम में, हमन को इंतिज़ारी क्या ॥२॥
ख़लक़ सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है ।
हमन गुर नाम साँचा है, हमन दुनिया से यारी क्या ॥३॥
न पल बिछुड़ैं पिया हम से, न हम बिछुड़ैं पियारे से ।
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेक़रारी क्या ॥ ४ ॥

कबीरा इश्क़ का माता, दुई को दूर कर दिल से ।
जो चलना राह नाज़ुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या ॥५॥

॥ शब्द २६ ॥

मन लागो मेरो यार फ़क़ीरी मेँ ॥टेक ॥
जो सुख पावो नाम भजन मेँ, सो सुख नाहिँ अमीरी मेँ १
भला बुरा सब को सुन लीजै, कर गुजरान गरीबी मेँ ॥२॥
प्रेम नगर मेँ रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी मेँ ॥३॥
हाथ मेँ कूँड़ी बगल मेँ सोँटा, चारो दिसा जगीरी* मेँ ॥४॥
आखिर यह तन खाक मिलैगा, कहा फिरत मगरूरी मेँ॥५॥
कहैँ कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलै सबूरी मेँ ॥६॥

॥ शब्द २७ ॥

कोइ प्रेम की पेँग झुलाओ रे ॥ टेक ॥
भुज के खंभ प्रेम की रसरी, मन महबूब झुलाओ रे ॥१॥
सूहा चोला पहिर अमोला, निज घट पिय को रिझाओ रे २
नैनन बादर की झर लाओ, स्याम घटा उर छाओ रे ॥३॥
आवत जावत सुत के मग पर, फ़िकिर पिया को सुनाओ रे ४
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, पिय को ध्यान चित लाओ रे ५

॥ शब्द २८ ॥

नाचु रे मेरो मन नट होय ॥ टेक ॥
ज्ञान कै ढोल बजाय रैन दिन, सब्द सुनै सब कोई ।
राहू केतु नवग्रह नाचैँ, जमपुर आनँद होई ॥ १ ॥
छापा तिलक लगाय बाँस चढ़ि, होइ रहु जग से न्यारा ।
सहस कला कर मन मेरो नाचै, रीझै सिरजनहारा ॥२॥

*मुआफ़ी ज़मीन ।

जो तुम कूदि जाव भवसागर, कला बदौं मैं तेरो।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, हो रहु सतगुर चेरो ॥३॥

॥ शब्द २९ ॥

गुर बिन दाता कोइ नहीं जग माँगनहारा।
तीन लोक ब्रह्मंड मैं सब के भरतारा ॥ १ ॥
अपराधी तीरथ चले का तीरथ तारे।
काम क्रोध मद ना मिटा का देंह पखारे ॥ २ ॥
कागद की नौका बनी बिच लोहा भारे।
सब्द भेद जाने नहीं मूरख पचि हारे ॥ ३ ॥
वांछ* मनोरथ पिय मिले घट भया उजारा।
सतगुर पार उतारि हैं सब संत पुकारा ॥ ४ ॥
पाहन को का पूजिये या मैं का पावै।
अठसठ† के फल घर मिलैं जो साध जिमावै ॥ ५ ॥
कहैं कबीर बिचार के अंधा खल डोलै।
अंधे को सूझै नहीं घट ही मैं बोलै ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३० ॥

साधो सहज समाधि भली।
गुर प्रताप जा दिन से जागी, दिन दिन अधिक चली ॥१॥
जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा, जो कुछ करौं सो सेवा।
जब सोवौं तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा ॥ २ ॥
कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन, खावँ पियौं सो पूजा।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं, भाव मिटावौं दूजा ॥ ३ ॥

*इच्छा अनुसार। †अड़सठ तीरथ।

आँख न मूँदौं कान न रूँधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं।
खुले नैन पहिचानौं हँसि हँसि, सुन्दर रूप निहारौं ॥४॥
सब्द निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी।
ऊठत बैठत कबहुँ न छूटै, ऐसी तारी लागी ॥ ५ ॥
कहैं कबीर यह उनमुनि रहनी, सो परगट कर गाई।
दुख सुख से कोइ परे परम पद, तेहि पद रहा समाई ॥६॥

॥ शब्द ३१ ॥

गुरु बड़े भृंगी हमारे गुरु बड़े भृंगी।
कीट सोँ ले भृंग कीन्हा आप सोँ रंगी ॥टेक॥
पाँव औरै पंख औरै और रँग रंगी।
जाति कुल ना लखै कोई सब भये भृंगी ॥१॥
नदी नाले मिले गंगै कहावैं गंगी।
दरियाव दरिया जा समाने संग मैं संगी ॥२॥
चलत मनसा अचल कीन्ही मन हुआ पंगी*।
तत्त मैं निःतत्त दरसा संग मैं संगी ॥३॥
बंध तैं निर्बंध कीन्हा तोड़ सब तंगी।
कह कबीर किया अगम गम नाम रँग रंगी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

मैं का से बूझौं अपने पिया की बात री ॥टेक॥
जान सुजान प्रान-प्रिय पिय बिन, सबै बटाऊ जात री १
आसा नदी अगाध कुमति बहै, रोकि काहू पै न जात री २
काम क्रोध दोउ भये करारे, पड़े बिषय रस मात† री ॥३॥

---

* पंगुल। † माते।

ये पाँचो अपमान के संगी, सुमिरन को अलसात री ॥४
कहैं कबीर बिछुरि नहिं मिलिहौ, ज्यौं तरवर बिनपात री५

॥ शब्द ३३ ॥

नारद साध सोँ अंतर नाहीँ ।
जो कोइ साध सोँ अंतर राखै, सो नर नरकै जाहीँ ॥टेक॥
जागै साध ते मैं हूँ जागूँ, सोवै साध ते सोऊँ ।
जो कोइ मेरे साध दुखावै, जरा मूल से खोऊँ ॥ १ ॥
जहाँ साध मेरो जस गावै, तहाँ करौँ मैं बासा ।
साध चलै आगे उठ धाऊँ, मोहिँ साध की आसा ॥२॥
माया मेरी अर्ध-सरीरी, औ भक्तन की दासी ।
अठसठ तीरथ साध के चरनन, कोटि गया और कासी ॥३॥
अंतरध्यान नाम निज केरा, जिन भजिया तिन पाई ।
कहैं कबीर साध की महिमा, हरि अपने मुख गाई ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

मोहिँ तोहिँ लागी कैसे छूटै। जैसे हीरा फोरे न फूटै ॥टेक॥
मोहिँ तोहिँ आदि अंत बन आई। अब कैसे कै दुरत दुराई१
जैसे कँवल-पत्र जल बासा। ऐसे तुम साहेब हम दासा ॥२॥
जैसे चकोर तकत निसि चंदा। ऐसे तुम साहेब हम बंदा॥३॥
जैसे कीट भृंग लै लाई। तैसे सलिता सिंधु समाई ॥४॥
हम तो खोजा सकल जहाना। सतगुर तुम सम कोउ न आना
कहैं कबीर मोरा मन लागा। जैसे सोनै मिला सुहागा।६

॥ शब्द ३५* ॥

सतगुर के सँग क्यौं न गई री ॥ टेक ॥

सतगुर सँग जाती सोना बनि जाती,
अब माटी के मैं मोल भई री ॥ १ ॥

सतगुर हैं मेरे प्रान-अधारा,
तिनकी सरन मैं क्यौं न गही री ॥ २ ॥

सतगुर स्वामी मैं दासी सतगुर की,
सतगुर न भूले मैं भूल गई री ॥ ३ ॥

सार के। छोड़ि असार से लिपटी,
धृग धृग धृग मतिमंद भई री ॥ ४ ॥

प्रान-पती के। छोड़ि सखी री,
माया के जाल मैं अरुझ रही री ॥ ५ ॥

जो प्रभु हैं मेरे प्रान-अधारा,
तिन की मैं क्यौं ना सरन गही री ॥ ६ ॥

चितावनी और उपदेश

॥ शब्द १ ॥

बिनसतगुरनररहतभुलाना, खोजतफिरतराहनहिंजाना ।
केहर-सुत†ले आयो गरड़िया, पालपोसउनकीन्हसयाना१
करतकलोलरहतअजयन‡सँग,आपनमर्मउनहुँनहिंजाना२
केहर इक जंगल से आयो,ताहि देख बहुतै रिसियाना३

---

* इस शब्द मैं कबीर साहेब की छाप नहीं है परंतु जो कि अति मनोहर है और लाहौर के कबीरपंथी महंत ने कबीर साहेब का करके दिया है हम उसे छापते हैं। † शेर का बच्चा। ‡ बकरी।

पकरि के भेद तुरत समुझाया, आपन दसा देख मुसक्याना ४
जस कुरंग* बिच बसत बासना, खोजत मूढ़ फिरत चौगाना ५
कर उसवास† मनै मैं देखै, यह सुगंधि धौं कहाँ बसाना ६
अर्ध उर्ध बिच लगन लगी है, छक्यो रूप नहिं जात बखाना ७
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, उलटि आपु मैं आपु समाना ॥८

॥ शब्द २ ॥

बिन सतगुर नर भरम भुलाना ॥ टेक ॥
सतगुर सब्द क मर्म न जाना, भूलि परा संसारा ॥ १ ॥
बिना नाम जम धरि धरि खैहै, कौन छुड़ावनहारा ॥२॥
सिरजनहार का मर्म न जाने, धृग जीवन जग तेरा ॥ ३ ॥
धरमराय जब पकरि मँगैहै, परिहै मार घनेरा ॥ ४ ॥
सुत नारी को मोह त्यागि कै, चीन्हो सब्द हमारा ॥५॥
सार सब्द परवाना पावो, तब उतरो भव पारा ॥ ६ ॥
इक-मत ह्वै के चढ़ो नाव पर, सतगुर खेवनहारा ॥७॥
साहिब कबीर यह निर्गुन गावैं, संतन करो बिचारा ॥८॥

॥ शब्द ३ ॥

टुक जिंदगी बँदगी कर लेना, क्या माया मद मस्ताना। टेक
रथ घोड़े सुखपाल पालकी, हाथी और बाहन नाना ।
तेरा ठाठ काठ की टाटी, यह चढ़ चलना समसाना‡ ॥१॥
ऊन पाट§ पाटम्बर अम्बर, जरी बफ़ का बाना ।
तेरे काज गजी गज चारिक||, भरा रहे तोसखाना ॥२॥
खर्चे की तदबीर करो तुम, मंजिल लंबी जाना ।
पहिचन्ते का गाँव न मग मैं, चौकी न हाट दुकाना॥३॥

---

* मृगा । † सोँच । ‡ स्मसान । § ऊनी कपड़ा । || चार एक ।

जीते जी ले जीत जनम को, यही गोय यहि मैदाना ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, नहिं कलि तरन जतन आना ॥४

॥ शब्द ४ ॥

सुगवा पिंजरवा छोरि करि भागा ॥ टेक ॥
इस पिंजरे में दस दरवाजा ।
दसो दरवाजे किवरवा लागा ॥ १ ॥
अँखियन सेती नीर बहन लाग्यो ।
अब कस नाहिं तू बोलत अभागा ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो ।
उड़ि गे हंस टूटि गयो तागा ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

कौनो ठगवा नगरिया लूटल हो ॥ टेक ॥
चंदन काठ के बनल खटोलना । ता पर दुलहिन सूतल हो ॥१
उठो री सखी मोरी माँग सँवारो । दूलहा मो से रूसल हो ।२
आये जमराज पलँग चढ़ि बैठे । नैनन आँसू टूटल हो ३
चारि जने मिलि खाट उठाइन । चहुँ दिस धूधू ऊठल हो ।४
कहत कबीर सुनो भाइ साधो । जग से नाता छूटल हो ५

॥ शब्द ६ ॥

हम काँ ओढ़ावे चदरिया, चलती बिरिया ॥टेक॥
प्रानराम जब निकसन लागे, उलट गईं दूनौं नैन पुतरिया १
भीतर से जब बाहर लाये, छूटि गई सब महल अटरिया २
चार जने मिलि खाट उठाइन, रोवत ले चले डगर डगरिया ३
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, संग चलेगी वहि सूखी लकरिया ४

॥ शब्द ७ ॥

क्या देख दिवाना हूआ रे ॥ टेक ॥

माया सूली सार बनी है, नारी नरक का कूवा रे ॥ १ ॥

हाड़ मास नाड़ी का पिंजर, ता मेँ मनुवाँ सूवा रे ॥२॥

भाई बंद और कुटुँब कबीला, ता मेँ पचि पचि मूवा रे ॥३॥

कहत कबीर सुनो भाइ साधो, हार चला जग जूवा रे ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

बीती बहुत रहि थोरी सी ॥ टेक ॥

खाट परे नर भाँखन लागे, निकर प्रान गयो चोरी सी १

भाई बंद कुटुँब सब आये, फूँक दियो मानो होरी सी २

कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो, सिर पर देत हैँ भौँरी सी ३

॥ शब्द ९ ॥

सोच समुझ अभिमानी, चादर भइ है पुरानी ॥ टेक ॥

टुकड़े टुकड़े जोड़ि जुगत सौँ, सी के अँग लिपटानी ।

कर डारी मैली पापन सौँ, लोभ मोह मेँ सानी ॥ १ ॥

ना यहि लगो ज्ञान के साबुन, ना धोई भल पानी ।

सारी उमिर ओढ़ते बीती, भली बुरी नहिँ जानी ॥२॥

संका मान जान जिय अपने, यह है चीज बिरानी ।

कहत कबीर धर राखु जतन से, फेर हाथ नहिँ आनी॥३॥

॥ शब्द १० ॥

खेल ले नैहरवाँ दिन चार ॥ टेक ॥

पहिली पठौनी तीन जने आये, नौवा बाम्हन बारि ॥१॥

बाबुल जी मैँ पैयाँ तोरी लागौँ, अब की गवन दे टारि २

दुसरी पठौनी आपै आये, लेके डोलिया कहार ॥ ३ ॥
धरि वहियाँ डोलिया बैठारिन, कोऊ न लागै गोहार ॥४॥
ले डोलिया जाय वन मेँ उतारिन, कोइ नहिँ संगी हमार ५
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो, इक घर है दस द्वार ॥६॥

॥ शब्द ११ ॥

डँड़िया फँदाय धन चलु रे, मिलि लेहु सहेली ।
दिनाँ चारि को संग है, फिर अंत अकेली ॥ १ ॥
दिन दस नैहर खेलि ले, सासुर निज भरना ।
बहियाँ पकरि पिय ले चले, तब उजुर न करना ॥ २ ॥
इक अँधियारी कोठरी, दूजे दिया न बाती ।
देहिँ उतारि ताही घराँ, जहँ संग न साथी ॥ ३ ॥
इक अँधियारी कूइयाँ, दूजे लेजुर* टूटी ।
नैन हमारे अस ढुरेँ, मानो गागर फूटी ॥ ४ ॥
दास कबीरा यौँ कहै, जग नाहिन रहना ।
संगी हमरे चलि गये, हमहूँ को चलना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

साँईं के सँग सासुर आई ॥ टेक ॥
संग न सूती स्वाद न जान्यौ, गयो जोबन सुपने की नाँईं॥१॥
जना चारि मिलि लगन सोधाई, जना पाँच मिलि मंडप छाई
सखी सहेली मंगल गावैँ, दुख सुख माथे हरदी चढ़ाई ॥२॥
नाना रूप परी मन भाँवरि, गाँठि जोरि भइ पति की आई।
अरघै दै दै चली सुबासिन, चौकहिँ राँड़ भई सँग साँईं॥३॥
भयो बियाह चली बिन दूलह, बाट जात समधी समुझाई।
कहैँ कबीर हम गवने जैबै, तरब† कंत लै तूर बजाई॥४॥

* रस्सी। † तरैंगे।

॥ शब्द १३ ॥

बहुरि नहिँ आवना या देस ॥ टेक ॥
जो जो गये बहुरि नहिँ आये, पठवत नाहिँ सँदेस ॥ १ ॥
सुर नर मुनि औ पीर औलिया, देवी देव गनेस ॥ २ ॥
धरि धरि जनम सबै भरमे हैं, ब्रह्मा विस्नु महेस ॥ ३ ॥
जोगी जंगम औ सन्यासी, डीगम्बर दुरवेस ॥ ४ ॥
चुंडित मुंडित पंडित लोई, सुर्ग रसातल सेस ॥ ५ ॥
ज्ञानी गुनी चतुर औ कबिता, राजा रंक नरेस ॥ ६ ॥
कोइ रहीम कोइ राम बखानै, कोइ कहै आदेस ॥ ७ ॥
नाना भेष बनाय सबै मिलि, ढूँढ़ि फिरे चहुँ देस ॥ ८ ॥
कहैँ कबीर अंत ना पैहो, बिन सतगुर उपदेस ॥ ९ ॥

॥ शब्द १४ ॥

वा दिन की कछु सुध कर मन माँ ॥ टेक ॥
जा दिन लैचलु लैचलु होई, ता दिन संग चलै नहिँ कोई।
तात मात सुत नारी रोई, माटी के सँग दिये समोई।
सो माटी काटेगी तन माँ ॥ १ ॥
उलफत नेहा कुलफत नारी, किसकी बीबी किसकी बाँदी।
किसका सोना किसकी चाँदी, जा दिन जम ले चलिहै बाँधी।
डेरा जाय परै वहि बन माँ ॥ २ ॥
टाँड़ा तुम ने लादा भारी, बनिज किया पूरा ब्योपारी।
जूवा खेला पूँजी हारी, अब चलने की भई तयारी।
हित चित मत तुम लाओ धन माँ ॥ ३ ॥

जो कोइ गुरु से नेह लगाई, बहुत भाँति सोई सुख पाई।
माटी में काया मिलि जाई, कहैं कबीर आगे गोहराई।
साँच नाम साहिब को सँग माँ ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जोगी जन जागत रहो मेरे भाई।
जागत रहियो सोय मत जैयो, चोर मूसि ले जाई ॥ १ ॥
बिरह फाँसि डाले हित चित करि, मारे ढिंग बैठाई।
बाजीगर बन्दर करि राखै, ले जाय संग लगाई ॥ २ ॥
रस कस लेत निचोरि कामिनी, बुधि बल सब छलि खाई।
गाँडे की छोई करि डारै, रहन न देत सिठाई ॥ ३ ॥
तसकर तरज* हरन† मृग-चितवन, कंदर्प‡ लेत चुराई।
घृत पावक निज नारि निकट ढिँग, कोइ बिरले जन ठहराई ॥४
बन के तपसी नागा लूटे, सुर नर मुनि छलि खाई।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, जग लूटा ढोल बजाई ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

हमारे मन कब भजिहो गुरु नाम ॥ टेक ॥
बालापन जनमत हीं खोयो, ज्वानी में ब्यापा काम।
बूढ़ भये तन थाकन लागे, लटकन लागे चाम ॥ १ ॥
कानन बहिर नैन नहिं सूझै, भये दाँत बेकाम।
घर की त्रिया बिमुख होइ बैठी, पुत्र कियो कलकान§ ॥२॥
खटिया से भुइयाँ कर दीन्हो, जम का गड़ा निसान।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, दुबिधा में निकसत प्रान ॥३॥

---

* चोर की तरह। † हर लेने वाली। ‡ वीर्य्य। § झगड़ा।

॥ शब्द १७ ॥

मन हलवाई हो, सतनाम बिमल पकवान ॥ टेक ॥
काया कराही कर्म घृत भरु, मन मैदा को सानु ।
ब्रह्म अगिन उदगारि* के, तू अजब मिठाई छानु ॥१॥
तन हमारो ताखरी† हो, मन हमारो सेर ।
सुरति हमरी डाँड़िया हो, चित हमारो फेर ॥२॥
गगन मँडल मेँ घर हमारो, त्रिकुटी मोर दुकान ।
रहनि हमरी उनमुनी, तातेँ लागि बस्तु बिकान ॥३॥
लोभ लहर नदिया बहै हो, लख चौरासी धार ।
बिन गुरु साकित बूड़ि मुए, कोइ गुरमुख उतरे पार ॥४॥
कहैँ कबीर स्वामी अगोचरा, तुम गति अगम अपार ।
संतन लाद्यो सत्त नाम, सब बिष लाद्यो संसार ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

करो जतन सखी साँईं मिलन की ॥ टेक ॥
गुड़िया गुड़वा सूप सुपलिया,
तजि दे बुधि लरिकैयाँ खेलन की ॥ १ ॥
देवता पित्तर भुइयाँ भवानी,
यह मारग चौरासी चलन की ॥ २ ॥
ऊँचा महल अजब रँग बँगला,
साँईं की सेज वहाँ लगी फूलन की ॥ ३ ॥
तन मन धन सब अर्पन कर वहँ,
सुरत सम्हार परु पइयाँ सजन की ॥ ४ ॥

---

* जगा कर । † पलरा ।

कहैं कबीर निर्भय होय हंसा,
कुंजी बता द्यौं ताला खुलन की ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

अपने घट दियना बारु रे ॥ टेक ॥
नाम के तेल सुरत कै बाती, ब्रह्म अगिन उदगारु रे॥१॥
जगमग जोत निहारु मँदिर मैं, तन मन धन सब वारु रे॥२॥
झूठी जान जगत की आसा, बारंबार बिसारु रे॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, आपन काज सँवारु रे॥४॥

॥ शब्द २० ॥

मन तुम नाहक दुंद मचाये ॥ टेक ॥
करि असनान छुवो नहिं काहू, पाती फूल चढ़ाये ॥१॥
मूरति से दुनिया फल माँगै, अपने हाथ बनाये ॥२॥
यह जग पूजै देव देहरा, तीरथ बर्त अन्हाये ॥३॥
चलत फिरत मैं पाँव थकित भे, यह दुख कहाँ समाये ॥४॥
झूठी काया झूठी माया, झूठे झूठ लखाये ॥५॥
बाँझिन गाय दूध नहिं देहै, माखन कहँ से पाये ॥६॥
साँचे के सँग साँच बसत है, झूठे मारि हटाये ॥७॥
कहैं कबीर जहँ साँच वस्तु है, सहजै दरसन पाये ॥८॥

॥ शब्द २१ ॥

मन फूला फूला फिरै जक्त मैं कैसा नाता रे ॥ टेक ॥
माता कहै यह पुत्र हमारा, बहिन कहै बिर* मेरा ।
भाई कहै यह भुजा हमारी, नारि कहै नर मेरा ॥ १ ॥
पेट पकरि के माता रोवै, बाँहि पकरि के भाई ।
लपटि झपटि के तिरिया रोवै, हंस अकेला जाई ॥ २ ॥

---

* बीर=भाई ।

जब लग जीवै माता रोवै, बहिन रोवै दस मासा ।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै, फेर करै घर बासा ॥३॥
चार गजी चरगजी मँगाया, चढ़ा काठ की घोड़ी ।
चारो कोने आग लगाया, फूँक दियो जस होरी ॥४॥
हाड़ जरै जस लाह कड़ी को, केस जरै जस घासा ।
सोना ऐसी काया जरि गइ, कोइ न आयो पासा ॥५॥
घर की तिरिया ढूँढ़न लागी, ढूँढ़ि फिरी चहुँ देसा ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, छाँड़ो जग की आसा ॥६॥

॥ शब्द २२ ॥

छाँड़ि दे मन बौरा डगमग ॥ टेक ॥

अब तो जरे मरे बनि आवै, लीन्हो हाथ सिंधोरा ।
प्रीत प्रतीत करो दृढ़ गुरू की, सुनो सब्द घनघोरा ॥१॥
होइ निसंक मगन है नाचे, लोभ मोह भ्रम छाँड़े ।
सूरा कहा मरन सों डरपे, सती न संचय भाँड़े ॥ २ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा, यही गले मैं फाँसी ।
आगे है पग पाछे धरिहो, होय जक्त मैं हाँसी ॥ ३ ॥
अगिन जरे ना सती कहावै, रन जूझे नहिं सूरा ।
बिरह अगिन अंतर मैं जारै, तब पावै पद पूरा ॥ ४ ॥
यह संसार सकल जग मैला, नाम गहे तेहि सूँचा ।
कहैं कबीर भक्ति मत छाँड़ो, गिरत परत चढु ऊँचा ॥५॥

॥ शब्द २३ ॥

भूला मन समुझावै जो पै भूला मन समुझावै ॥ टेक ॥
अरब खरब लौं दर्ब गाड़े, खरिचन खान न पावै ।
जब जम आइ करै कंठ घेरो, दै दै सैन बुझावै ॥ १ ॥

बोइ बबूर अँब फल चाहत, सो फल कैसे पावै ।
खोटा दाम गाँठि लै डोलत, भलि भलि वस्तु मोलावै ॥२॥
गुरु परताप साध की संगति, मन-बांछित* फल पावै ।
जाति जोलाहा नाम कबीरा, बिमल बिमल गुन गावै ॥३॥

॥ शब्द २४ ॥

मन बनियाँ बानि न छोड़ै ॥ टेक ॥
जनम जनम का मारा बनियाँ, अजहूँ पूर न तौलै ।
पासँग कै अधिकारी लै लै, भूला भूला डोलै ॥ १ ॥
घर मेँ दुबिधा कुमति बनी है, पल पल मेँ चित तोरै ।
कुनबा वाके सकल हरामी, अमृत मेँ बिष घोरै ॥ २ ॥
तुमहीँ जल मेँ तुमहीँ थल मेँ, तुमहीँ घट घट बोलै ।
कहैँ कबीर वा सिप को डरिये, हिरदे गाँठि न खोलै ॥३॥

॥ शब्द २५ ॥

उठि पछिलहरा पिसना पीस ॥ टेक ॥
ढोरु पछोरु पलक छिन दम दम ।
अनहद जाँत गड़ा तोरे सीस ॥ १ ॥
कर बिन चलै झाँक बिन निघरै† ।
बंकनाल चलै बिस्वा बीस ॥ २ ॥
मन मैदा मीहीँ कर चालो ।
चोकर तजि द्यो पाँच पचीस ॥ ३ ॥
कहैँ कबीर सुनो भाई साधो ।
आपुइ आय मिलैँ जगदीस ॥ ४ ॥

---

* जो चाहे सो । † चक्की मेँ जो पीछे से थोड़ासा अन्न रह जाता है उसे चोकर या कोई अनाज डाल कर और चक्की को तेज़ चलाकर साफ़ कर लेते हैँ ।

॥ शब्द २६ ॥

तुम जाइ अँजोरे बिछावो, अँधेरे में का करिहो ॥टेक॥
जब लग स्वाँसा दीप जरतु है, जैसे बनै तो बनावो॥१॥
गुन के पलँग ज्ञान कै तोसक, सूरति तकिया लगावो ॥२॥
जो सुख चाहो सो सतमहले*, बहुरि दुक्ख नहिं पावो॥३॥
दास कबीर गुरु सेज सँवारो, उन की नारि कहावो ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, आवा गवन मिटावो ॥५॥

॥ शब्द २७ ॥

कहै कोइ लाखौं, करैया कोइ और है ॥ टेक ॥
कंसा कहै बसुदेव को निरबंस करौं† ।
रुक्मा कहै सिसुपाल के सिर मौर है‡ ॥ १ ॥

---

* परम और अविनाशी सुख सातवें लोक में पहुँचे बिना नहीं प्राप्त हो सकता।

† राजा कंस से नारद मुनि ने कहा था कि अपने बहनोई बसुदेव जी की किसी औलाद के हाथ से तुम मारे जावगे इस लिये वह अपनी बहिन की सब औलाद को ज्योंही उत्पन्न हुई मारता गया केवल आठवीं औलाद श्रीकृश्न अचरज रीति से बच गये जिन्हों ने बाल अवस्थाही में अपने मामा कंस का बध किया।

‡ रुक्मिनी जी के भाई रुक्म ने अपने बल के घमंड में अपनी बहिन और पिता की इच्छा के विरुद्ध रुक्मिनी जी का ब्याह राजा शिशुपाल से ठहराया। जब बरात आई श्रीकृश्न ने रुक्म शिशुपाल और दूसरे शूर बीर राजाओं का घमंड तोड़ने और अपने भक्त रुक्मिनी जी और उनके पिता की मनोकामना पूरी करने के हेतु रुक्मिनी को हर कर अपने साथ ब्याह कर लिया। कुछ काल पीछे शिशुपाल और रुक्म दोनों भिन्न २ अवसर पर श्रीकृश्न के हाथ से मारे गये। शिशुपाल के पूर्व जन्म की कथा यों है कि जय बिजय बैकुंठ के द्वारपाल थे जिन्हों ने सनकादिक को एक समय में बैकुंठ के द्वारे पर रोक दिया। इस पर सनकादिक ने सराप दिया जिस के प्रभाव से उन दोनों ने पहिले हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप का चोला पाया, दूसरे जन्म में रावन और कुंभकरन हुए और तीसरे जन्म में शिशुपाल और दन्तवक्र।

रावना* कहै मैं तो जम को भी मारि डारौं ।
मेघनाद* कहै अपार बल मोर है ॥ २ ॥
कसिपा† कहै पहलाद को मैं मारि डारौं ।
देखो मेरे भाई याही मेरो कौल है ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ।
भक्त-बछल सतनाम माहीं ठौर है ॥ ४ ॥

॥ शब्द २८ ॥

नागिन ने पैदा किया नागिन डँसि खाया ।
कोइ कोइ जन भागत भये गुरु सरन तकाया ॥ १ ॥
सिंगी रिषि‡ भागत भये बन माँ बसे जाई ।
आगे नागिन गाँसि के वोहीं डँसि खाई ॥ २ ॥
नेजाधारी सिव बड़े भागे कैलासा ।
जोति रूप परगट भई परबत परकासा ॥ ३ ॥
सुर नर मुनि जोगी जती कोइ बचन न पाया ।
नोन तेल ढूँढ़े नहीं कच्चे धरि खाया ॥ ४ ॥
नागिन डरपै संत से उहवाँ नहिं जावै ।
कहैं कबीर गुर मंत्र से आपै मरि जावै ॥ ५ ॥

---

*रावन लंका का राजा और मेघनाद उसका बेटा दोनों भारी जोधा थे अंत को रावन श्रीरामचन्द्र के हाथ से और मेघनाद लछमन जी के हाथ से मारे गये।

†हिरण्यकश्यप बड़ा ईश्वर द्रोही था और अपने भगवत भक्त बेटे प्रहलाद को भक्ति के अपराध में मार डालने पर तत्पर था। ईश्वर ने नरसिंहावतार धर कर अपने नख से हिरण्यकश्यप का पेट फाड़ कर उस का वध किया।

‡शृंगी ऋषि की कथा मिश्रित अंग के आख़िर शब्द की पहली कड़ी के नोट में देखिये।

॥ शब्द २६ ॥

पानी बिच मीन पियासी। मोहिँ सुनिसुनि आवत हाँसी।टेक
आतम ज्ञान बिना सब झूठा, क्या मथुरा क्या कासी ॥ १ ॥
घर में बस्तु धरी नहिँ सूझै, बाहर खोजन जासी ॥ २ ॥
मृग के नाभि माहिँ कस्तूरी, बन बन खोजत बासी* ॥ ३ ॥
कहँ कबीर सुनो भाइ साधो, सहज मिलै अबिनासी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३० ॥

अवधू निरंजन जाल पसारा ॥ टेक ॥
स्वर्ग पताल जीव मृत-मंडल, तीन लोक बिस्तारा ।
ब्रह्मा बिस्नु सिव प्रगट किये है, ताहि दिये सिर भारा १
ठाँव ठाँव तीरथ ब्रत थाप्यो, ठगने को संसारा ।
माया मोह कठिन बिस्तारा, आपु भये करतारा ॥ २ ॥
सतगुरु सब्द को चीन्हत नाहीँ, कैसे होय उबारा ।
जारि भूँजि कोइला करि डारै, फिरि फिरि लै अवतारा ॥३॥
अमर लोक जहँ पुरुष बिराजै, तिन का मूँदा द्वारा ।
जिन साहेब से भये निरंजन, सो तो पुरुष है न्यारा ॥ ४ ॥
कठिन काल तेँ बाचा चाहो, गहो सब्द टकसारा ।
कहँ कबीर अमर करि राखौं, मानौ सब्द हमारा ॥५॥

॥ शब्द ३१ ॥

चंदा झलकै यहि घट माहीँ । अंधी आँखन सूझै नाहीँ ॥१
यहि घट चंदा यहि घट सूर। यहि घट गाजै अनहद तूर ॥२॥

---

*सुगंधि ।

यहि घट बाजै तबल निसान। बहिरा सब्द सुनै नहिं कान ३
जब लग मेरी मेरी करै। तब लग काज न एकौ सरै॥ ४॥
जब मेरी ममता मरि जाय। तब प्रभु काज सँवारैं आय ५
जब लग सिंघ रहै बन माहिं। तब लग वह बन फूलै नाहिं ६
उलट स्यार सिंघ को खाय। उकिठा* बन फूलै हरियाय ७
ज्ञान के कारन करम कमाय। होय ज्ञान तब करम नसाय ८
फल कारन फूलै बनराय। फल लागे पर फूल सुखाय ॥९॥
मिरग पास कस्तूरी बास। आपु न खोजै खोजै घास ॥१०॥
पारै पिंड† मीन लै खाई। कहैं कबीर लोग बौराई ॥११॥

॥ शब्द ३२ ॥

सुनता नहीं धुन की खबर अनहद का बाजा बाजता।
रसमंद मंदिर बाजता बाहर सुने तो क्या हुआ ॥ १ ॥
गाँजा अफीम और पोसता भाँग और सराबैं पीवता।
इक प्रेम रस चाखा नहीं अमली हुआ तो क्या हुआ ॥२॥
कासी गया और द्वारिका तीरथ सकल भरमत फिरै।
गाँठी न खोली कपट की तीरथ गया तो क्या हुआ॥३॥
पोथी किताबैं बाँचता औरौं को नित समुझावता।
त्रिकुटी महल खोजै नहीं बक बक मरा तो क्या हुआ ॥४॥
काजी किताबैं खोजता करता नसीहत और को।
महरम नहीं उस हाल से काजी हुआ तो क्या हुआ ॥५॥
सतरंज चौपड़ गंजिफा इक नर्द है बदरंग की।
बाजी न लाई प्रेम की खेला जुआ तो क्या हुआ ॥६॥

*सूखा। †पिंडा।

जोगी दिगम्बर सेवड़ा कपड़ा रँगे रँग लाल से।
वाकिफ़ नहीं उस रंग से कपड़ा रँगे से क्या हुआ ॥७॥
मंदिर झरोखे रावटी गुल चमन में रहते सदा।
कहते कबीरा हैं सही घट घट में साहिब रम रहा ॥८॥

॥ शब्द २३ ॥

जोगिया खेलियो बचाय के, नारि नैन चलैं बान ॥टेक॥
सिंगी* की भिंगी करि डारी, गोरख† के लिपटान ॥१॥
कामदेव महादेव* सतावै कहा कहा करौं बखान ॥ २ ॥
आसन छोड़ि मुछंदर‡ भागे, जल माँ मीन समान ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु चरनन लिपटान ॥४॥

---

*शृंगी ऋषि और महादेव जी को जिस २ प्रकार से माया ने छला वह कथायें मिश्रित अंग के आख़िर शब्द की पहली और चौथी कड़ियों में लिखी हैं।

†कहते हैं कि गोरखनाथ जोगी वन में तपस्या करते थे। एक रोज़ माया स्त्री का रूप धारन करके उनके पास आई और कहा मेरे पति को जंगल में शेर खा गया अब मैं अकेली वन में डरती हूँ दया करके रात को यहाँ रहने दो सुबह को मैं चली जाऊँगी। उन्हों ने कहा अच्छा और एक कोठरी में किवाड़ भीतर से बंद कराके बैठा दिया और कह दिया कि अगर मैं भी आकर कहूँ कि खोलो तौ भी किवाड़ मत खोलना। उसने कहा अच्छा। ऋषिजी बैठे भजन करने तो ध्यान में वह स्त्री सनमुख आने लगी उसका नक़्श हृदय पर पड़ गया था बार बार उसी का रूप नज़राई पड़ने लगा, भजन से उठ बैठे, आवाज़ दी कुंडी खोलो उसने कहा हम नहीं खोलेंगे तुमने मना किया था। फिर बेचारे ऐसे काम बस हो गये कि छत तोड़ के कोठे में कूद पड़े। दूसरे रोज़ नदी के पार उसको कंधे पर बैठा कर ले जाना पड़ा। उसने खूब एड़ लगाई और कहा बड़ा टर्रा घोड़ा था इसके लिये मैं ने लोहे की लगाम बनवाई थी यह तो हाथ नहीं आता था अब देखो मैं उसके सिर पर सवार हूँ। सुनते ही होश आया तब माया रूपी स्त्री को छोड़ के भागे।

‡मुछन्दर नाथ का ज़िक्र है कि एक रोज़ किसी ने कहा कि राज का रस और आनन्द बड़ा मीठा है, मुछन्दरनाथ बोले अच्छा तजरबा करना चाहिये। जोगी

॥ शब्द ३४ ॥

तेरे गवने का दिन नगिचाना, सोहागिनि चेत करो री॥टेक॥

बालापन तन खेल गँवायौ, तरुनै चाल कुचाल।
का उत्तर देइहौ रे सजनी, पिय पूछै जब हाल।
समुझ मन का करिहौ री ॥ १ ॥

भौसागर औगाध भँवर है, सूझै वार न पार।
केहि विधि पार उतरबौ सजनी, नहिँ खेवट नहिँ नाव।
खेवैया बिन का करिहौ री ॥ २ ॥

सील सुमति की चुनरी पहिरो, सत मति रंग रँगाय।
ज्ञान तेल सौँ माँग सँवारो, निर्भय सेँदुर लाय।
कपट पट खोल धरौ री ॥ ३ ॥

पिय घर चेत करौ री सजनी, नैहर नाहिँ निबाह।
नैहर नाम कहा लै करिहौ, मरिहौ भर्म भुलाय।
पुरुष बिन का करिहौ री ॥ ४ ॥

गति तो थी ही दूसरी देह मेँ अपने जीव को प्रवेश करने की सामरथ रखते थे, एक राजा मरता था उसकी देह मेँ प्रवेश किया और अपने चेले गोरखनाथ को कह दिया कि भोग विलास मेँ अगर हम भूल जावेँ तो तुम यह मंत्र आके पढ़ना। राजा जो मरता था उठ खड़ा हुआ, रानी सब ख़ुश हुईँ। एक बरस उनके संग भोग विलास किया मगर ख़ौफ़ था कि किसी वक़्त गोरखनाथ आ जायगा इस लिये हुक्म दिया कि कोई कनफटा जोगी शहर मेँ न आने पावे। राग सुनने का राजा को बड़ा शौक़ था इस लिये गोरखनाथ गाना बजाना सीख कर गाने वालोँ के संग दरबार मेँ गये और जब मंत्र पढ़ा तब मुछन्दरनाथ को होश आया– फिर अपने पुराने चोले मेँ आ गये।

सासुर सत्त सब्द निर्बानी, त्रिकुटी संगम ध्यान।
झिलमिल जोत जहँ निसु दिन झलकै, तीन बसै इक ठाम।
सुरत दे निरत करौ री ॥ ५ ॥
कहैं कबीर सोई सतवंती, पिव के रंग रँगाय।
अमर लोक हाथे करि लैइ है, तेरो सोहाग सोहाय।
महल बिसराम करौ री ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

हंसा हंस मिले सुख होई ॥ टेक ॥
इहाँ तो पाँती है बगुलन की, कदर न जानै कोई ॥१॥
जो हंसा तोरे प्यास छीर की, कूप नीर नहिँ होई।
यह तो नीर सकल ममता को, हंस तजा जस चोई* ॥ २ ॥
षट दरसन पाखंड छानवे, भेष धरे सब कोई।
चार बरन औ बेद किताबैँ, हंस निराला होई ॥ ३ ॥
यह जम तीन लोक को राजा, बाँधे अस्त्र सँजोई† ।
सब्द जीत चलो हंस हमारे, तब जम रहि है रोई ॥४॥
कहैँ कबीर प्रतीत मान ले, जिव नहिँ जाय बिगोई।
लै बैठारौँ अमर लोक मेँ, आवा गवन न होई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

माया महा ठगनी हम जानी ॥ टेक ॥
तिरगुन फाँसि लिये कर डोलै बोलै मधुरी बानी ॥ १ ॥

*चोकर। †हथियार को ठीक करके।

केसव के कमला होइ बैठी, सिव के भवन भवानी ॥ २ ॥
पंडा के मूरत होइ बैठी, तीरथ हूँ मैं पानी ॥ ३ ॥
जोगी के जोगिन होइ बैठी, राजा के घर रानी ॥ ४ ॥
काहू के हीरा होइ बैठी, काहू के कौड़ी कानी ॥ ५ ॥
भक्तन के भक्तिन होय बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी ॥ ६ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

अवधू अमल करै सो गावै ।
जौं लग अमल असर ना होवै, तौं लग प्रेम न आवै ॥टेक॥
बिन खाये फल स्वाद बखानै, कहत न सोभा पावै ।
बिन गुरु ज्ञान गाँठि के होने, नाहक बस्तु मुलावै ॥ १ ॥
आँधर हाथ लेय कर दीपक, करि परकास दिखावै ।
औरन आगे करै चाँदना, आपु अँधेरे धावै ॥ २ ॥
आँधर आप आँधर दस गोहने,* जग मैं गुरू कहावै ।
मूल महल की खबर न जानै, औरन को भरमावै ॥ ३ ॥
ले अमृत मूरख रँड सींचै, कलप-बृच्छ बिसरावै ।
लैके बीज ऊसर मैं बोवै, पाहन पानी नावै† ॥ ४ ॥
लागी आग जरै घर आपन, मूरख घूर बुतावै‡ ।
पढ़ा गुना जो पंडित भूलै, वाको को समुझावै ॥ ५ ॥
कहैं कबीर सुनो हो गोरख, यह संतन नहिँ भावै ।
है कोइ सूर पूर जग माहीं, जो यह पद अर्थावै ॥ ६ ॥

---

*साथ मैं। †पत्थर की मूरत पर पानी चढ़ाता है। ‡घर मैं आग लगी है और घूर पर पानी डालता है।

॥ शब्द ३८ ॥

तन घर सुखिया कोइ न देखा, जो देखा सो दुखिया हो।
उदय अस्त की बात कहतु हैँ, सब का किया बिबेका हो॥ १॥
घाटे बाढ़े सब जग दुखिया, क्या गिरही बैरागी हो।
सुकदेव* अचारज दुख के डर से, गर्भ से माया त्यागी हो॥२॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना हो।
आसा त्रिस्ना सबको ब्यापै, कोई महल न सूना हो॥३॥
साँच कहौं तो कोई न मानै, झूठ कहा नहिँ जाई हो।
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर दुखिया, जिन यह राह चलाई हो॥४॥
अवधू दुखिया भूपति दुखिया, रंक दुखी बिपरीती हो।
कहँ कबीर सकल जग दुखिया, संत सुखी मन जीती हो॥५॥

॥ शब्द ३९ ॥

मानुष जनम सुधारो साधो, धोखे काहे बिगाड़ो हो।
ऐसा समय बहुर नहिं पैहो, जनम जुआ मति हारो हो॥१॥
गुड़ा गुड़ी खियाल जिन भूलो, मूल तत्त लौ लाओ हो।
जब लग घट सौँ परिचे नाहीँ, तब लग कछु नहिँ पाओ हो॥२॥
तीरथ ब्रत और जप तप संजम, या करनी मत भूलो हो।
करम फंद मेँ जुग जुग पड़िहो, फिर फिर जोनि मेँ झूलो हो॥३॥
ना कछु न्हाये ना कछु धोये, ना कछु घंट बजाये हो।
ना कछु नेती ना कछु धोती, ना कछु नाचे गाये हो॥४॥
सिंगी सेल्ही† भभूत औ बटुआ, साँई स्वाँग से न्यारा हो।
कहँ कबीर मुक्ति जो चाहो, मानौ सब्द हमारा हो॥५॥

---

*सुकदेव मुनि जी बारह बरस गर्भ मेँ रहे पैदा होते ही जंगल को माया के भय से भागे। †सिंगी मुँह से बजाने का बाजा और सेल्ही नाम साधुओँ के पहिरने की मेखली का है।

॥ शब्द ४० ॥

जिन के नाम ना है हिये ॥ टेक ॥

क्या होवै गल माला डाले, कहा सुमिरनी लिये ॥१॥
क्या होवै पुस्तक के बाँचे, कहा संख धुन किये ॥२॥
क्या होवै कासी में बसि के, क्या गंगा जल पिये ॥३॥
होवै कहा बरत के राखे, कहा तिलक सिर दिये ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, जाता है जम लिये ॥५॥

॥ शब्द ४१ ॥

साधो पाँड़े निपुन कसाई ॥ टेक ॥

बकरी मारि भेड़ि को धाये, दिल में दरद न आई ॥१॥
करि अस्नान तिलक दै बैठे, विधि सों देबि पुजाई ॥२॥
आतम मारि पलक में बिनसे, रुधिर की नदी बहाई ॥३॥
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये, सभा माहिँ अधिकाई ॥४॥
इन से दिच्छा* सब कोइ माँगे, हँसी आवै मोहिँ भाई ॥५॥
पाप कटन को कथा सुनावैं, करम करावैं नीचा ॥६॥
बूड़त दोऊ परस्पर देखे, गहे बाँहि जम खींचा ॥७॥
गाय बधै सो तुरुक कहावै, यह क्या इन से छोटे ॥८॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, कलि में बाम्हन खोटे ॥९॥

॥ शब्द ४२ ॥

को सिखवै अधमन को ज्ञाना ॥ टेक ॥

साध की संगत कबहुँ न कीन्ही रटत रटत जग जन्म सिराना† ॥१
दया धर्म कबहूँ नहिँ चीन्हा, नहिँ गुरु सब्द समाना ॥२॥
कर्जा करि के बेस्या राखै, साध आय तो नहिँ घर दाना ॥३॥
कहैं कबीर जब जमपुर जैहै, मारहि मार उठै घमसाना ॥४॥

---

*मंत्र। †बीता।

॥ शब्द ४३ ॥

भक्ति सब कोइ करै भरमना ना टरै,
भरम जंजाल दुख दुन्द भारी ॥ १ ॥
काल के जाल मैं जक्त सब फँसि रहा,
आस की डोरि जम देत डारी ॥ २ ॥
ज्ञान सूझै नहीं सब्द बूझै नहीं,
सरन ओटा नहीं गर्ब धारी ॥ ३ ॥
ब्रह्म चीन्है नहीं भर्म पूजत फिरै,
हिये के नैन क्यौं फोरि डारी ॥ ४ ॥
काटि सरजीव धरि थाप निरजीव को,
जीव के हतन अपराध भारी ॥ ५ ॥
जीव का दर्द बेदर्द कसकै नहीं,
जीभ के स्वाद नित जीव मारी ॥ ६ ॥
एक पग ठाढ़ कर जोर बिनती करै,
रच्छ बल जाउँ सरना तिहारी ॥ ७ ॥
वहाँ कछु है नहीं अरज अंधा करै,
कठिन डंडौत नहिं टरत टारी ॥ ८ ॥
यही आकर्म* से नर्क पापी पड़ै,
करम चंडाल की राह न्यारी ॥ ९ ॥
धन्न सौभाग जिन साध संगत करी,
ज्ञान की दृष्टि लीजै बिचारी ॥ १० ॥
सत्त दावा गहौ आपु निर्भय रहौ ।
आपु को चीन्हि लखु नाम सारी ॥ ११ ॥

---

*कुकर्म ।

कहैं कब्बीर तू सत्त पर नजर कर ।
बोलता ब्रह्म सब घट उजारी ॥ १२ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

करो रे मन वा दिन की ततबीर* ॥ टेक ॥
जब जमराजा आनि पड़ैंगे, नेक धरत नहिं धीर ॥१॥
मुँगरिन मारि के प्रान निकासत, नैनन भरि आयो नीर ॥२॥
भौसागर इक अगम पंथ है, नदिया बहत गँभीर ॥३॥
नाव न बेड़ा लोग घनेरा, खेवट है बेपीर ॥४॥
घर तिरिया अरधंगी बैठी, मातु पिता सुत बीर ॥ ५ ॥
माल मुलुक की कौन चलावै, संग न जात सरीर ॥ ६ ॥
लै कै बोरत नरक कुंड मैं, ब्याकुल होत सरीर ॥७॥
कहत कबीर नर अब से चेतो, माफ होय तकसीर ॥८॥

॥ शब्द ४५ ॥

सुख सिंध की सैर का स्वाद तब पाइ है, चाह का
चौतरा भूलि जावै ।
बीज के माहिं ज्यौं वृच्छ बिस्तार, यौं चाह के माहिं
सब रोग आवै ॥१॥
दृढ़ वैराग मैं होय आरूढ़ मन, चाह के चौतरे आग दीजै ।
कहैं कब्बीर यौं होय निरबासना, तत्त सौं रत्त होय
काज कीजै ॥२॥

॥ शब्द ४६ ॥

साधो भाई जीवत ही करो आसा ॥ टेक ॥
जीवत समुझै जीवत बूझै, जीवत मुक्ति निवासा ।
जियत करम की फाँसि न काटी, मुए मुक्ति की आसा ॥१॥

---

*तदबीर ।

तन छूटे जिव मिलन कहतु है, सो सब झूठी आसा ।
अबहुँ मिला सो तबहुँ मिलैगा, नहिं तो जमपुर बासा॥२॥
दूर दूर ढूँढ़ै मन लोभी, मिटै न गर्भ तरासा ।
साध संत की करै न बँदगी, कटै करम की फाँसा ॥३॥
सत्त गहै सतगुरु को चीन्है, सत्त नाम बिस्वासा ।
कहैं कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा ॥४॥

॥ शब्द ४७ ॥

आगे समुझि परैगा भाई ॥टेक॥
यहाँ अहार उद्र भर खायो, वहु त्रिधि मास बढ़ाई ॥१॥
जीव जन्तु रस मार खातु हो, तनिक दरद नहिँ आई ॥२॥
यहँ तो परधन लूटि खातु हो, गल बिच फाँसि लगाई ॥३॥
तिन के पीछे तीन पियादा, छिन छिन खबर लगाई ॥४॥
साध संत की निंदा कीन्ही, आपन जनम नसाई ॥५॥
परग परग पर काँटा धसिहै, यह फल आगे आई ॥६॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, दुनियाँ है दुचिताई ॥७॥
साँच कहै तो मारा जावै, झूठे जग पतियाई ॥८॥

॥ शब्द ४८ ॥

रहना नहिँ देस बिराना है ॥ टेक ॥
यह संसार कागद की पुड़िया, बूंद पड़े घुल जाना है ॥१॥
यह संसार काँट की बाड़ी, उलझ पुलझ मरि जाना है ॥२॥
यह संसार झाड़ औ झाँखर, आग लगे बरि जाना है ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है ॥४॥

॥ शब्द ४६ ॥

बागों ना जा रे ना जा तेरे काया में गुलजार ॥टेक॥
करनी क्यारी बोइ के रहनी करु रखवार ।
दुर्मति काग उड़ाइ के देखै अजब बहार ॥१॥
मन माली परबोधिये करि संजम की बार ।
दया पौद सूखै नहीं छिमा सींच जल ढार ॥२॥
गुल औ चमन के बीच में फूला अजब गुलाब ।
मुक्ति कली सतमाल की पहिरु गूँथि गल हार ॥३॥
अष्ट कमल से ऊपजै लीला अगम अपार ।
कहैं कबीर चित चेत के आवागवन निवार ॥४॥

॥ शब्द ५० ॥

सुमिरन बिन गोता खावोगे ॥टेक॥
मुट्ठी बाँधे गर्भ से आये, हाथ पसारे जावोगे ॥१॥
जैसे मोती झरत ओस के, बेर भये झरि जावोगे ॥२॥
जैसे हाट लगावै हटवा,* सौदा बिन पछितावोगे ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सौदा लेकर जावोगे ॥४॥

॥ शब्द ५१ ॥

अरे मन समुझ के लादु लदनियाँ ॥टेक॥
काहेक टटुवा काहेक पाखर, काहेक भरी गौनियाँ ॥१॥
मन कै टटुवा सुरति कै पाखर, भरीं पुन्न पाप गौनियाँ ॥२॥
घर के लोग जगाती लागे, छीन लेयँ कर धनियाँ ॥३॥
सौदा करु तो यहीं करु भाई, आगे हाट न बनियाँ ॥४॥

---

*दुकानदार ।

पानी पी तो यहीं पी भाई, आगे देस निपनियाँ ॥५॥
कह कबीर सुनो भाइ साधो, सत्त नाम का बनियाँ ॥६॥

॥ शब्द ५२ ॥

दिवाने मन भजन बिना दुख पैहै ॥टेक॥
पहिला जनम भूत का पैहौ, सात जनम पछितैहौ।
काँटे पर ले पानी पैहौ, प्यासन ही मरि जैहै ॥ १ ॥
दूजा जनम सुवा का पैहौ, बाग बसेरा लेइहौ।
टूटे पंख बाज मँडराने, अधफड़ प्रान गँवैहै ॥२॥
बाजीगर के बानर होइहै, लकड़िन नाच नचैहै।
ऊँच नीच से हाथ पसरिहै, माँगे भीख न पैहै ॥३॥
तेली के घर बैला होइहौ, आँखिन ढाँप ढँपै हौ।
कोस पचास घरै में चलिहै, बाहर होन न पैहै ॥४॥
पँचवाँ जनम ऊँट के पैहौ, बिन तौले बोझ लदैहै।
बैठे से तो उठै न पैहै, घुरच घुरच मरि जैहौ ॥५॥
धोबी घर के गदहा होइहौ, कटी घास ना पैहौ।
लादी लादि आपु चढ़ि बैठे, लै घाटे पहुँचैहौ ॥६॥
पंछी माँ तो कौवा होइहै, करर करर गुहरैहै।
उड़ि के जाइ मैला पर बैठौ, गहिरे चौंच लगैहै ॥७॥
सत्तनाम की टेर न करिहै, मनहीं मन पछितैहै।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, नरक निसानी पैहै ॥८॥

॥ शब्द ५३ ॥

माल जिन्हौं ने जमा किया, सौदा परि हारे* जाते हैं ॥टेक॥
ऊँचा नीचा महल बनाया, जा बैठे चौबारे हैं।
सुबह तलक तो जागे रहना, साम पुकारे जाते हैं ॥१॥

*छोड़ना।

जग के रस्ते मत चल प्यारे, ठग या पार घनेरे हैं।
इस नगरी के बीच मुसाफिर, अक्सर मारे जाते हैं ॥२॥
भाई बंध औ कुटुंब कबीला, सब ठग ठग के खाते हैं।
आया जम जब दिया नगारा, साफ अलग हो जाते हैं ॥३॥
जोरू कौन खसम है किसका, कौन किसी के नाते हैं।
कहैं कबीर जो बँदगी गाफिल, काल उन्हीं को खाते हैं॥४॥

॥ शब्द ५४ ॥

साधो यह तन ठाठ तँबूरे का ॥ टेक ॥
ऐंचत तार मरोरत खूँटी, निकसत राग हजूरे का ॥१॥
टूटे तार बिखरि गइ खूँटी, हो गया धूरम धूरे का ॥२॥
या देही का गर्ब न कीजै, उड़ि गया हंस तँबूरे का ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, अगम पंथ कोइ सूरे का ॥४॥

॥ शब्द ५५ ॥

नैहर मैं दाग लगाय आइ चुनरी ॥ टेक ॥
ऊ रँगरेजवा कै मरम न जानै,
नहिं मिलै धोबिया कौन करै उजरी ॥ १ ॥
तन कै कूँड़ी ज्ञान कै सौंदन,
साबुन महँग बिकाय या नगरी ॥ २ ॥
पहिरि ओढ़ि के चली ससुररिया,
गौंवाँ के लोग कहैं बड़ी फुहरी ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो,
बिन सतगुरु कबहूँ नहिं सुधरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

अरे इन दूहुन राह न पाई ॥ टेक ॥
हिंदू अपनी करै बड़ाई गागर छुवन न देई ।
बेस्या के पायन तर सोवै यह देखो हिंदुआई ॥ १ ॥
मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी मुर्गा खाई ।
खाला केरी बेटी ब्याहै घरहिँ मेँ करै सगाई ॥ २ ॥
बाहर से इक मुर्दा लाये धोय धाय चढ़वाई ।
सब सखियाँ मिलि जैँवन बैठीं घर भर करै बड़ाई ॥३॥
हिंदुन की हिंदुवाई देखी तुरकन की तुरकाई ।
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो कौन राह है जाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

सिपाही मन दूर खेलन मत जाव ॥ टेक ॥
दूर खेलन से मनुआँ दुखित होय, गगन मँडल मठ छाव ।१।
येहि पार गंगा वोहि पार जमुना, बीच सरसुती न्हाव॥२॥
पाँच को मारि पचीस को बस करि, तीन को पकरि मँगाव ३
कहैँ कबीरा धरमदास से, सब्द मेँ सुरत लगाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

डर लागै और हाँसी आवै, अजब जमाना आया रे ॥टेक॥
धन दौलत लै माल खजाना, बेस्या नाच नचाया रे ।
मुट्ठी अन्न साध कोइ माँगै, कहैँ नाज नहिँ आया रे ॥१॥
कथा होय तहँ स्रोता सोवैँ, बक्ता मूड़ पचाया रे ॥
होय जहाँ कहिँ स्वाँग तमासा, तनिक न नींद सताया रे॥२

भंग तमाखू सुलफा गाँजा, सूखा खूब उड़ाया रे ।
गुरु चरनामृत नेम न धारे, मधुवा* चाखन आया रे ॥३॥
उलटी चलन चली दुनियाँ मैं, ता तैं जिय घबराया रे ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, फिर पाछे पछिताया रे ॥४॥

॥ शब्द ५९ ॥

अवधू भजन भेद है न्यारा ॥ टेक ॥
क्या गाये क्या लिखि बतलाये, क्या भर्मे संसारा ।
क्या संध्या तर्पन के कीन्हे, जो नहिं तत्त बिचारा ॥१॥
मूड़ मुड़ाये सिर जटा रखाये, क्या तन लाये छारा† ।
क्या पूजा पाहन की कीन्हे, क्या फल किये अहारा ॥२॥
बिन परिचे साहेब होइ बैठे, बिषय करै ब्यौपारा ॥
ज्ञान ध्यान का मर्म न जानै, बाद‡ करै हंकारा ॥३॥
अगम अथाह महा अति गहिरा, बीज न खेत निवारा§ ।
महा सो ध्यान मगन ह्वै बैठे, काट करम की छारा§ ॥४॥
जिनके सदा अहार अंतर मैं, केवल तत्त बिचारा ।
कहैं कबीर सुनो हो गोरख, तारौं सहित परिवारा ॥५॥

॥ शब्द ६० ॥

अवधू अच्छरहूँ सौं न्यारा ॥ टेक ॥
जो तुम पवना गगन चढ़ावो, करो गुफा मैं बासा ।
गगना पवना दोनौं बिनसैं, कहँ गयो जोग तुम्हारा ॥१॥

---

*शराब । †राख । ‡झूठा । §इन डिंभी भेषों ने भजन भेद रूपी बीज को जो अगम अथाह और महा गहिरा है अपने हृदय-रूपी खेत मैं नहीं बोया; जिन सच्चे भक्तों ने उसे महा अर्थात मथा वह कर्म की मैल को काट कर ध्यान मैं मगन हो बैठे ।

गगना मद्धे जोती झलकै, पानी मद्धे तारा ।
घटि गे नीर बिनसि गे तारा, निकर गयो केहि द्वारा ॥२॥
मेरुडंड पर डारि दुलैची,* जोगिन तारी लाया ।
सोइ सुमेर पर खाक उड़ानी, कच्चा जोग कमाया ॥३॥
इँगला बिनसै पिँगला बिनसै, बिनसै सुखमनि नाड़ी ।
जब उनमुनि की तारी टूटै, तब कहँ रही तुम्हारी ॥४॥
अद्वैत बैराग कठिन है भाई, अटके मुनिवर जोगी ।
अच्छर लौं की गम्म बतावै, सो है मुक्ति बिरोगी ॥५॥
कह अरु अकह दोऊ तेँ न्यारा, सत्त असत्त के पारा ।
कहैँ कबीर ताहि लखि जोगी, उतरि जाव भव पारा ॥६॥

॥ शब्द ६१ ॥

अब से खबरदार रहो भाई ॥ टेक ॥
सतगुरु दीन्हा माल खजाना, राखो जुगत लगाई ।
पाव रती घटने नहिँ पावै, दिन दिन बढ़ै सवाई ॥१॥
छिमा सील की अलफी† पहिनै, जुगति लँगोट लगाई ।
दया की टोपी सिर पर दैके, और अधिक बनि आई ॥२॥
बस्तु पाय गाफिल मत रहना, निसि दिन करो कमाई ।
घट के भीतर चोर लगतु हैँ, बैठे घात लगाई ॥ ३ ॥
तन बंदूक सुमति का सिँगरा, प्रीति का गज ठहकाई ।
सुरति पलीता हर दम सुलगै, कस पर राखु चढ़ाई ॥४॥

*ऊनी आसन । †साधुओं का बिना बँहोली का वस्त्र ।

बाहर वाला खड़ा सिपाही, ज्ञान गम्म अधिकाई ।
साहेब कबीर आदि के अदली, हर दम लेत जगाई ॥५॥

॥ शब्द ६२ ॥

साधो देखो जग बौराना ।
साँचि कहो तौ मारन धावै, झूँठे जग पतियाना ॥टेक॥
हिन्दू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना ।
आपस में दोउ लड़े मरतु हैं, मरम कोई नहिं जाना ॥१॥
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी, प्रात करैं असनाना ।
आतम छोड़ि पषानै पूजैं, तिन का थोथा ज्ञाना ॥२॥
आसन मारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना ।
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ बर्त भुलाना ॥ ३ ॥
माला पहिरे टोपी पहिरे, छाप तिलक अनुमाना ।
साखी सब्दै गावत भूले, आतम खबर न जाना ॥ ४ ॥
घर घर मंत्र जो देत फिरत हैं, माया के अभिमाना ।
गुरुवा सहित सिष्य सब बूड़े, अंतकाल पछिताना ॥५॥
बहुतक देखे पीर औलिया, पढ़ैं किताब कुराना ।
करैं मुरीद कबर बतलावैं, उनहूँ खुदा न जाना ॥ ६ ॥
हिन्दू की दया मेहर तुरकन की, दोनों घर से भागी ।
वह करैं जिबह वो झटका मारैं, आग दोऊ घर लागी ॥७॥
या बिधि हँसत चलत हैं हमको, आप कहावैं स्याना ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, इन में कौन दिवाना ॥८॥

॥ शब्द ६३ ॥

मोरे जियरा बड़ा अँदेसवा, मुसाफिर जैहो कौनी ओर ॥टेक
मोह का सहर कहर नर नारी, दुइ फाटक घनघोर ।
कुमती नायक फाटक रोके, परिहो कठिन झिँझोर ॥१॥
संसय नदी अगाड़ी बहती, बिषम धार जल जोर ।
क्या मनुवाँ तुम गाफिल सोवौ, इहवाँ मोर औ तोर ॥२॥
निसि दिन प्रीति करो साहिब से, नाहिन कठिन कठोर ।
काम दिवान क्रोध है राजा, बसैं पचीसो चोर ॥ ३ ॥
सत्त पुरुष इक बसैं पछिम दिसि, तासोँ करो निहोर ।
आवै दरद राह तोहि लावै, तब पैहो निज ओर ॥ ४ ॥
उलटि पाछिलो पैँड़ा पकड़ो, पसरा मना बटोर ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, तब पैहो निज ठौर ॥५॥

॥ शब्द ६४ ॥

क्या माँगौं कछु थिर न रहाई, देखत नैन चल्यो जग जाई।१
इक लख पूत सवालख नाती, जा रावन घर दिया न बाती २
लंका सा कोट समुद्र सी खाई, जा रावन की खबर न पाई ३
सोने के महल रूपे के छाजा, छोड़ि चले नगरी के राजा ॥४॥
कोइ करै महल कोई करै टाटी, उड़ि जाय हंस पड़ी रहै माटी
आवत संग न जात सँगाती, कहा भये दल बाँधे हाथी ॥६॥
कहैं कबीर अंत की बारी, हाथ झारि ज्योँ चला जुवारी ॥७॥

॥ शब्द ६५ ॥

पी ले प्याला हो मतवाला,
प्याला नाम अमी रस का रे ॥ टेक ॥

बालपना सब खेलि गँवाया,
तरुन भया नारी बस का रे ॥ १ ॥

बिरध भया कफ बाय ने घेरा,
खाट पड़ा न जाय खिसका रे ॥ २ ॥

नाभि कँवल बिच है कस्तूरी,
जैसे मिरग फिरै बन का रे ॥ ३ ॥

बिन सतगुरु इतना दुख पाया,
बैद मिला नहिं इस तन का रे ॥ ४ ॥

मातु पिता बंधू सुत तिरिया,
संग नहीं कोइ जाय सका रे ॥ ५ ॥

जब लग जीवै गुरु गुन गा ले,
धन जोबन है दिन दस का रे ॥ ६ ॥

चौरासी जो उबरा चाहै,
छोड़ु कामिनी का चसका रे ॥ ७ ॥

कहैं कबीर सुनो भाइ साधो,
नख सिख पूर रहा बिष का रे ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६६ ॥

लखै रे कोइ बिरला पद निरबान ॥ टेक ॥

तीन लोक मैं यह जम राजा,
चौथे लोक मैं नाम निसान ॥ १ ॥

याहि लखत इन्द्रादिक थकि गे,
ब्रह्मा थकि गे पढ़त पुरान ॥ २ ॥

गोरख दत्त बशिष्ठ ब्यास मुनि,
सिम्भू थकि गे धरि धरि ध्यान ॥३॥
कहैं कबीर लखै कोइ बिरला,
जिन पाया सतगुरु को ज्ञान ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

जारौं मैं या जग की चतुराई ॥ टेक ॥
साँईं को नाम न कबहूँ सुमिरै, जिन यह जुगति बताई ॥१॥
जोरत दाम काम अपने को, हम खैहैं लरिका बिलसाई ॥२॥
सो धन चोर मूसि लै जावैं, रहा सहा लै जाय जमाई ॥३॥
यह माया जैसे कलवारिन, मद्य पियाय राखै बौराई ॥४॥
इक तो पड़े धूरि में लोटैं, एक कहैं चोखी दे भाई ॥५॥
सुर नर मुनि माया छलि मारे, पीर पयम्बर को धरि खाई॥६॥
कोइ इक भाग बचे सतसंगति, हाथ मलै तिनको पछिताई॥७॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, लै फाँसी हमहूँ को आई ॥८॥
गुरु की दया साध की संगति, बचिगे अभय निसान बजाई॥९

॥ शब्द ६८ ॥

जियरा जावगे हम जानी ॥ टेक ॥
पाँच तत्त को बनो है पींजरा, जा में बस्तु बिरानी ।
आवत जावत कोइ न देख्यो, डूबि गयो बिनु पानी ॥१॥
राजा जैहैं रानी जैहैं, और जैहैं अभिमानी ।
जोग करंते जोगी जैहैं, कथा सुनंते ज्ञानी ॥ २ ॥

पाप पुञ्ज की हाट लगी है, धरम दंड दरबानी ।
पाँच सखी मिलि देखन आईं, एक से एक सियानी ॥३॥
चंदो जैहैं सुरजो जैहैं, जैहैं पवन औ पानी ।
कहैं कबीर इक भक्त न जैहैं, जिनकी मति ठहरानी ॥४॥

॥ शब्द ६६ ॥

मन तू क्योँ भूला रे भाई । तेरी सुधि बुधि कहाँ हिराई १
जैसे पंछी रैन बसेरा, बसै वृच्छ मेँ आई ।
भोर भये सब आपु आपु को, जहाँ तहाँ उड़ि जाई ॥२॥
सुपने में तोहि राज मिल्यो है, हाकिम हुकम दुहाई ।
जागि पखो तब लाव न लसकर, पलक खुले सुधि पाई ३
मातु पिता बंधू सुत तिरिया, ना कोइ सगो सँगाई ।
यह तो सब स्वारथ के संगी, झूठी लोक बड़ाई ॥४॥
सागर माहीँ लहर उठतु हैं, गनिता गनी न जाई ।
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, दरिया लहर समाई ॥५॥

॥ शब्द ७० ॥

मानत नहिँ मन मोरा साधो, मानत नहिँ मन मोरा रे । टेक
बार बार मैं कहि समझावौं, जग मैं जीवन थोरा रे ॥१॥
या काया को गर्ब न कीजै, क्या साँवर क्या गोरा रे ॥२॥
बिना भक्ति तन काम न आवै, कोटि सुगंधि चभोरा रे ॥३॥
या माया जनि देखि रे भूलौ, क्या हाथी क्या घोड़ा रे ॥४॥
जोरि जोरि धन बहुत बिगूचे, लाखन कोटि करोरा रे ॥५॥
दुबिधा दुरमति औ चतुराई, जनम गयो नर बौरा रे ॥६॥

अजहूँ आनि मिलौ सत संगति, सतगुरु मान निहोरा रे॥७॥
लेत उठाइ परत भुइँ गिरि गिरि, ज्यों बालक बिन कोराँ* रे॥८
कहैं कबीर चरन चित राखो, ज्यों सूई बिच डोरा रे॥९॥

॥ शब्द ७१ ॥

अवधू माया तजी न जाई ॥ टेक ॥
गृह को तजि के बस्तर बाँधा, बस्तर तजि के फेरी।
लरिका तजि के चेला कीन्हा, तहुँ मति माया घेरी ॥१॥
जैसे बेल बाग में अरुझी, माहिं रही अरुझाई।
छोरे से वह छूटै नाहीं, कोटिन करै उपाई ॥२॥
काम तजे तें क्रोध न जाई, क्रोध तजे तें लोभा।
लोभ तजे अहंकार न जाई, मान बड़ाई सोभा ॥३॥
मन बैरागी माया त्यागी, सब्द में सुरत समाई।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, यह गम बिरले पाई ॥४॥

॥ शब्द ७२ ॥

नाम भजा सोइ जीता जग में, नाम भजा सोइ जीता रे॥टेक
हाथ सुमिरिनी पेट कतरनी, पढ़ै भागवत गीता रे।
हिरदय सुध किया नहिं बौरे, कहत सुनत दिन बीता रे॥१॥
आन देव की पुजा कीन्ही, गुरु से रहा अमीता† रे।
धन जोबन तेरा यहीं रहैगा, अंत समय चलि रीता‡ रे ॥२॥
बावरिया ने बावर डारी, फंद जाल सब कीता रे।
कहत कबीर काल आइ खैहै, जैसे मृग को चीता रे ॥३॥

---

*गोद। †अजान। ‡ खाली।

॥ शब्द ७३ ॥

दुलहिनी अँगिया काहे न धोवाई ॥ टेक ॥

बालपने की मैली अँगिया, बिषय दाग परि जाई ॥ १ ॥
बिन धोये पिय रीझत नाहीं, सेज से देत गिराई ॥ २ ॥
सुमिरन ध्यान के साबुन करि ले, सत्तनाम दरियाई ॥३॥
दुबिधा के बँद खोल बहुरिया,* मन के मैल धोवाई ॥४॥
चेत करो तीनौं पन बीते, अब तो गवन नगिचाई ॥५॥
चालनहार द्वार हैं ठाढ़े, अब काहे पछिताई ॥६॥
कहत कबीर सुनो री बहुरिया, चित अंजन दे आई ॥७॥

॥ शब्द ७४ ॥

नाम सुमिरि पछितायगा ॥ टेक ॥

पापी जियरा लोभ करतु है, आज काल उठि जायगा ॥१
लालच लागी जनम गँवाया, माया भरम भुलायगा ॥२॥
धन जोबन का गर्ब न कीजै, कागद ज्यौं गलि जायगा ॥३॥
जब जम आय केस† गहि पटकै, ता दिन कछु न बसायगा ४
सुमिरन भजन दया नहिं कीन्ही, तो मुखचोटा‡ खायगा ॥५॥
धर्मराय जब लेखा माँगै, क्या मुख लेके जायगा ॥ ६ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, साध संग तरि जायगा ॥७॥

॥ शब्द ७५ ॥

अभागा तुम ने नाम न जाना ॥ टेक ॥

करिके कौल उहाँ से आयो, इहवाँ भरम भुलाना ।
सत्त नाम बिसराय दियो है, मोह मया लिपटाना ॥१॥

---

*दुलहिन । † बाल । ‡चोट ।

मात पिता सुत बंधु कुटुम्बी, औ बहु माल खजाना।
बाँह पकरि जब जम लै चलिहै, सब ही होय बिगाना ।२॥
लाल फूल सेमर लखे, सुगना लिपटाना।
मारत चुंच रुई उधियानी, फिर पाछे पछिताना॥ ३ ॥
मानुस चोला पाइ कै, का करै गुमाना।
जस पानी कै बुलबुला, छिन माहिँ बिलाना ॥ ४ ॥
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो, देखो जग बैाराना।
अब के गये बहुरि नहिँ आवौ, लहौ जो सत परवाना ॥५॥

॥ शब्द ७६ ॥

मोरी चुनरी मेँ परि गयो दाग पिया ॥ टेक ॥
पाँच तत्त की बनी चुनरिया, सोरह सै बँद लागे जिया ॥१॥
यह चुनरी मोरे मैके तेँ आई, ससुरे मेँ मनुवा खोय दिया ॥२॥
मलि मलि धोई दाग न छूटे, ज्ञान को साबुन लाय पिया॥३॥
कहैँ कबीर दाग तब छुटिहै, जब साहेब अपनाय लिया ॥४

॥ शब्द ७७ ॥

गुरु से लगन कठिन है भाई।
लगन लगे बिन काज न सरिहै, जीव प्रलय होइ जाई॥टेक॥
जैसे पपिहा प्यासा बुंद का, पिया पिया रटि लाई।
प्यासे प्रान तलफ दिन राती, और नीर ना भाई ॥१॥
जैसे मिरगा सब्द सनेही, सब्द सुनन को जाई।
सब्द सुनै औ प्रान दान दे, तनिको नाहिँ डेराई ॥२॥

जैसे सती चढ़ी सत ऊपर, पिय की राह मन भाई ।
पावक* देख डरे वह नाहीं, हँसत बैठ सरा* माईं ॥ ३ ॥
दो दल सन्मुख आन जुड़े हैं, सूरा लेत लड़ाई ।
टूक टूक होइ गिरे धरनि पर, खेत छोड़ि नहिं जाई ॥४॥
छोड़ो तन अपने की आसा, निर्भय ह्वै गुन गाई ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, नाहिं तो जनम नसाई ॥५॥

॥ शब्द ७८ ॥

मेरा तेरा मनुआँ कैसे इक होइ रे ॥ टेक ॥
मैं कहता हौं आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी ।
मैं कहता सुरझावनहारी, तू राख्यो उरझाइ रे ॥ १ ॥
मैं कहता तू जागत रहियो, तू रहता है सोइ रे ।
मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाता है मोहि रे ॥ २ ॥
जुगन जुगन समुझावत हारा, कही न मानत कोइ रे ।
तू तो रंडी फिरै बिहंडी, सब धन डारे खोइ रे ॥ ३ ॥
सतगुरु धारा निर्मल वाहै, वा मैं काया धोइ रे ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, तब ही वैसा होइ रे ॥४॥

॥ शब्द ७६ ॥

अवधू अंध कूप अँधियारा ॥ टेक ॥
या घट भीतर सात समुंदर, याहि मैं नद्दी नारा ॥१॥
या घट भीतर कासी द्वारिका, याहि मैं ठाकुरद्वारा ॥२॥

---

*आग ।

या घट भीतर चंद्र सूर है, याहि मेँ नौ लख तारा ॥३॥
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो, याहि मेँ सत करतारा ॥४।

॥ शब्द ८० ॥

जाग री मेरी सुरत सोहागिन जाग री ॥ टेक ॥
का तुम सोवत मोह नींद मेँ, उठि के भजनियाँ मेँ लाग री ॥१
चित से सब्द सुनो सरवन दै, उठत मधुर धुन राग री ॥२
दोउ कर जोरि सीस चरनन दै, भक्ति अचल बर माँग री ॥३
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, जक्त पीठ दै भाग री ॥४

॥ शब्द ८१ ॥

भजो हो सतगुरु नाम उरी* ॥ टेक ॥
जप तप साधन कछु नहिँ लागत, खर्चत ना गठरी ॥१॥
संपति संतति सुख के कारन, या सौँ भूलि परी ॥ २ ॥
जेहि मुख सत्त नाम नहिँ निकसत, सो मुख धूरि परी ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु चरनन सुधरी ॥४॥

॥ शब्द ८२ ॥

अवधू भूले को घर लावै, सो जन हम को भावै ॥टेक॥
घर मेँ जोग भोग घर ही मेँ, घर तजि बन नहिँ जावै ।
बन के गये कलपना उपजै, तब धौँ कहाँ समावै ॥ १ ॥
घर मेँ जुक्ति मुक्ति घर ही मेँ, जो गुरु अलख लखावै ।
सहज सुन्न मेँ रहै समाना, सहज समाधि लगावै ॥२॥

---

*हृदय से ।

उनमुनि रहै ब्रह्म को चीन्है, परम तत्त को ध्यावै ।
सुरत निरत सोँ मेला करिके, अनहद नाद बजावै ॥३॥
घर मेँ बसत बस्तु भी घर है, घर ही बस्तु मिलावै ।
कहैँ कबीर सुनो हो अवधू, ज्योँ का त्योँ ठहरावै ॥४॥

॥ शब्द ८३ ॥

को जानै बात पराये मन की ॥ टेक ॥
रात अँधेरी चोरा डाँटै, आस लगाये पराये धन की ॥१॥
आँधर मिरग बनै बन डोलै, लागो बान खबर ना तन की ॥२
महा मोह की नींद परी है, चूनर लेगा सुहागिल तन की ॥३
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु जानै हैँ पराये मन की ॥४

॥ शब्द ८४ ॥

समुझ नर मूढ़ बिगारी रे ॥ टेक ॥
आया लाहा कारने तैँ, क्योँ पूँजी हारी रे ॥१॥
गर्भ बास बिनती करी, सो तैँ आन बिसारी रे ॥२॥
माया देख तू भूलिया, और सुन्दर नारी रे ॥३॥
बड़े साह आगे गये, ओछा ब्यौपारी रे ॥४॥
लौंग सुपारी छाँड़ि के, क्योँ लादी खारी* रे ॥५॥
तीरथ बरत मेँ भटकता, नहिँ तत्त बिचारी रे ॥६॥
आन देव को पूजता, तेरी होगी ख्वारी रे ॥७॥

---

*नोन ।

क्या लाया क्या लै चला, करि पल्ला भारी रे ॥८॥
कहैं कबीर जग यों चला, जस हारा ज्वारी रे ॥९॥

॥ शब्द ८५ ॥

हिलि मिलि मंगल गाओ मोरी सजनी, भई प्रभात*
बीति गई रजनी† ॥१॥
नाचे कूदे क्या होय भैना‡, सतगुरु सब्द समुझ ले सैना ॥२
स्वाँसा तारी सुरत सँग लाओ, तब हंसा अपना घर पाओ॥३
अधर निरंतर फूलि फुलवारी, मनसा मारि करो रखवारी॥४
अमी सींच अमृत फल लागा, पावैगा कोइ संत सुभागा॥५
कहैं कबीर गूँगे की सैना, अमी महा रस चाखै नैना ॥६

॥ शब्द ८६ ॥

सचमुच खेल ले मैदाना ॥ टेक ॥

सब्द गुरू को दृढ़ करि बाँधो, सुरति की खींच कमाना।
कड़ाबीन करु मन को बस करि, मारो मोह निदाना॥१॥
फाका फरी ज्ञान का गदका, बाँधि मरहटी बाना।
सनमुख जाय लड़ै जो कोई, वही सूर मरदाना ॥२॥
रंजक ध्यान ज्ञान की पट्टी, प्रेम बरूद खजाना।
भरि भरि तोप भड़ाभड़ मारो, लूटो मुलुक बिगाना ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, प्रेम में हो मस्ताना।
अमर लोक में डेरा दे के, सतगुरु हना§ निसाना ॥४॥

---

*सुबह। †रात। ‡बहिन। §मारा।

॥ शब्द ८७ ॥

भजु मन नाम उमिर रहि थोड़ी ॥ टेक ॥

चारि जने मिलि लेन को आये, लिये काठ की घोड़ी ।
जोरि लकड़िया फूँक अस दीन्हो, जस बृंदावन की होरी ॥१॥
सीसमहल के दस दरवाजे, आन काल ने घेरी ।
आगर तोड़ी नागर तोड़ी, निकसे प्रान खुपड़िया फोड़ी ॥२॥
पाटी पकरि वाकी माता रोवै, बहियाँ पकरि सग भाई ।
लट छिटकाये तिरिया रोवै, बिछुरत है मोरी हंस कीजोड़ी३
सत्तनाम का सुमिरन करि ले, बाँध गाँठ तू पोढ़ी ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, जिन जोड़ी तिन तोड़ी ॥४॥

॥ शब्द ८८ ॥

अरे मन मूरख खेतीवान, जतन बिन मिरगन खेत उजाड़ा ॥ टेक ॥

पाँच मिरग पच्चीस मिरगनी, ता मेँ एक सिँगारा* ।
अपने अपने रस के भोगी, चरत फिरैँ न्यारा न्यारा ॥१॥
कामक्रोध दुइ मुख्य मिरग हैँ, नित उठि चरत सबारा† ।
मारे मरैँ टरैँ नहिँ टारे, बिड़वत नाहिँ बिडारा‡ ॥२॥
अति परचंड महा दुख दारुन, वेद सास्त्र पचि हारा ।
प्रेम बान लै चढ़ेव पारधी,§ भाव भक्ति करि मारा ॥३॥
सत की बेड़ धर्म‖ की खाईं, गुरु का सब्द रखारा¶ ।
कहैँ कबीर चरन नहिँ पावैँ, अब की बार सम्हारा ॥४॥

*सींग वाला । †सवेरे । ‡ हाँकने से । §शिकारी । ‖ चारदीवारी । ¶रखवारा ।

॥ शब्द ८९ ॥

ना जानैं तेरा साहेब कैसा है ॥ टेक ॥

मसजिद भीतर मुल्ला पुकारै, क्या साहेब तेरा बहिरा है।
चिउँटी के पग नेवर बाजै, सो भी साहेब सुनता है ॥१॥
पंडित होय के आसन मारै, लम्बी माला जपता है।
अंतर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहेब लखता है ॥२॥
ऊँचा नीचा महल बनाया, गहिरी नैंव जमाता है।
चलने का मनसूबा नाहीं, रहने को मन करता है ॥३॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ि जमीं में धरता है।
जिस लहना है सो लै जैहै, पापी बहि बहि मरता है ॥४॥
सतवन्ती को गजी मिलै नहिं, बिस्या पहिरै खासा है।
जेहि घर साधू भीख न पावै, भडुवा खात बतासा है ॥५॥
हीरा पाय परख नहिं जानै, कौड़ी परखन करता है।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, हरि जैसे को तैसा है ॥६॥

॥ शब्द ९० ॥

मुखड़ा क्या देखै दर्पन मैं, तेरे दया धरम नहिं तन मैं ॥टेक॥
आम की डार कोइलिया बोलै, सुवना बोलै बन मैं।
घरबारी तो घर मैं राजी, फक्कड़ राजी बन मैं ॥१॥
ऐंठी धोती पाग लपेटी, तेल चुआ जुलफन मैं।
गली गली की सखी रिझाईं, दाग लगाया तन मैं ॥२॥
पाथर की इक नाव बनाई, उतरा चाहै छिन मैं।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, वे क्या चढ़ैंगे रन मैं ॥३॥

॥ शब्द ६१ ॥

करम गति टारे नाहिं टरी ॥ टेक ॥
मुनि वसिष्ट से पंडित ज्ञानी, सोध के लगन धरी ।
सीता हरन मरन दसरथ के, बन में विपति परी* ॥१॥
कहँ वह फंद कहाँ वह पारधि,† कहँ वह मिरग चरी* ।
सीता के हरि लेगयो रावन, सोने की लंक जरी* ॥ २ ॥
नीच हाथ हरिचन्द‡ बिकाने, बलि§ पाताल धरी ।
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग, गिरगिट जोनि परी‖ ॥३॥

*रामचंद्र जी का बनोबास, उनके पिता दसरथ का उनके वियोग में प्रान तजना, मारीच के मृगा बना कर रावन का सीताजी को चुरा ले जाना और फिर रामचंद्र का रावन को मारना और लंका को जलाना यह कथा प्रायः सब लोग जानते हैं।

†शिकारी।

‡राजा हरिश्चंद्र भारी दानी और सत्यवादी थे जिन्हों ने विश्वामित्रजी को अपना सब राज पाट यज्ञ की दक्षिना में दे दिया इस पर मुनि जी ने तीन भार सोना दान-प्रतिष्ठा का अपना और निकाला। राजा हरिश्चन्द्र ने उस के लिये काशी में जाकर अपने को एक डोमड़े के हाथ और अपनी स्त्री और पुत्र को एक ब्राह्मन के हाथ बेच कर मुनि जी को संतुष्ट किया।

§राजा बलि बड़े प्रतापी और दानी थे जिन के द्वारे पर आप भगवान बौना का भेष धर कर तीन परग पृथ्वी माँगने गये जब राजा बलि ने संकल्प कर दिया तब भगवान ने बैराट रूप धारन करके एक परग में स्वर्गादिक और एक में सारी पृथ्वी नाप ली और कहा कि अब बाकी तीसरा परग देव। राजा ने अपना शरीर भेंट किया जिसे तीसरे परग से नाप कर भगवान ने उन्हें अमर करके पाताल का राज दिया।

‖राजा नृग रोज एक लाख गऊ दान दिया करते थे। एक बार कोई गऊ जो पहिले दिन दान हो चुकी थी नई गउवों में आ मिली और राजा ने उसे अनजान में दूसरे ब्राह्मन को संकल्प कर दिया। इस पर पहिले और दूसरे दिन के दान पाने वाले ब्राह्मनों में झगड़ा मचा और दोनों राजा के पास न्याव को गये। दोनों वही गऊ लेने पर हठ करते थे इस लिये राजा की बुद्धि चकराई

पाँडव जिन के आपु सारथी, तिन पर बिपति परी* ।
दुरजोधन को गर्ब घटायो, जदु कुल नास करी* ॥ ४ ॥
राहु केतु औ भानु चन्द्रमा, बिधि संजोग परी ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, होनी होके रही ॥ ५ ॥

भेद बानी

॥ शब्द १ ॥

साधो एक आपु जग माहीं ।
दूजा करम भरम है किर्तम, ज्यों दर्पन में छाहीं ॥टेक॥
जल तरंग जिमि जल तें उपजै, फिर जल माहिं रहाई ।
काया झाँईं पाँच तत्त की, बिनसे कहाँ समाई ॥ १ ॥
या बिधि सदा देह गति सब की, या बिधि मनहिं बिचारो ।
आया होय न्याव करि न्यारो, परम तत्व निरवारो ॥२॥
सहजै रहै समाय सहज में, ना कहुँ आय न जावै ।
धरै न ध्यान करै नहिं जप तप, राम रहीम न गावै ॥३॥
तीरथ बर्त सकल परित्यागै, सुन्न डोरि नहिँ लावै ।
यह धोखा जब समुझि परै तब, पूजै काहि पुजावै ॥४॥

और सोच में पड़ कर दोनों की दलील पर सिर हिला देते । इस पर उन ब्राह्मनों ने सराप दिया कि तुम गिरगिट की तरह सिर हिलाते हो वही बन जावगे । इस लिये राजा नृग मरने पर गिरगिट की जोनि पाकर एक अंधे कुए में पड़े हुए थे जब कृश्नावतार हुआ तब श्रीकृश्न ने उनको तारा ।

*पांडवों के रथ पर श्रीकृश्न महाभारत की लड़ाई में आप सारथी बने और दुरजोधन का घमंड तोड़ा और कौरवों के कुल का और परम धाम सिधारने के पहिले अपने जदु कुल का नाश किया । पांडवों पर यह बिपति पड़ी थी कि अपना सब राज पाट अपनी स्त्री द्रोपदी सहित कौरवों के हाथ जुए में हार गये और मुद्दत तक बनोबास में कष्ट उठाया ।

जोग जुगत तें भरम न छूटै, जब लग आप न सूझै ।
कहैं कबीर सोइ सतगुरु पूरा, जो कोइ समुझै बूझै ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

साधो एक रूप सब माहीं ।
अपने मनहिं बिचारि के देखो, और दूसरो नाहीं ॥टेक॥
एकै तुचा रुधिर पुनि एकै, बिप्र सूद्र के माहीं ।
कहीं नारि कहिं नर होइ बोलैं, गैब पुरुष वह आहीं ॥१॥
आपै गुरु होय मंत्र देत हैं, सिष होय सबै सुनाहीं ।
जो जस गहै लहै तस मारग, तिन के सतगुरु आहीं ॥२॥
सब्द पुकार सत्त मैं भाषौं, अंतर राखौं नाहीं ।
कहैं कबीर ज्ञान जेहि निर्मल, बिरले ताहि लखाहीं ॥३॥

॥ शब्द ३ ॥

साधो को है कहँ से आयो ॥ टेक ॥
खात पियत को बोलत डोलत, वाको अंत न पायो ।
केहि के मन धौं कहाँ बसतु है, को धौं नाच नचायो ॥१॥
पावक सर्ब अंग काठहिं मैं, को धौं डहकि जगायो ।
होइ गयो खाक तेज पुनि वा को, कहु धौं कहाँ समायो ॥२॥
भानु प्रकास कूप जल पूरन, दृष्टि दरस जो पायो ।
आभा करम अंत कछु नाहीं, जोति खींच ले आयो ॥३॥
अहै अपार पार कछु नाहीं, सतगुरु जिन्हैं लखायो ।
कहैं कबीर जेहि सूझ बूझ जस, तेइ तस भाष सुनायो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सहजै काया सोधो ।
करता आप आपु मेँ करता, लख मन को परमोधो ॥टेक॥
जैसे बट का बीज ताहि मेँ, पत्र फूल फल छाया ।
काया मद्धे बुन्द बिराजै, बुन्दै मद्धे काया ॥ १ ॥
अग्नि पवन पानी पिरथी नभ, ता बिन मेला नाहीं ।
काजी पंडित करौ निबेरा, का के माहिँ न साँईं ॥ २ ॥
साँचे नाम अगम की आसा, है वाही में साँचा ।
करता बीज लिये है खेलै, त्रिगुन तीन तत पाँचा ॥३॥
जल भरि कुम्भ जलै बिच धरिया, बाहर भीतर सोई ।
उन को नाम कहन को नाहीँ, दूजा धोखा होई ॥ ४ ॥
कठिन पंथ सतगुरु को मिलना, खोजत खोजत पाया ।
इक लग खोज मिटी जब दुबिधा, ना कहुँ गया न आया ॥५॥
कहैँ कबीर सुनो भाइ साधो, सत्त सब्द निज सारा ।
आपा मद्धे आपै बोलै, आपै सिरजनहारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

साधो दुबिधा कहँ से आई ।
नाना भाव बिचार करतु है, कौने मतिहिँ चोराई ॥टेक॥
ऋग* कहै निराकार निरलेपी, अगम अगोचर साँईं ।
आवै न जाय मरै नहिँ जीवै, रूप बरन कछु नाहीँ ॥१॥
जजुर* कहै सरगुन परमेसुर, दस औतार धराया ।
गोपिन के सँग रहस रचो है, सोई पुरानन गाया ॥२॥

---

*एक वेद का नाम ।

साम* कहै वह ब्रह्म अखंडित, और न दूजा कोई ।
आपै अपरम अवगति कहिये, सत्त पदारथ सोई ॥३॥
अथरवन* कहै परो पथ दीसै, सत्त पदारथ नाहीं ।
जे जे गये बहुरि नहिँ आये, मरि मरि कहाँ समाहीं ॥४॥
यह परमान सभन के लीन्हा, ज्यौँ अँधरन को हाथी ।
अछै बाप की खबर न जानी, पुत्र हुता नहिँ साथी ॥५॥
जा प्रकार अँधरे को हाथी, या विधि बेद बखानै ।
अपनी अपनी सब कोइ भाषै, का को ध्यानहिँ ठानै ॥६॥
साँच अहै अँधरे को हाथी, औ साँचे हैँ सगरे ।
हाथ की टोई साषि कहतु हैँ, हैँ आँखिन के अँधरे ॥७॥
सब्द अतीत सब्द सो अपना, बूझै बिरला कोई ।
कहैँ कबीर सतगुरु की सैना,† आप मिटे तब सोई ॥८॥

॥ शब्द ६ ॥

सार सब्द गहि बाचिहौ‡ मानौ इतबारा ॥ १ ॥
सत्तपुरुष अच्छै बिरिछ निरंजन डारा ॥ २ ॥
तीन देव साखा भये पाती संसारा ॥ ३ ॥
ब्रह्मा बेद सही किया सिव जोग पसारा ॥ ४ ॥
बिस्नु माया परगट किया उरले§ ब्योहारा ॥ ५ ॥
तिरदेवा ब्याधा‖ भये लिये बिष कर चारा ॥ ६ ॥
कर्म की बंसी डारि के फाँसा संसारा ॥ ७ ॥

*एक बेद का नाम । † इशारा । ‡बचोगे । § पहिला । ‖ चिड़ीमार ।

जोति सरूपी हाकिमा जिन अमल पसारा ॥ ८ ॥
तीन लोक दसहूँ दिसा जम रोके द्वारा ॥ ९ ॥
अमल मिटावौं ताहि को पठवौं भव पारा ॥१०॥
कहैं कबीर अमर करौं जो होय हमारा ॥ ११ ॥

॥ शब्द ७ ॥

महरम होय सो जानै साधो, ऐसा देस हमारा ॥ टेक ॥
बेद कतेब पार नहिँ पावत, कहन सुनन से न्यारा ।
जाति बरन कुल किरिया नाहीं, संध्या नेम अचारा ॥१॥
बिन जल बूंद परत जहँ भारी, नहिँ मीठा नहिँ खारा ।
सुन्न महल मैँ नौबत बाजै, किंगरी बीन सितारा ॥ २ ॥
बिन बादर जहँ बिजुरी चमकै, बिन सूरज उँजियारा ।
बिना सीप जहँ मोती उपजै, बिन सुर सब्द उचारा ॥३॥
जोति लजाय ब्रह्म जहँ दरसै, आगे अगम अपारा ।
कहैं कबीर वहँ रहनि हमारी, बूझै गुरुमुख प्यारा ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

अवधू बेगम देस हमारा ॥ टेक ॥
राजा रंक फकीर बादसा, सब से कहौं पुकारा ।
जो तुम चाहत अहो परम पद, बसिहो देस हमारा ॥१॥
जो तुम आये झीने होइ के, तजो मनी को भारा ।
ऐसी रहनि रहो रे गोरख,* सहज उतरि जाव पारा ॥२॥
सत्तनाम की हैं महतावैं, साहेब के दरबारा ॥३॥
बचना चाहो कठिन काल से, गहो सब्द टकसारा ।
कहैं कबीर सुनो हो गोरख,* सत्तनाम है सारा ॥४॥

*गोरखनाथ जोगी कबीर साहेब के समय मैं थे ।

॥ शब्द ९ ॥

जहवाँ से आयो अमर वह देसवा ॥ टेक ॥
पानी न पौन न धरती अकसवा ।
चाँद न सूर न रैन दिवसवा ॥ १ ॥
बाम्हन छत्री न सूद्र वैसवा ।
मुगल पठान न सैयद सेखवा ॥ २ ॥
आदि जोति नहिं गौर गनेसवा ।
ब्रह्मा विस्नु महेस न सेसवा ॥ ३ ॥
जोगी न जंगम मुनि दुरवेसवा ।
आदि न अन्त न काल कलेसवा ॥ ४ ॥
दास कबीर ले आये सँदेसवा ।
सार सब्द गहि चलौ वहि देसवा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

मोतिया बरसै रौरे देसवाँ दिन राती ॥ टेक ॥
मुरली सब्द सुन मन आनँद भयो, जोति बरै बिनु बाती ।
बिना मूल के कमल प्रगट भयो, फुलवा फुलत भाँति भाँती१
जैसे चकोर चन्द्रमा चितवै, जैसे चातक स्वाँती ।
तैसे संत सुरति के होइके, होइगे जनम सँघाती ॥२॥
या जग में बहु ठग लागतु हैं, पर धन हरत न डेराती ।
कहैं कबीर जतन करो साधो, सत्तगुरू की थाथी ॥३॥

॥ शब्द ११ ॥

नैहरवा हमको नहिं भावै ॥ टेक ॥
साँई की नगरी परम अति सुन्दर, जहँ कोइ जाय न आवै ।
चाँद सुरज जहँ पवन न पानी, को सँदेस पहुँचावै,
दरद यह साँई को सुनावै ॥ १ ॥

आगे चलौं पंथ नहिं सूझै, पीछे दोष लगावै ।
केहि बिधि ससुरे जावँ मोरी सजनी, बिरहा जोर जनावै,
विषै रस नाच नचावै ॥ २ ॥
बिन सतगुरु अपनो नहिं कोई, जो यह राह बतावै ।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, सपने न प्रीतम पावै,
तपन यह जिय की बुझावै ॥ ३ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गगन मठ गैब निसान गड़े ॥ टेक ॥
गुदा* मैं सेख सेस सिर ऊपर, डेरा अचल खड़े ॥ १ ॥
चंद्रहार चँदवा जहँ टाँगे, मुक्ता मनिक मढ़े ॥ २ ॥
महिमा तासु देख मन थिर करि, रबि ससि जोति जड़े ॥३॥
रहत हजूर पूर पद सेवत, समरथ ज्ञान बड़े ॥ ४ ॥
संत सिपाही करैं चाकरी, जेहि दरबार अड़े ॥ ५ ॥
बिना नगाड़े नौबत बाजै, अनहद सब्द झरे ॥ ६ ॥
कहैं कबीर पियै जोई जन, माता† फिरत मरे ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

वा घर की सुध कोइ न बतावै, जा घर से
जिव आया हो ॥ टेक ॥
धरती अकास पवन नहिं पानी, नहिं तब आदी माया हो १
ब्रह्मा बिस्नु महेस नहीं तब, जीव कहाँ से आया हो ॥ २ ॥
पानी पवन कै दहिया जमायो, अगिन कै
जामन दीन्हा हो ॥३॥

* बानी में ठेठ हिंदी शब्द गुदा का लिखा है। † माता=मस्त। दूसरा पाठ यों है-"ममता तुरत हरे"।

चाँद सुरज दोउ बने अहीरा, मथि दहिया
घिउ काढ़ा हो ॥४॥
ये मनसा माया के लोभी, बारबार पछिताया हो ॥५॥
लख नहिं परै नाम साहेब का, फिर फिर
भटका खाया हो ॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, वह घर बिरले पाया हो ॥७॥

॥ शब्द १४ ॥

गगन घटा घहरानी साधो, गगन घटा घहरानी ॥टेक॥
पूरब दिसि से उठी बदरिया, रिमझिम बरसत पानी।
आपन आपन मेँड़ि सम्हारो, बह्यो जात यह पानी ॥१॥
मन के बैल सुरति हरवाहा, जोत खेत निर्बानी।
दुबिधा दूब छोल करु बाहर, बोवो नाम की धानी ॥२॥
जोग जुक्ति करि करु रखवारी, चर न जाय मृग धानी।
बाली झार कूटि घर लावै, सोई कुसल किसानी ॥ ३ ॥
पाँच सखी मिलि कीन्ह रसोइयाँ, एक से एक सयानी।
दूनोँ थार बराबर परसे, जेवैं मुनि अरु ज्ञानी ॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, यह पद है निर्बानी।
जो या पद को परचा पावै, ता को नाम बिज्ञानी ॥५॥

॥ शब्द १५ ॥

झीनी झीनी बीनी चदरिया ॥ टेक ॥
काहे कै ताना काहे कै भरनी, कौने तार से बीनी
चदरिया ॥ १ ॥

इँगला पिँगला ताना भरनी, सुषमन तार से बीनी
चदरिया ॥ २ ॥
आठ कँवल दल चरखा डोलै, पाँच तत्त गुन तीनी
चदरिया ॥ ३ ॥
साँईं को सियत मास दस लागे, ठोक ठोक के बीनी
चदरिया ॥ ४ ॥
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ि के मैली कीन्ही
चदरिया ॥ ५ ॥
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीन्ही
चदरिया ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

फल मीठा पै ऊँचा तरवर*, कौनि जतन करि लीजै ।
नेक† निचोइ सुधा रस वा को, कौनि जुगति से पीजै॥१॥
पेड़ बिकट‡ है महा सिलहिला§, अगह गह्यो नहिं जावै ।
तन मन डारि चढ़ै सरधा से, तब वा फल को खावै ॥२॥
बहुतक लोग चढ़े बिन भेदै, देखी देखा याँहीं ।
रपटि पाँव गिरि परे अधर तें, आइ परे भुइँ माहीं ॥३॥
सत्त सब्द के खूँटे धरि पग, गहि गुरु-ज्ञानहिं डोरा ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, तब वा फल को तोरा ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

मुनियाँ पिँजड़े वाली ना, तेरो सतगुरु है बेवपारी ।टेक।
पाँच तत्त का बना पींजड़ा, ता मैं रहती मुनियाँ ।
उड़ि के मुनियाँ डार पै बैठी, झाँखन लागी सारी दुनियाँ ॥१

---

*पेड़ । †थोड़ा सा । ‡कठिन, अड़बड़ । §फिसलाने वाला ।

अलग डार पर बैठी मुनियाँ, पिये प्रेम रस बूटी ।
क्या करिहै जमराज तिहारो, नाम कहत तन छूटी ॥२॥
मुनियाँ की गति मुनियाँ जानै, और कहै सब झूठी ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु चरनन की भूखी ॥३॥

॥ शब्द १८ ॥

पिया ऊँची रे अटरिया तोरी देखन चली ॥ टेक ॥
ऊँची अटरिया जरद किनरिया, लगी नाम की डोरी ।
चाँद सुरज सम दियना बरतु है, ता बिच भूली डगरिया ॥१॥
पाँच पचीस तीन घर बनियाँ, मनुवाँ है चौधरिया ।
मुन्सी है कुतवाल ज्ञान को, चहुँ दिस लागी बजरिया ॥२॥
आठ मरातिब दस दर्वाजा, नौ में लगीं किवरिया ।
खिरकी बैठ गोरी चितवन लागी, उपराँ झाँप झोपरिया॥३
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, गुरु के चरन बलिहरिया।
साध संत मिलि सौदा करि हैं, झीँखै मूरख अनरिया ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

रस गगन गुफा में अजर झरै ॥ टेक ॥
बिन बाजा झनकार उठै जहँ, समुझि परै जब ध्यान धरै१
बिना ताल जहँ कँवल फुलाने, तेहि चढ़ि हंसा केल करै ॥२॥
बिन चंदा उँजियारी दरसै, जहँ तहँ हंसा नजर परै ॥३॥
दसवँ द्वारे ताड़ी लागी, अलख पुरुष जा को ध्यान धरै ॥४॥
काल कराल निकट नहिं आवै काम क्रोध मद लोभ जरै ॥५॥
जुगन जुगन की तृषा बुझानी, कर्म भर्म अघ व्याधि टरै॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, अमर होय कबहूँ न मरै॥७॥

॥ शब्द २० ॥

सुरसिद नैनों बीच नबी है।
स्याह सपेद तिलों बिच तारा, अविगत अलख रबी* है ॥टेक
आँखी मद्धे पाँखी चमकै, पाँखी मद्धे द्वारा।
तेहि द्वारे दुर्बीन लगावै, उतरै भौजल पारा ॥ १ ॥
सुन्न सहर में बास हमारी, तहँ सरबंगी जावै।
साहेब कबीर सदा के संगी, सब्द महल ले आवै ॥ २ ॥

॥ शब्द २१ ॥

सत्त सुकृत सतनाम जक्त जानै नहीं।
बिना प्रेम परतीत कहा मानै नहीं ॥१॥
जिव अनंत संसार न चीन्हत पीव को।
कितना कह समझाय चौरासि क जीव को ॥२॥
आगे धाम अखंड सो पद निर्बान है।
भूख नींद वहँ नाहिं निअच्छर नाम है ॥३॥
कहैं कबीर पुकारि सुनो मन भावना।
हंसा चलु सतलोक बहुरि नहिं आवना ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

कर नैनों दीदार महल में प्यारा है ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद लोभ बिसारो, सील सँतोष छिमा सत धारो।
मद्द मांस मिथ्या तजि डारो,
हो ज्ञान घोड़े असवार भरम से न्यारा है ॥ १ ॥

---

*मालिक।

धोती नेती बस्ती पाओ, आसन पद्म जुगत से लाओ।
कुम्भक कर रेचक करवाओ,
पहिले मूल सुधार कारज हो सारा है ॥२॥

मूल कँवल दल चतुर बखानो, कलिंग जाप लाल रँग मानो।
देव गनेस तहँ रोपा थानो,
ऋध सिध चँवर ढुलारा है ॥३॥

स्वाद* चक्र षटदल बिस्तारो, ब्रह्म* सावित्री रूप निहारो।
उलटि नागिनी का सिर मारो,
तहाँ सब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥

नाभी अष्ट कँवल दल साजा, सेत सिंघासन बिस्नु बिराजा।
हिरिंग जाप तासु मुख गाजा,
लछमी सिव आधारा है ॥ ५ ॥

द्वादस कँवल हृदय के माहीं, जंग गौर सिव ध्यान लगाईं।
सोहं सब्द तहाँ धुन छाई,
गन करैं जैजैकारा है ॥ ६ ॥

दो दल कँवल कंठ के माहीं, तेहि मध बसे अबिद्या बाई।
हरि हर ब्रह्मा चँवर ढुराई,
जहँ श्रृंग नाम उचारा है ॥७॥

ता पर कंज कँवल है भाई, बग भौंरा† दुइ रूप लखाई।
निज मन करत तहाँ ठकुराई,
सो नैनन पिछवारा है ॥ ८ ॥

---

*ब्रह्मा। † बकुला और भौंरा अर्थात् सेत-स्याम पद।

कँवलन भेद किया निर्वारा, यह सब रचना पिंड मँझारा।
सतसँग कर सतगुरु सिर धारा,
वह सत नाम उचारा है ॥ ९ ॥

आँख कान मुख बन्द कराओ, अनहद झिंगा सब्द सुनाओ।
दोनौं तिल इक तार मिलाओ,
तब देखो गुलजारा है ॥ १० ॥

चंद सूर एकै घर लाओ, सुषमन सेती ध्यान लगाओ।
तिरबेनी के संध* समाओ,
भोर उतर चल पारा है ॥ ११ ॥

घंटा संख सुनो धुन दोई, सहस कँवल दल जगमग होई।
ता मध करता निरखो सोई,
बंकनाल धस पारा है ॥ १२ ॥

डाकिनी साकिनी बहु किलकारैं, जम किंकर धर्म दूत हकारैं।
सत्तनाम सुन भागें सारे,
जब सतगुरु नाम उचारा है ॥ १३ ॥

गगन मँडल बिच उर्धमुख कुइया, गुरुमुख साधू भरभर पीया।
निगुरे प्यास मरे बिन कीया†,
जा के हिये अँधियारा है ॥ १४ ॥

त्रिकुटी महल में बिद्या सारा, घनहर‡ गरजें बजे नगारा।
लाल बरन सूरज उँजियारा,
चतुरकँवल मँझार सब्द ओंकारा है ॥१५॥

---

* संगम। † करनी। ‡ बादल।

साध सोई जिन यह गढ़ लीन्हा, नौ दरवाजे परगट चीन्हा।
दसवाँ खोल जाय जिन दीन्हा,
जहाँ कुलुफ* रहा मारा है ॥ १६ ॥
आगे सेत सुन्न है भाई, मानसरोवर पैठि अन्हाई।
हंसन मिलि हंसा होइ जाई,
मिलै जो अमी अहारा है ॥ १७ ॥
किंगरी सारँग बजै सितारा, अच्छर ब्रह्म सुन्न दरबारा।
द्वादस भानु हंस उँजियारा,
खट दल कँवल मँझार सब्द ररंकारा है ॥१८॥
महा सुन्न सिंध बिषमी घाटी, बिन सतगुरु पावै नहिँ बाटी।
ब्याघर† सिंघ सरप बहु काटी,
तहँ सहज अचिंत पसारा है ॥ १९ ॥
अष्ट दल कँवल पारब्रह्म भाई, दहिने द्वादस अचिंत रहाई।
बायेँ दस दल सहज समाई,
यौँ कँवलन निरवारा है ॥ २० ॥
पाँच ब्रह्म पाँचो अँड बीनो, पाँच ब्रह्म निःअच्छर चीन्हो।
चार मुकाम गुप्त तहँ कीन्हो,
जा मध बंदीवान पुरुष दरबारा है ॥२१॥
दो पर्बत के संध निहारो, भँवर गुफा तेँ संत पुकारो।
हंसा करते केल अपारो,
तहाँ गुरन दर्बारा है ॥ २२ ॥
सहस अठासी दीप रचाये, हीरे पन्ने महल जड़ाये।
मुरली बजत अखंड सदाये,
तहँ सोहं झनकारा है ॥ २३ ॥

*कुफ़ल=ताला। †बाघ।

सोहं हद्द तजी जब भाई, सत्त लोक की हद पुनि आई।
उठत सुगंध महा अधिकाई,
जा को वार न पारा है ॥ २४ ॥

षोड़स भानु हंस को रूपा, बीना सत धुन बजै अनूपा।
हंसा करत चँवर सिर भूपा,
सत्त पुरुष दर्बारा है ॥ २५ ॥

कोटिन भानु उदय जो होई, एते ही पुनि चंद्र लखोई।
पुरुष रोम सम एक न होई,
ऐसा पुरुष दीदारा है ॥ २६ ॥

आगे अलख लोक है भाई, अलख पुरुष की तहँ ठकुराई।
अरबन सूर रोम सम नाहीं,
ऐसा अलख निहारा है ॥ २७ ॥

ता पर अगम महल इक साजा, अगम पुरुष ताहि को राजा।
खरबन सूर रोम इक लाजा,
ऐसा अगम अपारा है ॥ २८ ॥

ता पर अकह लोक है भाई, पुरुष अनामी तहाँ रहाई।
जो पहुँचा जानेगा वाही,
कहन सुनन तेँ न्यारा है ॥ २९ ॥

काया भेद किया निर्वारा, यह सब रचना पिंड मँझारा।
माया अवगति जाल पसारा,
सो कारीगर भारा है ॥ ३० ॥

आदि माया कीन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिंड दिखाई।
अवगति रचन रची अँड माहीं,
ता का प्रतिबिंब डारा है ॥ ३१ ॥

सब्द बिहंगम चाल हमारी, कहैं कबीर सतगुरु दइ तारी।
खुले कपाट सब्द झनकारी,
पिंड अंड के पार सो देस हमारा है ॥३२॥

॥ शब्द २३ ॥

कर नैनोँ दीदार यह पिंड से न्यारा है ।
तू हिरदे सोच बिचार यह अंड मँझारा है ॥ टेक ॥
चोरी जारी* निंदा चारो, मिथ्या तज सतगुरु सिर धारो।
सतसँग कर सत नाम उचारो,
तब सनमुख लहो दीदारा है ॥ १ ॥
जे जन ऐसी करी कमाई, तिनकी फैली जग रोसनाई ।
अष्ट प्रमान जगह सुख पाई,
तिन देखा अंड मँझारा है ॥ २ ॥
सोई अंड को अवगत राई, अमर कोट अकह नकल बनाई।
सुद्ध ब्रह्म पद तहँ ठहराई,
सो नाम अनामी धारा है ॥ ३ ॥
सतवीँ सुन्न अंड के माहीँ, झिलमिलहट की नकल बनाई ।
महा काल तहँ आन रहाई,
सो अगम पुरुष उच्चारा है ॥ ४ ॥
छठवीँ सुन्न जो अंड मँझारा, अगम महल की नकल सुधारा।
निरगुन काल तहाँ पग धारा,
सो अलख पुरुष कहु न्यारा है ॥ ५ ॥

---

* पर स्त्री गमन ।

पंचम सुन्न जो अंड के माहीं, सत्तलोक की नकल बनाई।
माया सहित निरंजन राई,
सो सत्त पुरुष दीदारा है ॥ ६ ॥

चौथी सुन्न अंड के माहीं, पद निर्बान की नकल बनाई।
अविगत कला ह्वै सतगुरु आई।
सो सोहं पद सारा है ॥ ७ ॥

तीजी सुन्न की सुनो बड़ाई, एक सुन्न के दोय बनाई।
ऊपर महासुन्न अधिकाई,
नीचे सुन्न पसारा है ॥ ८ ॥

सतवीं सुन्न महाकाल रहाई, तासु कला महासुन्न समाई।
पारब्रह्म कर थाप्यो ताही,
सो निःअच्छर सारा है ॥ ९ ॥

छठवीं सुन्न जो निरगुन राई, तासु कला आ सुन्न समाई।
अच्छर ब्रह्म कहैं पुनि ताही,
सोई सब्द ररंकारा है ॥ १० ॥

पंचम सुन्न निरंजन राई, तासु कला दूजी सुन छाई।
पुरुष प्रकिरती पदवी पाई,
सुद्ध सरगुन रचन पसारा है ॥ ११ ॥

पुरुष प्रकृति दूजी सुन माहीं, तासु कला पिरथम सुन आई।
जोत निरंजन नाम धराई,
सरगुन स्थूल पसारा है ॥ १२ ॥

पिरथम सुन्न जो जोत रहाई, ताकी कला अविद्या बाई।
पुत्रन सँग पुत्री उपजाई,
यह सिंध बैराट पसारा है ॥ १३ ॥

सतवें अकास उतर पुनि आई, ब्रह्मा बिस्नु समाधि जगाई।
पुत्रन सँग पुत्री परनाई,
यहँ लिँग नाम उचारा है ॥ १४ ॥

छठे अकास सिव अवगति भौंरा, जंग गौर रिधि करती चौंरा
गिरि कैलास गन करते सोरा,
तहँ सोहं सिर मैारा है ॥ १५ ॥

पंचम अकास मेँ बिस्नु बिराजे, लछमी सहित सिँघासन गाजे
हिरिँग बैकुंठ भक्त समाजे,
जिन भक्तन कारज सारा है ॥ १६ ॥

चैाथे अकास ब्रह्मा बिस्तारा, सावित्री सँग करत बिहारा।
ब्रह्म ऋद्धि ओँग पद सारा,
यह जग सिरजनहारा है ॥ १७ ॥

तीजे अकास रहे धर्मराई, नर्क सुर्ग जिन लीन्ह बनाई।
करमन फल जीवन भुगताई,
ऐसा अदल पसारा है ॥ १८ ॥

दूजे अकास मेँ इन्द्र रहाई, देव मुनी बासा तहँ पाई।
रंभा करती निरत सदाई,
कलिँग सब्द उच्चारा है ॥ १९ ॥

प्रथम अकास मृत्यु है लोका, मरन जनम का नित जहँ धोखा।
सो हंसा पहुँचे सत लोका,
जिन सतगुरु नाम उचारा है ॥ २० ॥

चैादह तबक किया निरवारा, अब नीचे का सुनो बिचारा।
सात तबक मेँ छः रखवारा।
भिन भिन सुनो पसारा है ॥ २१ ॥

सेस धौल बाराह कहाई, मीन कच्छ औ कुरम रहाई ।
सो छः रहे सात के माहीँ,
यह पाताल पसारा है ॥ २२ ॥

॥ शब्द २४ ॥

कोइ सुनता है गुरु ज्ञानी, गगन आवाज होती झीनी ॥१॥
पहिले होता नाद बिन्दु से, फेर जमाया पानी ॥ २ ॥
सब घट पूरन पूर रहा है, आदि पुरुष निर्बानी ॥ ३ ॥
जो तन पाया पटा लिखाया, त्रिस्ना नहीं बुझानी ॥ ४ ॥
अमृत छोड़ि बिषय रस चाखा, उलटी फाँस फँसानी ॥५॥
ओअं सोहं बाजा बाजै, त्रिकुटी सुरत समानी ॥ ६ ॥
इड़ा पिंगला सुषमन सोधे, सुन्न धुजा फहरानी ॥ ७ ॥
दीद बरदीद हम नजरौँ देखा, अजरा अमर निसानी॥८॥
कह कबीर सुनो भाइ साधो, यही आदि की बानी ॥९॥

॥ शब्द २५ ॥

साधो ऐसा धुँध अँधियारा ॥ टेक ॥
या घट अंतर बाग बगीचे, याही मैँ सिरजनहारा ॥ १ ॥
या घट अंतर सात समुंदर, याही मैँ नौ लख तारा ॥२॥
या घट अंतर हीरा मोती, याही मैँ परखनहारा ॥३॥
या घट अंतर अनहद गरजै, याही मैँ उठत फुहारा ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, याही मैँ गुरू हमारा ॥५॥

॥ शब्द २६ ॥

अवधू सो जोगी गुरु मेरा, या पद का करै निबेरा ॥टेक॥
तरवर एक मूल बिन ठाढ़ा, बिन फूले फल लागे ।
साखा पत्र नहीं कछु वा के, अष्ट कमल दल गाजे ॥१॥

चढ़ तरवर दो पंछी बैठे, एक गुरू इक चेला।
चेला रहा सो चुन चुन खाया, गुरू निरन्तर खेला ॥२॥
बिन करताल पखावज बाजै, बिन रसना गुन गावै।
गावनहार के रूप न रेखा, सतगुरु मिलै बतावै ॥३॥
गगन मँडल मैं उर्ध मुख कुइयाँ, जहाँ अमी को बासा।
सगुरा होय सो भर भर पीवै, निगुरा जाय पियासा ॥४॥
सुन्न सिखर पर गइया बियानी, धरती छीर जमाया।
माखन रहा सो संतन खाया, छाछ जगत भरमाया ॥५॥
पंछी को खोज मीन को मारग, कहैँ कबीर दोउ भारी।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम, मूरत की बलिहारी ॥६॥

॥ शब्द २७ ॥

हंसा लोक हमारे अइहो, तातेँ अमृत फल तुम पइहो ॥टेक॥
लोक हमारा अगम दूर है, पार न पावै कोई।
अति आधीन होय जो कोई, ता को देउँ लखाई ॥ १ ॥
मिरत लोक से हंसा आये, पुहुप दीप चलि जाई।
अंबु दीप मेँ सुमिरन करिहो, तब वह लोक दिखाई ॥२॥
माटी का पिंड छूटि जायगा, औ यह सकल बिकारा।
ज्योँ जल माहिँ रहत है पुरइन*, ऐसे हंस हमारा ॥ ३ ॥
लोक हमारे अइहो हंसा, तब सुख पइहो भाई।
सुख सागर असनान करोगे, अजर अमर होइ जाई ॥४॥
कहैँ कबीर सुनो धर्मदासा, हंसन करो बधाई।
सेत सिंघासन बैठक देहैँ, जुग जुग राज कराई ॥ ५ ॥

---

* कोईं।

॥ शब्द २८ ॥

ऐसा लो तत ऐसा लो, मैं केहि बिधि कथौं गँभीरा लो ॥टेक॥
बाहर कहौं तो सतगुरु लाजै, भीतर कहौं तो झूठा लो।
बाहर भीतर सकल निरंतर, गुरु परतापे दीठा लो ॥१॥
दृष्टि न मुष्टि न अगम अगोचर, पुस्तक लिखा न जाई लो।
जिन पहिचाना तिन भल जाना, कहे न को पतियाई लो ॥२॥
मीन चले जल मारग जोवै, परम तत्त धौं कैसा लो।
पुहुप* बास हूँ तैं कछु झीना, परम तत्त धौं ऐसा लो ॥३॥
आकासे उड़ि गयौ बिहंगम, पाछे खोज न दरसी लो।
कहैं कबीर सतगुरु दाया तैं, बिरला सतपद परसी लो ॥४॥

॥ शब्द २९ ॥

बाबा अगम अगोचर कैसा, तातैं कहि समझाऔं ऐसा॥टेक॥
जो दीसै सो तो है नाहीं, है सो कहा न जाई।
सैना बैना कहि समझाऔं, गूँगे का गुड़ भाई ॥ १ ॥
दृष्टि न दीसै मुष्टि न आवै, बिनसै नाहिं नियारा।
ऐसा ज्ञान कथा गुरु मेरे, पंडित करो बिचारा ॥ २ ॥
बिन देखे परतीति न आवै, कहे न कोउ पतियाना।
समुझा होय सो सब्दै चीन्है, अचरज होय अयाना॥३॥
कोई ध्यावै निराकार को, कोइ ध्यावै आकारा।
वह तो इन दोऊ तैं न्यारा, जानै जाननहारा ॥ ४ ॥
काजी कथै कतेब कुराना, पंडित बेद पुराना।
वह अच्छर तो लखा न जाई, मात्रा लगै न काना ॥५॥
नादी बादी पढ़ना गुनना, बहु चतुराई भीना।
कहैं कबीर सो पड़ै न परलय, नाम भक्ति जिन चीन्हा ॥६॥

---

* फूल।

झूलना

॥ शब्द १ ॥

ज्ञान का गेंद कर सुर्त का डंड कर,
खेल चौगान मैदान माहीं ॥ १ ॥
जगत का भरमना छोड़ दे बालके,
आय जा भेष भगवंत पाहीं ॥ २ ॥
भेष भगवंत की सेस महिमा करे,
सेस के सीस पर चरन डारै ॥ ३ ॥
काम दल जीति के कँवल दल सोधि के,
ब्रह्म को बेधि के क्रोध मारै ॥ ४ ॥
पदम आसन करै पवन परिचै करै,
गगन के महल पर मदन जारै ॥ ५ ॥
कहत कब्बीर कोइ संत जन जौहरी,
करम की रेख पर मेख मारै ॥ ६ ॥

॥ शब्द २ ॥

पाप पुन्न के बीज दोऊ,
बिज्ञान अगिन मैं जारिये जी ॥ १ ॥
पाँचो चोर बिवेक से बस करि,
बिचार नगर मैं मारिये जी ॥ २ ॥
चिदानन्द सागर मैं जाइये,
मन चित दोऊ को डारिये जी ॥ ३ ॥

कहैं कबीर इक आप कहा,
कितने को पार उतारिये जी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

तीरथ में सब पानी है,
होवै नहिं कछु न्हाय देखा ॥ १ ॥
प्रतिमा सकल बनी जड़ है,
बोलै नहिं बुलाय देखा ॥ २ ॥
पुरान कुरान सब बात ही बात है,
घट का परदा खोल देखा ॥ ३ ॥
अनुभव की बात कबीर कहैं,
यह सब है झूठी पोल देखा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

दो सुर* चलै सुभाव सेती,
नाभी से उलटा आवता है ॥ १ ॥
बीच इँगला पिँगला तीन नाड़ी,
सुषमन से भोजन पावता है ॥ २ ॥
पूरक करै कुम्भक करै,
रेचक करै झरि जावता है ॥ ३ ॥
कायम कबीर का झूलना जी,
दया भूल परे पछितावता है ॥ ४ ॥

---

* स्वर ।

॥ शब्द ५ ॥

सूर को कौन सिखावता है,
 रन माहिं असी[*] का मारना जी ॥ १ ॥
सती को कौन सिखावता है,
 सँग स्वामी के तन जारना जी ॥ २ ॥
हंस को कौन सिखावता है,
 नीर छीर का भिन्न बिचारना जी ॥ ३ ॥
कबीर को कौन सिखावता है,
 तत्त रंगौं को धारना जी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

तख्त बना हाड़ चाम का जी,
 दाना पानी क भोग लगावता है ॥ १ ॥
मल नीर झरै लोहू माँस बढ़े,
 आपु आपु को अंस बढ़ावता है ॥ २ ॥
नाद बिंदु के बीच कलोल करै,
 सो आतम राम कहावता है ॥ ३ ॥
अस्थान यही कहँ ढूँढ़ता है,
 दया देस कबीर बतावता है ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

दरियाव की लहर दरियाव है जी,
 दरियाव और लहर मेँ भिन्न कोयम[†] ॥ १ ॥

---

[*] तलवार। [†] क्या।

उठे तो नीर है बैठे तो नीर है,
कहो दूसरा किस तरह होयम* ॥ २ ॥
उसी नाम को फेर के लहर धरा,
लहर के कहे क्या नीर खोयम† ॥ ३ ॥
जक्त ही फेर सब जक्त और ब्रह्म मेँ,
ज्ञान करि देख कब्बीर गोयम‡ ॥ ४ ॥

होली

॥ शब्द १ ॥

सतगुरु सँग होरी खेलिये, जा तेँ जरा मरन भ्रम जाय ॥टेक॥
ध्यान जुगत की करि पिचकारी, छिमा चलावनहार ।
आतम ब्रह्म जो खेलन लागे, पाँच पचीस मँझार ॥१॥
ज्ञान गली मेँ होरी खेलै, मची प्रेम की कीँच ।
लोभ मोह दोऊ कटि भागे, सुन सुन सब्द अतीत ॥२॥
त्रिकुटी महल मेँ बाजा बाजै, होत छतीसो राग ।
सुरत सखी जहँ देखि तमासा, सतगुरु खेलैँ फाग ॥ ३ ॥
इँगला पिँगला सुषमना हो, सुरत निरत दोउ नारि ।
अपने पिया सँग होरी खेलैँ, लज्जा कान निवारि ॥४॥
सुन्न सहर मेँ होत कुतूहल, करैँ राग अनुराग ।
अपने पुरुष के दरसन पावैँ, पूरन प्रेम सुहाग ॥ ५ ॥
सतगुरु मिले फगुवा निज पायो, मारग दियो लखाय ।
कहैँ कबीर जो यह गति पावै, सो जिव लोक सिधाय ॥६॥

---

* हो सकता है । † गुप्त हो गया । ‡ गुप्त ।

॥ शब्द २ ॥

काया नगर मँझार संत खेलैं होरी ।
गावत राग सरस सुर सोहै, अति आनंद भयो री ॥टेक॥
चंदन सील सबुद्धि अरगजा, केसर करनी गह्यो री ।
अगर अगम्म सुगम करि लीन्हो, अभय उर माँहि धरो री ॥१॥
प्रीति फुलेल गुलाल ज्ञान करि, लेहु जुगत भरि झोरी ।
चोवा चित चेतन परकासा, आवति बास घनो री ॥२॥
त्रिकुटी महल मैं बाजा बाजै, जगमग जोत उजेरी ।
सहज रंग रचि रह्यो सकल तन, छूटत नाहिं करेरी ॥३॥
अनहद बाजे बजैं मधुर धुन, बिन करताल तँबूरा ।
बिन रसना जहँ राग छतीसो, होत महानँद पूरा ॥ ४ ॥
सुन्न सहर इक रंग महल से, कहूँ टरत नहिं टारी ।
कहैं कबीर समुझि ल्यो साधो, निर्गुन कह्यो सदा री ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

हमारे को खेलै ऐसी होरी, जा मैं आवागवन लागी
डोरी ॥ टेक ॥
स्रवन न सुन्यौ नैन नहिं देख्यौ, पिय पिय पिय लगी लौ री।
पंथ निहारत जनम सिराना, परघट मिले न चोरी ॥१॥
जा कारन गृह तैं कढ़ि निकसी, लोक लाज कुल तोरी।
चोवा चंदन और अरगजा, कपरा रंग भरो री ॥ २ ॥
एकन हूँ मृगछाला पहिरी, एकन गुदरी झोरी ।
बहुत भेष धर स्वाँग बनाये, लै नहिं लगी ठगोरी ॥३॥

जगन्नाथ बद्री रामेसर, देस दिसंतर दौरी ।
अठसठ तीरथ पृथी प्रदच्छिना, पुस्कर हूँ मैं लुटी री ॥४॥
बेद पुरान भागवत गीता, चारो बरन ढँढोरी* ।
कहैं कबीर दया सतगुरु बिनु, भर्म मिटे नहिं भव री ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

मेरे साहेब आये आज, खेलन फाग री ।
बानी बिमल सगुन सब बोले, अति सुख मंगल राग री ॥टेक
चाचर† सरस सखा सँग बोले, अनहद बानी राग री ।
सब्द सुनत अनुराग होतु है, क्या सोवै उठि जाग री ॥१॥
पानी आदर पवन बिछौना, बहुत करौं सनमान री ।
देत असीस अमर पद याही, अबिचल जुग जुग बास री ॥२॥
चरन पखार लेहुँ चरनोदक, उठि उनके पग लाग री ।
पाँच सखी मिलि मंगल गावैं, पिव अपने सँग पाग री ॥३॥
पंचामिर्त भाव से लेवौं, परम पुरुष भरतार री ।
महा प्रसाद संत सुख पावौं, आन खुलो मेरो भाग री ॥४॥
चौरासी को बंद छुड़ावन, आये सतगुरु आप री ।
पान परवाना देत जिवन को, वे पावैं सुख बास री ॥५॥
चोवा चंदन अगर कुमकुमा, पुहुप माल गल हार री ।
फगुवा माँग मुक्ति फल लेहूँ, जिव आपन के काज री ॥६॥
सोरहो सिँगार बतीसो अभरन, सुरत सिंगार सँवार री ।
सत्त कबीर मिले सुख सागर, आवा गवन निवार री ॥७॥

---

*ढूँढ़ा । † फाग खेलने वालों की भीड़ ।

॥ शब्द ५ ॥

साधो हम घर कंत सुजान, खेल्यो रँग होरी ।
जनम जनम की मिटी कलपना, पायो जीवन प्रान री॥टेक॥
पाँच सखी मिलि मंगल गावैं, गुरमुख सब्द बिचार री।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, अनहद सब्द गुँजार री ॥१॥
खेलन चली पंथ प्रीतम के, तन की तपन गई री ।
पिचुकारी छूटै अति अद्‌भुत, रस की कीँच भई री ॥२॥
साहेब मिलि आपा बिसरायो, लाग्यो खेल अपार री ।
चहुँ दिस पिय पिय धूम मची है, रटना लगी हमार री ॥३॥
सुख सागर असनान कियो है, निर्मल भयो सरीर री ।
आवागवन की मिटी कलपना, फगुवा पायो कबीर री ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

जहँ सतगुरु खेलत ऋतु बसंत । परम जोत जहँ साध संत ॥१
तीन लोक से भिन्न राज । जहँ अनहद बाजा बजै बाज ॥२
चहुं दिस जोति की बहै धार । बिरला जन कोइ उतरै पार ॥३
कोटि कृस्न जहँ जोरैं हाथ । कोटि बिस्नु जहँ नवैं माथ ॥४
कोटिन ब्रह्मा पढ़ैं पुरान । कोटि महेस जहँ धरैं ध्यान ॥५॥
कोटि सरस्वति धारैं राग । कोटि इन्द्र जहँ गगन लाग ॥६
सुर गन्धर्ब मुनि गने न जायँ । जहँ साहेब प्रगटे आपआय७
चोवा चंदन श्रौ अबीर । पुहुप बास रस रह्यो गँभीर ॥८॥
सिरजत हिये निवास लीन्ह । सो यहि लोक से रहत भिन्न॥९
जब बसंत गहि राग लीन्ह । सतगुरु सब्द उचार कीन्ह ॥१०
कहैं कबीर मन हृदय लाय । नरक-उधारन नाम आहि ॥११

रेख़ता

॥ शब्द १ ॥

रैन दिन संत यों सोवता देखता,
संसार की ओर से पीठ दीये ।
मन और पवन फिर फूट चालै नहीं,
चंद और सूर को सम्म कीये ॥ १ ॥
टकटकी चंद चकोर ज्यों रहतु है,
सुरत औ निरत का तार बाजै ।
नौबत घुरत है रैन दिन सुन्न में,
कहैं कब्बीर पिउ गगन गाजै ॥ २ ॥

॥ शब्द २ ॥

पाव और पलक की आरती कौन सी,
रैन दिन आरती संत गावै ।
घुरत निस्सान तहँ गैब की झालरा,
गैब के घंट का नाद आवै ॥ १ ॥
तहँ नीव बिन देहरा* देव निर्बान है,
गगन के तख़्त पर जुगत सारी ।
कहैं कब्बीर तहँ रैन दिन आरती,
पासिया पाँच पूजा उतारी ॥ २ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साँईं आप की सेव तो आप ही जानिहो,
आप का भेव कहो कौन पावै ।
आपनी आपनो बुद्धि अनुमान से,
बचन बिलास करि लहर लावै ॥ १ ॥

---

*मंदिर ।

तू कहै तैसा नहीं, है सो दीखै नहीं,
निगम हूँ कहत नहिं पार जावै ।
कहैं कब्बीर या सैन गूँगा तईं,
होय गूँगा सोई सैन पावै ॥ २ ॥

॥ ४ ॥

कर्म ग्रोर भर्म संसार सब करतु है,
पीव की परख कोइ संत जानै ।
सुरत औ निरत मन पवन को पकर करि,
गंग और जमुन के घाट आनै ॥ १ ॥
पाँच को नाथ करि साथ सोहूँ* लिया,
अधर दरियाव का सुक्ख मानै ।
कहैं कब्बीर सोइ संत निर्भय घरा,
जन्म और मरन का भर्म भानै ॥ २ ॥

॥ ५ ॥

गंग उलटी धरो जमुन बासा करो†,
पलट पँच तीरथ पाप जावै ।
नीर निर्मल तहाँ रैन दिन झरतु है,
न्हाय जो बहुरि भव सिंध न आवै ॥ १ ॥
फिरत बैारे तहाँ बुद्धि को नास है,
बाज के झपट मेँ सिंघ नाहीं ।

---

*सन्मुख, संग । †गंग अर्थात दहिनी स्वाँसा को चढ़ाओ और जमुन अर्थात बाँईं स्वाँसा के साथ मिलाओ ।

कहैं कब्बीर उस जुक्ति को गहैगा,
जनम औ मरन तब अंत पाई ॥ २ ॥

॥ ६ ॥

देख वोजूद में अजब बिसराम है,
होय मौजूद तो सही पावै ।
फेर मन पवन को घेर उलटा चढ़ै,
पाँच पच्चीस को उलटि लावै ॥ १ ॥
सुरत की डोर सुख सिंध का झूलना,
घोर की सोर तहँ नाद गावै ।
नीर बिन कँवल तहँ देख अति फूलिया,
कहैं कब्बीर मन भँवर छावै ॥ २ ॥

॥ ७ ॥

चक्र के बीच में कँवल अति फूलिया,
तासु का सुक्ख कोइ संत जानै ।
कुलुफ[*] नौद्वार औ पवन को रोकना,
तिरकुटी मद्ध मन भँवर आनै ॥ १ ॥
सब्द की घोर चहुँ ओर ही होत है,
अधर दरियाव को सुक्ख मानै ।
कहैं कब्बीर यौं झूल सुख सिंध में,
जन्म औ मरन का भर्म भानै[†] ॥ २ ॥

॥ ८ ॥

गंग औ जमुन के घाट को खोजि ले,
भँवर गुंजार तहँ करत भाई ।

---

*ताला । †तोड़ै ।

सरसुती नीर तहँ देखु निर्मल वहै,
तासु के नीर पिये प्यास जाई ॥ १ ॥
पाँच की प्यास तहँ देखि पूरी भई,
तीन की ताप तहँ लगे नाहीं ।
कहैं कब्बीर यह अगम का खेल है,
गैब का चाँदना देख माहीं ॥ २ ॥

॥ ९ ॥

माड़ि मतथान मन रई* को फेरना,
होत घमसान तहँ गगन गाजै ।
उठत झनकार तहँ नाद अनहद घुरै,
तिरकुटी महल के बैठ छाजे ॥ १ ॥
नाम की नेत† कर चित्त को फेरिया,
तत्त को ताथ कर घिर्त लीया ।
कहैं कब्बीर यौं संत निर्भय हुआ,
परम सुख धाम तहँ लागि जीया ॥ २ ॥

॥ १० ॥

गड़ा निस्सान तहँ सुन्न के बीच में,
उलटि के सुरति फिर नाहिं आवै ।
दूध को मत्थ कर घिर्त न्यारा किया,
बहुरि फिर तत्त में ना समावै ॥ २ ॥
माड़ि मत्थान तहँ पाँच उलटा किया,
नाम नौनीति‡ लै सुरत फेरी ।
कहैं कब्बीर यौं संत निर्भय हुआ,
जन्म औ मरन की मिटी फेरी ॥ २ ॥

*मथानी । †रस्सी । ‡मक्खन ।

॥ ११ ॥

ससी परकास तेँ सूर ऊगा सही,
तूर बाजै तहाँ संत झूलै ।
तत्त झनकार तहँ नूर बरसत रहै,
रस्स पीवै तहाँ पाँच भूलै ॥ १ ॥
दरियाव औ बुन्द ज्यौं देखु अंतर नहीं,
जीव औ सीव यौं एक आहीं ।
कहैं कब्बीर या सैन गूँगा तई,
बेद कत्तेब की गम्म नाहीं ॥ २ ॥

॥ १२ ॥

अगम अस्थान गुरु-ज्ञान बिन ना लहै,
लहै गुरु-ज्ञान कोइ संत पूरा ।
द्वादस पलटि के खोड़सी परगटै,
गगन गरजै तहाँ बजै तूरा ॥ १ ॥
इंगला पिंगला सुषमना सम करै,
अर्ध औ उर्ध बिच ध्यान लावै ।
कहैँ कब्बीर सोइ संत निर्भय रहै,
काल की चोट फिर नाहिँ खावै ॥ २ ॥

॥ १३ ॥

अधर आसन किया अगम प्याला पिया,
जोग की मूल गहि जुगति पाई ।
पंथ बिन जाइ चल सहर बेगमपुरे,
दया गुरुदेव की सहज आई ॥ १ ॥

ध्यान धर देखिया नैन बिन पेखिया,
अगम अगाध सब कहत गाई।
कहैं कब्बीर कोइ भेद बिरला लहै,
गहै सो कहै या सैन भाई ॥ २ ॥

॥ १४ ॥

सहर बेगमपुरा गम्म को ना लहै,
होय बेगम्म सो गम्म पावै।
गुनौं की गम्म ना अजब बिसराम है,
सैन को लखै सोइ सैन गावै ॥ १ ॥
मुक्ख बानी तिको* स्वाद कैसे कहै,
स्वाद पावै सोई सुक्ख मानै।
कहैं कब्बीर या सैन गूँगा तईं,
होय गूँगा सोई सैन जानै ॥ २ ॥

॥ १५ ॥

अधर ही ख्याल औ अधर ही चाल है,
अधर के बीच तहँ मट्ठ कीया।
खेल उलटा चला जाय चौथे मिला,
सिंघ के मुक्ख फिर सीस दीया ॥ १ ॥
सब्द घनघोर टंकोर तहँ अधर है,
नूर को परसि के पीर पाया।
कहैं कब्बीर यह खेल अवधूत का,
खेलि अवधूत घर सहज आया ॥ २ ॥

*तिस का।

॥ १६ ॥

छका[*] अवधूत मस्तान माता रहै,
ज्ञान वैराग सुधि लिया पूरा ।
स्वाँस उस्वाँस का प्रेम प्याला पिया,
गगन गरजै तहाँ बजै तूरा ॥ १ ॥
पीठ संसार से नाम-राता रहै,
जतन जरना लिया सदा खेलै ।
कहैं कब्बीर गुरु पीर से सुरख़रू,[†]
परम सुख धाम तहँ प्रान मेलै ॥ २ ॥

॥ १७ ॥

छका सो थका फिर देह धारै नहीं,
करम औ कपट सब दूर कीया ।
जिन स्वाँस उस्वाँस का प्रेम प्याला पिया,
नाम दरियाव तहँ पैसि[‡] जीया ॥ १ ॥
चढ़ी मतवाल औ हुआ मन साबिता[§],
फटिक ज्यौं फेर नहिं फूटि जावै ।
कहैं कब्बीर जिन बास निर्भय किया,
बहुरि संसार मैं नाहिं आवै ॥ २ ॥

॥ १८ ॥

तरक संसार से फरक फर्रक सदा,
गरक[||] गुरु ज्ञान में जुक्त जोगी ।
अर्ध औ उर्ध के बीच आसन किया,
बंक प्याला पिवै रस्स भोगी ॥ १ ॥

---

[*]सरशार । [†]आदर के योग्य । [‡]पैठ कर । [§]थिर । [||]डूबा हुआ ।

अर्ध दरियाव तहँ जाय डोरी लगी,
  महल बारीक का भेद पाया।
कहैं कब्बीर योँ संत निर्भय हुआ,
  परम सुख धाम तहँ प्रान लाया ॥ २ ॥

॥ १९ ॥

माड़ि मतवाल तहँ ब्रह्म भाठी जरै,
  पिवै कोइ सूरमा सीस मेलै।
पाँच को पेल सैतान को पकरि के,
  प्रेम प्याला जहाँ अधर झेलै ॥ १ ॥
पलटि मन पवन को उलटि सूधा कँवल,
  अर्ध औ उर्ध बिच ध्यान लावै।
कहैं कब्बीर मस्तान माता रहै,
  बिना कर ताँतिया नाद गावै ॥ २ ॥

॥ २० ॥

आठ हूँ पहर मतवाल लागी रहै,
  आठ हूँ पहर की छाक* पीवै।
आठ हूँ पहर मस्तान माता रहै,
  ब्रह्म की छौल† में साध जीवै ॥ १ ॥
साँच ही कहतु औ साँच ही गहतु है,
  काँच को त्याग करि साँच लागा।
कहैं कब्बीर योँ साध निर्भय हुआ,
  जनम औ मरन का भर्म भागा ॥ २ ॥

---

* प्याला। † आनन्द।

॥ २१ ॥

करत कलोल दरियाव के बीच मेँ,
ब्रह्म की छौल* मेँ हंस झूलै ।
अर्ध औ उर्ध की पैँग बाढ़ी तहाँ,
पलट मन पवन को कँवल फूलै ॥ १ ॥
गगन गरजै तहाँ सदा पावस† झरै,
होत झनकार नित बजत तूरा ।
बेद कत्तेब की गम्म नाहीँ तहाँ,
कहैँ कब्बीर कोइ रमै सूरा ॥ २ ॥

॥ २२ ॥

गगन की गुफा तहँ गैब का चाँदना,
उदय औ अस्त का नाँव नाहीँ ।
दिवस औ रैन तहँ नेक नहिँ पाइये,
प्रेम परकास के सिंध माहीँ ॥ १ ॥
सदा आनंद दुख दुन्द व्यापै नहीँ,
पूरनानंद भरपूर देखा ।
भर्म और भ्रांति तहँ नेक आवै नहीँ,
कहैँ कब्बीर रस एक पेखा ॥ २ ॥

॥ २३ ॥

खेल ब्रह्मंड का पिंड मेँ देखिया,
जगत की भर्मना दूरि भागी ।
बाहरा भीतरा एक आकासवत,
सुषमना डोरि तहँ उलटि लागी ॥ १ ॥

---

*आनन्द । †वर्षा ।

पवन को पलटि के सुन्न में घर किया,
घर* में अधर भरपूर देखा ।
कहैं कब्बीर गुरु पूर की मेहर से,
तिरकुटी मद्ध दीदार पेखा ॥ २ ॥

॥ २४ ॥

देख दीदार मस्तान मैं होइ रह्यो,
सकल भरपूर है नूर तेरा ।
सुभग दरियाव तहँ हंस मोती चुगैं,
काल का जाल तहँ नाहिं नेड़ा ॥ १ ॥
ज्ञान का थाल औ सहज मति बाति है,
अधर आसन किया अगम डेरा ।
कहैं कब्बीर तहँ भर्म भासै नहीं,
जन्म औ मरन का मिटा फेरा ॥ २ ॥

॥ २५ ॥

सूर परकास तहँ रैन कहँ पाइये,
रैन परकास नहिं सूर भासै ।
ज्ञान परकास अज्ञान कहँ पाइये,
होइ अज्ञान तहँ ज्ञान नासै ॥ १ ॥
काम बलवान तहँ नाम कहँ पाइये,
नाम जहँ होय तहँ काम नाहीं ।
कहैं कब्बीर यह सत्त बीचार है,
समुझ बिचार करि देख माहीं ॥ २ ॥

*शरीर ।

॥ २६ ॥

एक समसेर* इकसार बजती रहै,
  खेल कोइ सूरमा संत झेलै ।
काम दल जीत करि क्रोध पैमाल† करि,
  परम सुख धाम तहँ सुरत मेलै ॥ १ ॥
सील से नेह करि ज्ञान का खड़ग ले,
  आय चौगान मैं खेल खेलै ।
कहैं कब्बीर सोइ संत जन सूरमा,
  सीस को सौंप करि करम ठेलै ॥ २ ॥

॥ २७ ॥

पकरि समसेर* संग्राम में पैसिये,
  देह परजंत कर जुद्ध भाई ।
काट सिर बैरियाँ दाब जहँ का तहाँ,
  आय दरबार में सीस नाई ॥ १ ॥
करत मतवाल जहँ संत जन सूरमा,
  घुरत निस्सान तहँ गगन धाई ।
कहैं कब्बीर अब नाम से सुरखरू,
  मौज दरबार की भक्ति पाई ॥ २ ॥

॥ २८ ॥

देह बंदूक और पवन दारू‡ किया,
  ज्ञान गोली तहाँ खूब डाटी ।
सुरत की जामकी§ मूठ चौथे लगी,
  भर्म को भीत‖ सब दूर फाटी ॥ १ ॥

*तलवार । †रौंदना । ‡बारूत । §रस्सी या दूसरी जलने वाली चीज़ जिसके द्वारा रंजक में आग पहुँचाते हैं । ‖दीवार ।

कहैं कब्बीर कोइ खेलिहै सूरमा,
कायराँ खेल यह होत नाहीं।
आस की फाँस को काटि निर्भय भया,
नाम रस रस्स कर गरक माहीं ॥ २ ॥

॥ शब्द २६ ॥

ज्ञान समसेर को बाँधि जोगी चढ़ै,
मार मन मीर रन धीर हूवा।
खेत को जीत करि बिसन* सब पेलिया,
मिला हरि माहिँ अब नाहिँ जूवा ॥ १ ॥
जगत में जस्स औ दाद दरगाह में,
खेल यह खेलिहै सूर कोई।
कहैं कब्बीर यह सूर का खेल है,
कायराँ खेल यह नाहिँ होई ॥ २ ॥

॥ शब्द ३० ॥

सूर संग्राम को देखि भागै नहीं,
देखि भागै सोई सूर नाहीं।
काम औ क्रोध मद लोभ से जूझना,
मँडा घमसान तहँ खेत माहीं ॥ १ ॥
सील औ साँच संतोष साही भये,
नाम समसेर तहँ खूब बाजै ॥ २ ॥
कहैं कब्बीर कोइ जूझिहै सूरमा,
कायराँ भीड़ तहँ तुरत भाजै ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

साध का खेल तो बिकट बँड़ा मती,
सती औ सूर की चाल आगे।

---

* विषय।

सूर घमसान है पलक दो चार का,
सती घमसान पल एक लागे ॥ १ ॥
साध संग्राम है रैन दिन जूझना,
देह पर्जंत का काम भाई ।
कहैं कब्बीर टुक बाग ढीली करै,
उलटि मन गगन से जमीं आई ॥ २ ॥

मिश्रित

॥ शब्द १ ॥

तन मन धन बाजो लागी हो ॥ टेक ॥
चौपड़ खेलूँ पीव से रे, तन मन बाजी लगाय ।
हारी तो पिय की भई रे, जीती तो पिय मोर हो ॥१॥
चौसरिया के खेल में रे, जुग्ग मिलन की आस ।
नर्द अकेली रह गई रे, नहिं जीवन की आस हो ॥२॥
चार बरन घर एक है रे, भाँति भाँति के लोग ।
मनसा बाचा कर्मना, कोइ प्रीति निबाहो ओर हो ॥३॥
लख चौरासी भरमत भरमत, पौ पै अटकी आय ।
जो अबके पौ ना पड़ी रे, फिर चौरासी जाय हो ॥४॥
कहैं कबीर धर्मदास से रे, जीती बाजी मत हार ।
अबके सुरत चढ़ाय दे रे, सोई सुहागिन नार हो ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

जन को दीनता जब आवै ॥ टेक ॥
रहै अधीन दीनता भाषै, दुरमति दूरि बहावै ।
सो पद देवँ दास अपने को, ब्रह्मादिक नहिं पावै ॥१॥

औरन को ऊँचो करि जानै, आपुन नीच कहावै ।
तुम तेँ अवधू साँच कहतु हौँ, सो मेरे मन भावै ॥२॥
सब घट एक ब्रह्म जो जानै, दुविधा दूर बहावै ।
सकल भर्मना त्यागि के अवधू, इक गुरु के गुन गावै ॥३॥
होइ लौलीन प्रेम लौ लावै, सब अभिमान नसावै ।
सत्त सब्द मैँ रहै समाई, पढ़ि गुनि सब बिसरावै ॥४॥
गुरु की कृपा साध की संगत, जोग जुक्ति तेँ पावै ।
कहैँ कबीर सुनो हो साधो, बहुरि न भवजल आवै ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

साधो सो जन उतरे पारा । जिन मन तेँ आपा डारा ॥टेक॥
कोई कहै मैँ ज्ञानी रे भाई, कोई कहै मैँ त्यागी ।
कोई कहै मैँ इन्द्री जीती, अहं सबन को लागी ॥ १ ॥
कोई कहै मैँ जोगी रे भाई, कोई कहै मैँ भोगी ।
मैँ तैँ आपा दूरि न डारा, कैसे जीवै रोगी ॥ २ ॥
कोई कहै मैँ दाता रे भाई, कोई कहै मैँ तपसी ।
निज तत नाम निस्चय नहिँ जाना, सब माया मैँ खपसी ॥३
कोई कहै जुगती सब जानौँ, कोई कहै मैँ रहनी ।
आतम देव से परिचय नाहीँ, यह सब झूठी कहनी ॥४॥
कोई कहै धर्म सब साधे, और बरत सब कीन्हा ।
आपा की आँटी नहिँ निकसी, करज बहुल सिर लीन्हा ॥५॥
गरब गुमान सब दूर निवारे, करनी को बल नाहीँ ।
कहैँ कबीर साहेब का बंदा, पहुँचा निज पद माहीँ ॥६॥

॥ शब्द ४ ॥

चरखे का सिरजनहार, बढ़ैया इक ना मरै ॥ टेक ॥
बाबुल मोरा ब्याह करा दो, अनजाया बर लाय ।
अनजाया बर ना मिलै तो, तोहि से मोरा ब्याह ॥१॥

हरे हरे बाँस कटा मेरे बाबुल, पालन मड़वा छाय ।
सुरति निरति की भाँवरि डारो, ज्ञान की गाँठि लगाय २
सास मरै ननदी मरै रे, लहुरा देवर मरि जाय ।
एकु बढ़ैया ना मरै, चरखे का सिरजनहार ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, चरखा लखो न जाय ।
या चरखे को जो लखे रे, आवा गवन छुटि जाय ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

जहँ लोभ मोह के खंभ दोऊ, मन रच्यो है हिंडोर ।
तहँ झूलैं जीव जहान, जहँ कतहूँ नहिं थिर ठौर ॥ १ ॥
चतुरा झूलैं चतुराइयाँ, औ झूलैं राजा सेव ।
चंद सूर दोऊ नित झूलैं, नाहीं पावैं भेव ॥ २ ॥
चौरासी लच्छहुं जिव झूलैं, झूलैं रवि ससि धाय ।
कोटिन कल्प जुग बीतिया, आये न कबहूँ हाय ॥ ३ ॥
धरनी आकासहु दोउ झूलैं, झूलैं पवनहुं नीर
धरि देही हरि आपहु झूलैं, लखहीं संत कबीर ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

मोको कहाँ ढूँढो बंदे, मैं तो तेरे पास मैं ॥ टेक ॥
ना मैं छगरी* ना मैं भेंड़ी, ना मैं छुरी गँड़ास मैं ॥१॥
नहीं खाल मैं नहीं पूँछ मैं, ना हड्डी ना मास मैं ॥२॥
ना मैं देवल ना मैं मसूजिद, ना काबे कैलास मैं ॥३॥
ना तो कौनो क्रिया कर्म मैं, नहीं जोग बैराग मैं ॥४॥
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास मैं ॥५॥
मैं तो रहौं सहर के बाहर, मेरी पुरी मवास† मैं ॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सब स्वाँसौं की स्वाँस मैं ॥७॥

---

* बकरी । † सरन ।

॥ शब्द ७ ॥

जो कोइ या बिधि मन को लगावै। मन के लगाये गुरु पावै१
जैसे नटवा चढ़त बाँस पर, ढोलिया ढोल बजावै।
अपना बोझ धरै सिर ऊपर, सुरति बाँस पर लावै ॥२॥
जैसे भुवंगम* चरत बनी में, ओस चाटने आवै।
कभी चाटै कभी मनि तन चितवै, मनि तज प्रान गँवावै ॥३
जैसे कामिनि भरत कूप जल, कर छोड़े बतरावै†।
अपना रँग सखियन सँग राचै, सुरति डोर पर लावै ॥४॥
जैसे सती चढ़ी सत ऊपर, अपनी काया जरावै।
मातु पिता सब कुटुँब तियागै, सुरत पिया पर लावै ॥५॥
धूप दीप नैवेद अरगजा, ज्ञान की आरत लावै।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, फेर जनम नहिं पावै ॥६॥

॥ शब्द ८ ॥

ऐसी दिवानी दुनियाँ, भक्ति भाव नहिँ बूझै जी ॥१॥
कोई आवे तो बेटा माँगै, यही गुसाँईं दीजै जी ॥२॥
कोई आवे दुख का मारा, हम पर किरपा कीजै जी ॥३॥
कोई आवै तो दौलत माँगै, भेंट रुपैया लीजै जी ॥४॥
कोई करावे ब्याह सगाई, सुनत गुसाँईं रीझै जी ॥५॥
साँचे का कोइ गाहक नाहीं, झूठे जक्त पतीजै जी ॥६॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, अंधों को क्या कीजै जी ॥७॥

॥ शब्द ६ ॥

सतगुरु चारो बरन बिचारी ॥ टेक ॥
ब्राह्मन वही ब्रह्म को चीन्है, पहिरै जनेव बिचारी ॥१॥
साध के सौ गुन जनेव के नौ गुन, सो पहिरे ब्रह्मचारी ॥२॥

---

* साँप। † बात करती है।

छत्री वही जो पाप को छै करै, बाँधै ज्ञान तरवारी ॥३॥
अंतर दिल बिच दाया राखै, कबहूँ न आवै हारी ॥४॥
बैस वही जो बिषया त्यागै, त्याग देय पर नारी ॥५॥
ममता मारि के मंजन लावै, प्रान दान दैडारी ॥६॥
सूद्र वही जो सूधो राहै, छोड़ देय अपकारी ॥७॥
गुरु की दया साध की संगत, पावै अचल पद भारी ॥८॥
जो जन भजै सोई जन उबरै, या मैं जीत न हारी ॥९॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, नामै गहो सँभारी ॥१०॥

॥ शब्द १० ॥

संतन जात न पूछो निरगुनियाँ ॥ टेक ॥
साध बराम्हन साध छत्तरी, साधै जाती बनियाँ ।
साधन माँ छत्तीस कौम है, टेढ़ी तोर पुछनियाँ* ॥१॥
साधै नाऊ साधै धोबी, साध जाति है बरियाँ ।
साधन माँ रैदास संत हैं, सुपच ऋषी से भँगियाँ ॥२॥
हिन्दू तुर्क दुइ दीन बने हैं, कछू नाहिं पहिचनियाँ ।
लाखन जाति जगत माँ फैली, काल को फंद पसरियाँ ॥३॥
सब तत्तन माँ संत बड़े हैं, सब्द रूप जिन देहियाँ ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, सत्तरूप वहि जनियाँ ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

चुनरिया हमरी पिय ने सँवारी ।
कोइ पहिरै पिय की प्यारी ॥ १ ॥

---

*सवाल ।

आठ हाथ की बनी चुनरिया।
पँच रँग पटियां पारी ॥ २ ॥
चाँद सुरज जा मेँ आँचल लागे।
जगमग जोति उँजारी ॥ ३ ॥
बिनु ताने यह बनी चुनरिया।
दास कबीर बलिहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

काहू न मन बस कीन्हा, जग मेँ काहू न मन बस कीन्हा ॥टेक
सिंगी* ऋषि से बन मेँ लूटे, बिषै बिकार न जाने।
पठई नारि भूप दसरथ ने, पकरि अजोध्या आने ॥ १ ॥

---

*श्रृंगी ऋषी अकेले बन में रहते थे पवन का अहार करते थे और एक वार दरख़्त पर ज़वान मारते थे। राजा दशरथ के औलाद नहीँ होती थी वशिष्ट जी जाकि उनके कुल के पुरोहित थे उन्होँने कहा कि विधि पूर्वक जश क्रया और होम होगा तव वेटा होने की उम्मेद हो सकती है और ऐसी क्रया सिवाय श्रृंगी ऋषि के और कोई नहीँ करा सकता है। राजा दशरथ का हुक्म हुआ कि जो कोई श्रृंगी ऋषि को यहाँ लावेगा उसको हीरे जवाहिर का थाल भर कर मिलेगा। एक वेश्या ने कहा मैँ ले आती हूँ वह वहाँ गई देखा कि ऋषि जी वड़ी समाधि मेँ वैठे हैँ। जिस दरख़्त पर कि ज़वान लगाते थे वहाँ एक उँगली गुड़ की लगा दी ऋषि जी ने जव ज़वान लगाई चाट लग गई पहले एक दफ़ा ज़वान मारते थे उस रोज़ दो दफ़ा मारी दूसरे रोज़ तीन वार मारी इसी तरह रस वढ़ता गया और ताक़त आने लगी। वह वेश्या जो छिप के वैठी थी उसने हलुवा पेश किया तव थोड़ा हलुवा खाने लगे वदन जो दुवला था वह पुष्ट होने लगा ताक़त आई वेश्या पास थी सव कार्रवाई जारी होगई, दो तीन लड़के हुए। किसी वहाने श्रृंगी जी से वेश्या ने कहा चलो राज दरवार मेँ यहाँ जंगल मेँ लड़के भूखे मरते हैँ विचारे उसके साथ हो लिये। दो लड़कोँ को दोनोँ कंधो पर उठाया और एक का हाथ पकड़ा पीछे वह वेश्या चली। इस दशा मेँ राजा दशरथ के दरवार मेँ पहुँचे और वहाँ क्रया होम वग़ैरह की कराई। जव वहाँ किसी ने ताना मारा तव होश आया एक दम लड़कोँ को वहीँ पटक के भागे और जाना कि माया ने लूट लिया।

सूखे पत्र पवन भषि रहते, पारासर[*] से ज्ञानी ।
भरमे रूप देख वनिता को, कामकन्दला[†] जानी ॥ २ ॥
सोइ सुरपति[‡] जा की नार सुची सी, निसदिन हीं सँग राखी ।
गौतम के घर नारि अहिल्या, निगम कहत है साखी ॥ ३ ॥
पारबती सी पतनी जा के, ता को मन क्यौं डोले ।
खलित भये छबि देख मोहनी, हाहा करिके बोले[§] ॥४॥
एकै नाल कँवलसुत ब्रह्मा, जग-उपराज[||] कहावै ।
कहैं कबीर इक मन जीते बिन, जिव आराम न पावै ॥५॥

---

*पाराशर ऋषि ने मछोदरी से नाव में भोग किया (यह स्त्री उन्हीं के बीज से मछली के पेट से पैदा हुई थी जो बीज गंगा में नहाते वक़्त ऋषि जी का किसी समय में गिर गया था और एक मछली ने खा लिया था) उस मछोदरी ने कहा अभी दिन है लोग देखते हैं तब ऋषि ने अपनी सिद्ध शक्ति से अँधेरा कर दिया आकाश में बादल आ गये। फिर स्त्री ने कहा मेरे बदन से मच्छी की बदबू आती है ऋषि ने बदबू को बदल के खुशबू कर दिया। नतीजा इस संगम का यह हुआ कि व्यास जी उस मछोदरी से पैदा हुए।

†कामकंदला एक परम सुन्दर स्त्री अजोध्या में हो गई है।

‡गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या पर राजा इन्द्र मोहित हुए सोचा कि गौतम पिछली रात नदी में नहाने जाते हैं इस लिये चाँद को हुक्म दिया कि तुम आज रात को बारह बजे के वक़्त जहाँ कि तीन बजे निकलते हो निकलना और मुर्ग़ को कहा कि तू बारह बजे रात को आवाज़ दे दोनों ने ऐसाही किया और गौतम धोखा खाकर आधीरात को उठे और मुवाफ़िक़ दस्तूर के नदी को चले गये। इन्द्र भीतर गौतम के घर में घुसे जब गौतम लौट के आये तब सब हाल मालूम होगया—चाँद को सराप दिया कि तुमको कलंक लगेगा और अपनी स्त्री अहिल्या को सराप दिया कि पत्थर हो जायगी मुर्ग़ को कहा कि हिन्दू तुझको अपने घर में नहीं रक्खेंगे और इन्द्र को सराप दिया कि एक काम इन्द्री के बस तू ने ऐसा अत्याचार किया तेरे शरीर में हज़ार वैसी ही इन्द्री हो जायँगी।

§ शिवजी जिन के पारबती ऐसी सुन्दर स्त्री थी उनको छोड़ के मोहनी स्वरूप माया का देख कर उसके पीछे दौड़े और जोश में बीज बाहर गिर गया (इसी बीज से पारा पैदा हुआ) जब देखा माया का चरित्र है तब अपने इष्टदेव को सराप दिया कि जैसे हम स्त्री के पीछे दौड़े हैं वैसेही तुम भी दौड़ोगे—इसी से त्रेता जुग में राम औतार हुआ, सीता के पीछे बन बन दौड़ना पड़ा।

|| सृष्टि का रचने वाला।

॥ इति ॥

कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकें आगे छपेंगी बिना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परंतु डाक महसूल उन के ज़िम्मे होगा और पेशगी दाम न देने की हालत में वी० पी० कमिशन भी उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकें अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी० पी० कमिशन लिया जायगा।

अब गुरु नानक साहेब की प्राण-संगली का दूसरा भाग हाथ में लिया गया है और सिलसिलेवार शेष भाग भी छापे जायँगे जब तक वह ग्रंथ पूरा न हो जाय। उसी के साथ नीचे लिखे हुए ग्रंथ भी छापे जायँगे—दादू दयाल की बाणी, कबीर शब्दावली भाग ४, बिहार वाले दरिया साहेब के चुने हुए शब्द और साखियाँ, दूलमदास जी के थोड़े से पद।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

अपरैल १९१३ ई० इलाहाबाद।

फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

तुलसी साहेब (हाथरस वाले) की शब्दावली और जीवन-चरित्र ...	२)
,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र ...	॥।=)
,, ,, घट रामायन दो भागों में, मय जीवन-चरित्र पहिला भाग	१)
,, ,, दूसरा भाग	१)
गुरु नानक साहेब की प्राण-संगली सटिप्पण (प्रथम भाग) जीवन-चरित्र सहित	१)
ग़रीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	॥।=)
कबीर साहेब का साखी-संग्रह (२१५२ साखियाँ)	॥।)॥
कबीर साहेब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ तीसरा एडिशन	॥)
,, ,, शब्दावली भाग २	॥=)
,, ,, शब्दावली भाग ३	।)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी व रेख़ते	=)
,, ,, अखरावती	-)
,, ,, अखरावती का पूरा ग्रंथ जिस में १७ चौपाई दोहा और सोरठा विशेष हैं	[illegible]

धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... ।=)
पलटू साहेब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र, भाग १ ॥)
पलटू साहेब की शब्दावली, भाग २ ... ... ।-)
चरनदास जी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १ ... ... ॥)
" " भाग २ ... ... ।≡
रैदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ।-
जगजीवन साहेब की शब्दावली और जीवन-चरित्र भाग १ ... ॥
" " शब्दावली भाग २ ... ... ॥
दरिया साहेब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र ... ।-
दरिया साहेब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ...
भीखा साहेब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... ।
गुलाल साहेब (भीखा साहेब के गुरू) की बानी और जीवन-चरित्र ... ॥
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ...
सहजो बाई की बानी "सहजो-प्रकाश" और जीवन-चरित्र ... ...
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी ... ...
यारी साहेब की रत्नावली और जीवन-चरित्र ... ...
बुल्ला साहेब का शब्दसार और जीवन-चरित्र ... ...
केशवदास जी की अमीघूंट और जीवन-चरित्र ... ...
धरनीदासजी की बानी और जीवन-चरित्र ... ...
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में ... ...

मूल्य में डाक महसूल वा वाल्यू पेअबल कमिशन शामिल नहीं है।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद